महात्मा गान्धी

(पाँच अंकों में एक जीवनी नाटक)

गोविन्ददास

१९७८

भारतीय विश्व प्रकाशन

फ़व्वारा—दिल्ली

मुख्य विक्रेता

भारती साहित्य मन्दिर

(एस० चन्द एण्ड कम्पनी से सम्बद्ध)

आसफअली रोड	नई दिल्ली
फव्वारा	दिल्ली
माईहीरां गेट	जालन्धर
लालबाग	लखनऊ

मूल्य २ रु०

मुद्रक राजश्री प्रेस बहादुरगढ़ रोड दिल्ली

निवेदन

अपने पचासी नाटकों को समाप्त कर जब पन्द्रह और लिखकर अपने नाटकों का शतक पूर्ण करने का मैंने संकल्प किया उस समय ही सौवाँ नाटक महात्मा गान्धी की जीवनी पर लिखूँगा यह मैंने निश्चय कर लिया था। परन्तु इसी बीच बुद्ध-जयन्ती के लिए कुछ मित्रों की भगवान बुद्ध के जीवन पर एकांकी नाटकों की माँग हुई। यों तो मैं फरमाइश पर क्वचित् ही लिख पाता हूँ परन्तु यह विषय ऐसा था कि जिस पर मैंने एक दो नाटक लिखने का निश्चय किया और दो एकांकी नाटक लिख ही डाले। इसलिए गान्धीजी पर जो मैं अपना सौवाँ नाटक लिखने वाला था उसका नम्बर एकसौ दो होगया।

इधर मैंने एक नया प्रयास कर कुछ जीवनी नाटक लिखे हैं जिनमें प्रमुख हैं—भारतेन्दु, रहीम और महाप्रभु वल्लभाचार्य। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, अब्दुल रहीम खानखाना और वल्लभाचार्यजी की पूरी जीवनियाँ इन तीनों नाटकों में आयी हैं। इसी प्रकार महात्मा गान्धी की पूरी जीवनी पर ही मैं यह नाटक लिखना चाहता था परन्तु मैंने देखा कि गान्धीजी की पूरी जीवनी पर मेरे लिए नाटक लिखना सरल काम न था। मेरे सामने पहली कठिनाई यह आयी कि उनके जीवन से सम्बन्ध रखने वाली किन घटनाओं को इस नाटक में लिया जाय और किनको छोड़ा जाय। गान्धीजी की जीवनी इस देश के जीवन के हर क्षेत्र से इतना सम्बन्ध रखती है और इस देश के मानव-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को उन्होंने इतना अधिक प्रभावित किया है कि उनके जीवन की सब बड़ी प्रधान प्रधान घटनाओं को भी एक ही नाटक में लाना कठिन नहीं असम्भव है। फिर उन्हें शृंखलाबद्ध करना भी अत्यधिक कठिन काम है। दूसरी कठिनाई मेरे सामने यह आयी कि गान्धीजी से सम्बन्ध रखने वाली घटनाओं को घटित हुए अभी इतना कम समय बीता है और मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध भी उन घटनाओं से इतना अधिक रहा है कि ऐतिहासिक

मुख्य विक्रेता

भारती साहित्य मन्दिर

(एस० चन्द एण्ड कम्पनी से सम्बद्ध)

आसफअली रोड — नई दिल्ली

फव्वारा — दिल्ली

माईहीरां गेट — जालन्धर

लालबाग — लखनऊ

मूल्य २·५०

मुद्रक राजश्री प्रेस बहादुरगढ़ रोड दिल्ली

निवेदन

अपने पचासी नाटकों को समाप्त कर जब पन्द्रह और लिखकर अपने नाटकों का शतक पूर्ण करने का मैंने संकल्प किया उस समय ही सौवाँ नाटक महात्मा गान्धी की जीवनी पर लिखूँगा यह मैंने निश्चय कर लिया था। परन्तु इसी बीच बुद्ध-जयन्ती के लिए कुछ मित्रों की भगवान बुद्ध के जीवन पर एकांकी नाटकों की माँग हुई। यों तो मैं फरमाइश पर कदाचित् ही लिख पाता हूँ परन्तु यह विषय ऐसा था कि जिस पर मैंने एक दो नाटक लिखने का निर्णय किया और दो एकांकी नाटक लिख ही डाले। इसलिए गान्धीजी पर जो मैं अपना सौवाँ नाटक लिखने वाला था उसका नम्बर एकसौ दो का होगया।

इधर मैंने एक नया प्रयोग कर कुछ जीवनी नाटक लिखे हैं जिनमें प्रमुख हैं—भारतेन्दु, रहीम और महाप्रभु वल्लभाचार्य। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, अब्दुल रहीम खानखाना और वल्लभाचार्यजी की पूरी जीवनियाँ इन तीनों नाटकों में आयी हैं। इसी प्रकार महात्मा गान्धी की पूरी जीवनी पर ही मैं यह नाटक लिखना चाहता था परन्तु मैंने देखा कि गान्धीजी की पूरी जीवनी पर मेरे लिए नाटक लिखना सरल काम न था। मेरे सामने पहली कठिनाई यह आयी कि उनके जीवन से सम्बन्ध रखने वाली किन घटनाओं को इस नाटक में लिया जाय और किनको छोड़ा जाय। गान्धीजी की जीवनी इस देश के जीवन के हर क्षेत्र से इतना सम्बन्ध रखती है और इस देश के मानव-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को उन्होंने इतना अधिक प्रभावित किया है कि उनके जीवन की सब बड़ी प्रधान प्रधान घटनाओं का भी एक ही नाटक में लाना कठिन नहीं असम्भव है। फिर उन्हें शृंखलाबद्ध करना भी अत्यधिक कठिन कार्य है। दूसरी कठिनाई मेरे सामने यह आयी कि गान्धीजी से सम्बन्ध रखने वाली घटनाओं को घटित हुए अभी इतना कम समय बीता है और मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध भी उन घटनाओं से इतना अधिक रहा है कि नाटकीय

कृतियों के लिए जिस निरपेक्ष दृष्टि की आवश्यकता होती है वह इस कृति में कैसे लायी जाय। मेरे लिए तीसरी कठिनाई यह उपस्थित हुई कि गान्धीजी के मुख से कही हुई बातें इतनी अधिक हैं और सार की दृष्टि से भी उनमें इतना अधिक सार भरा हुआ है कि उनके कथनों में से किन कथनों को नाटक में रक्खा जाय और किन को छोड़ा जाय।

फिर गान्धीजी पर सफल नाटक तभी लिखा जा सकता है जब उन पर अब तक जो कुछ लिखा जा चुका है उसका अध्ययन किया जाय और मुझे उनके सम्पर्क के तथा उनके कार्य में सहयोग देने के जो अनुभव हुए हैं उनका भी मैं विवेचन कर सकूँ।

इन समस्त कठिनाइयों को दूर करने का मैंने प्रयत्न किया है साथ ही उन पर अब तक जो कुछ लिखा गया है उसके अध्ययन तथा मुझे उनके सम्पर्क के और उनके कार्यों में सहयोग देने के जो अनुभव हुए हैं उन पर ही यह नाटक अवलम्बित है।

इस नाटक में मैंने अपनी दृष्टि से उनके जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को छाँटकर उन्हें शृंखलाबद्ध करने का प्रयत्न किया है। घटनाओं के अत्यन्त सन्निकट होने पर भी तथा उनके साथ व्यक्तिगत सम्पर्क रहने पर भी एक साहित्यिक के नाते मैंने निरपेक्ष रहने की कोशिश की है। उनके कथनों में से ही कुछ महत्त्वपूर्ण कथनों को चुनकर मैंने उन्हें इस नाटक में रक्खा है और यह यत्न किया है कि कोई भी बात उनके मुख से ऐसी न कहलाई जाय जो शब्दों में या भावना में उनके न कही हो। हाँ इतना अवश्य हुआ है कि उनके किसी स्थान के कथन को किसी अन्य स्थान पर भी रक्खा गया है बिना इसके नाटक का गठन ही होना असम्भव था। सम्भव है मैंने अपनी दृष्टि से उनके जीवन की जिन घटनाओं को महत्त्वपूर्ण माना है उनमें अन्यों का मतभेद हो और अन्यों की दृष्टि से जो घटनाएँ अधिक महत्त्वपूर्ण हों वे छूट गयी हों। यही बात उनके कथनों के सम्बन्ध में भी हो सकती है। परन्तु इन मामलों में लेखक को अपने दृष्टिकोण से ही चलना पड़ता है।

मैंने अपने कुछ नाटकों की भूमिका में लिखा है कि नाटक और

सिनेमा का सम्मिश्रण आवश्यक है। इस प्रकार का सफल सम्मिश्रण मैंने स्वयं यूरोप और अमेरिका में देखा है। अपने भूदान नाटक में मैं कुछ जीवित पात्रों को भी लाया हूँ। '[illegible]' नाटक यह सभी भाँति किया जा सकता है। यह भी मैंने अमेरिका में देखा है और इस टैकनीक का वर्णन मैं अपने भूदान-यज्ञ नाटक के अपने निवेदन में व्यौरेवार कर चुका हूँ।

इस नाटक में नाटक और सिनेमा का पूर्ण सम्मिश्रण हुआ है और जीवित अथवा थोड़े दिन पूर्व हो गये हुए पात्र लाये गये हैं। जब महात्मा गान्धी को ही नाटक में लाया गया है तब जिस प्रकार वे लाये जा सकते हैं उसी प्रकार अन्य ऐसे पात्र भी।

मेरा यह दावा रहा है कि मेरे अधिकांश नाटक रंगमंच पर खेले जा सकते हैं। भिन्न भिन्न स्थानों पर वे खेले गये हैं। यह नाटक भी रंगमंच पर लाया जा सकता है। इस नाटक में मैंने एक प्रयत्न और भी किया है वह यह कि समूचा नाटक मय सिनेमा के दृश्यों के खेला जा सके, सिनेमा के दृश्यों को छोड़कर भी केवल पूरा नाटक रंगमंच पर लाया जा सके और नाटक के अधिकांश दृश्य एकांकियों के रूप में भी खेले जा सकें।

इस नाटक के गीतों के सम्बन्ध में भी कुछ कह देना आवश्यक है।

(१) इस नाटक भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध का एक प्रकार का इतिहास होने के कारण इस युग के तीनों राष्ट्रीय गीत अर्थात् 'वन्देमातरम्' 'जन गण मन' और 'झण्डे का गान' इस नाटक में आये हैं।

(२) असहयोग आन्दोलन और नमक सत्याग्रह के समय जो गीत बहुत प्रचलित थे उनमें से दो गीत इसमें रख दिये हैं।

(३) गान्धीजी की प्रार्थना सभाओं में जो गान गाये जाते थे और जो गीत उन्हें बहुत प्रिय थे जैसे "वैष्णव जन तो तेने कहिए" ऐसे गान गीत इसमें है।

(४) यरवदा जेल में गान्धीजी के प्रसिद्ध उपवास की समाप्ति के समय जो गीत गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने गाया था वह इसमें आया है।

(५) दक्षिण अफ्रीका के एक जुलूस में जो एक गीत इस नाटक में रखा गया है वह उस समय के बाद मोहनलालजी द्विवेदी ने रचा था परन्तु बहुत प्रयत्न करने पर भी उस काल का कोई गीत न मिलने पर इसे यहाँ रख दिया गया। इस गीत को न रखकर यदि इस स्थान के लिए कोई नया गीत तैयार कराया जाता तो भी वह उस काल का तो होता नहीं। इसलिए यह गीत प्रसंग के अनुकूल होने के कारण मैंने इसे इस स्थल पर रखना अनुचित नहीं समझा।

मुझे इस नाटक के लिखने में जिन हिन्दी-अंग्रेजी ग्रन्थों से सहायता मिली है उनका उल्लेख कर देना भी आवश्यक है—

महात्मा गान्धी कृत—आत्मकथा, ट्रुथ इज गाड, हिन्द-स्वराज्य, अन-टचबिलिटी, माई रिलीजन, सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका, फ्रॉम यरवदा मंदिर, सिलैक्टिड लैटर्स, अहिंसक समाजवाद की ओर, सर्वोदय, देहली-डायरी; टेण्डुलकर कृत—महात्मा गान्धी; रोमा रोलां कृत—महात्मा गान्धी; लुई फिशर कृत—दि लाइफ आफ महात्मा गान्धी; प्यारेलाल कृत—महात्मा गान्धी (दि लैटर फ़ेज़); पतिक पार्स्ट गान्धियन टैक्नीक इन माडर्न वर्ल्ड; पट्टाभि सीतारम्मैया कृत—कांग्रेस का इतिहास; निर्मलकुमार बोस कृत—सिलेक्शन्स फ्राम गान्धी; काकाजी गोविन्दजी देसाई कृत—ए गान्धी एन्थालॉजी; बापू एज आई न्यू हिम—एडीटिड बाई सी० एस० शुक्ला; वनमाला पारीख और सुशीला नय्यर कृत—हमारी 'बा'; विश्वभारती का 'गान्धी अंक'; श्री महादेव देसाई की डायरी; श्री जवाहरलाल नेहरू और डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद की आत्मकथा।

—गोविन्ददास

मुख्य पात्र, स्थान, समय

मुख्य पात्र :—(नाटक में प्रवेश के अनुसार जिन्होंने नाटक में संभाषण किया है।)

१—मोहनदास गान्धी		नाटक के नायक
२—पुतली बाई		मोहनदास की माँ
३—कस्तूरबा		मोहनदास की पत्नी
४—शेख मेहताब		मोहनदास का बाल्यकाल का एक मित्र
५—करमचन्द	:	मोहनदास के पिता
६—दादा अब्दुल्ला		दक्षिण अफ्रीका के एक भारतीय व्यापारी जिनके एक मुकदमे के लिए गान्धीजी दक्षिण अफ्रीका गये थे
७—तैयब	:	दादा अब्दुल्ला सेठ के मुकदमे के प्रतिवादी
८—आयटन	:	दादा अब्दुल्ला सेठ के सारे काम
९—हरिलाल	:	गान्धीजी के बड़े पुत्र
१०—मणिलाल	:	गान्धीजी के द्वितीय पुत्र
११—कैलन बैक	:	गान्धीजी के दक्षिण अफ्रीका के जर्मन यहूदी साथी
१२—पोलक		गान्धीजी के दक्षिण अफ्रीका प्रमुख साथी
१३—जनरल स्मट्स	:	दक्षिण अफ्रीका के प्रधान मन्त्री

(५) दक्षिण अफ्रीका के एक जुलूस में जो एक गीत इस नाटक में रखा गया है वह उस समय के बाद माखनलालजी द्विवेदी ने रचा था परन्तु बहुत प्रयत्न करने पर भी उस काल का कोई गीत न मिलने पर इसे यहाँ रख दिया गया। इस गीत को न रखकर यदि इस स्थान के लिए कोई नया गीत तैयार कराया जाता तो भी वह उस काल का तो होता नहीं। इसलिए यह गीत प्रसंग के अनुकूल होने के कारण मैंने इसे इस स्थान पर रखना अनुचित नहीं समझा।

मुझे इस नाटक के लिखने में जिन हिन्दी-अंग्रेजी ग्रन्थों से सहायता मिली है उनका उल्लेख कर देना भी आवश्यक है—

महात्मा गान्धी कृत—आत्मकथा, ट्रुथ इज गाड, हिन्द-स्वराज्य, मन टर्वर्सिटी, माई रिलीजन, सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका, फ्राम यरवदा-मंदिर, सिलेक्टिड लैटर्स, अहिंसक समाजवाद की ओर, सर्वोदय, दिल्ली-डायरी; टेंडुलकर कृत—महात्मा गान्धी; रोमां रोलां कृत—महात्मा गान्धी; लुई फिशर कृत—दि लाइफ आफ महात्मा गान्धी; प्यारेलाल कृत—महात्मा गान्धी (दि लास्ट फेज़), एरली फेज़, गान्धियन टैक्नीक्स इन माडर्न वर्ल्ड; पट्टाभि सीतारमैया कृत—कांग्रेस का इतिहास; निर्मलकुमार बोस कृत—सिलेक्शन्स फ्राम गान्धी; वालजी गोविन्दजी देसाई कृत—ए गान्धी एन्थालॉजी; गान्धी एज आई न्यू हिम—एडीटिड बाई डी० एम० गुप्ता; वनमाला परीख और सुशीला नय्यर कृत—हमारी 'बा'; विश्वभारती का 'गान्धी अंक'; श्री महादेव देसाई की डायरी; श्री जवाहरलाल नेहरू और डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद की आत्मकथा।

—गोविन्ददास

पहला अङ्क

पहला दृश्य

स्थान — पोरबन्दर में करमचन्द के मकान के बाहर का चौगान

समय — सन्ध्या के समीप

[आकाश बादलों से आच्छादित है। पीछे की ओर करमचन्द गान्धी के तिमंजले मकान के बाहरी भाग का कुछ हिस्सा दिखता है। चौगान में मोहनदास गान्धी अन्य बालकों के साथ गिल्ली-डण्डा खेल रहे हैं। मोहनदास की अवस्था छः-सात वर्ष की है, ये गेहुँए रंग के दुबले-पतले बालक हैं। धोती और कुरता पहने हैं। सिर खुला है और सिर के बाल लम्बे नहीं हैं। कुछ देर खेल चलता रहता है और खेल में बालकों की किलकारियाँ। एकाएक आकाश में सूर्य का प्रकाश दिखायी देता है। मोहनदास का ध्यान एकदम खेल से उचटकर सूर्य के प्रकाश की ओर जाता है।]

मोहनदास — अहो, देखो सूरज निकला है। बा को लाकर सूरज के दर्शन कराता हूँ क्योंकि सूरज के दर्शन बिना तो वह भूखी ही रह जायगी।

[मोहनदास दौड़ते हुए अपने घर के भीतर जाते हैं। इधर खेल चलता रहता है और उधर मोहनदास पुतलीबाई को लेकर बाहर निकलते हैं। पुतलीबाई वृद्धावस्था के समीप आती हुई

१४—तिलक १५—चितरंजन दास १६—मुहम्मद अली जिन्ना १७—श्रद्धानन्द १८—मदन मोहन मालवीय १९—मोतीलाल नेहरू २०—राजेन्द्र प्रसाद	भारत के प्रसिद्ध नेता जिनका १९१८ की अमृतसर कांग्रेस में सर्वोपरि स्थान था भारत प्रसिद्ध नेता
२१—नरसिंह चिन्तामणि केलकर	महाराष्ट्र के प्रसिद्ध नेता
२२—सरोजनी नायडू	भारत की प्रसिद्ध महिला नेत्री
२३—देवदास गान्धी	गान्धीजी के कनिष्ठ पुत्र
२४—महादेव भाई देसाई २५—प्यारेलाल	गान्धीजी के सचिव
२६—मीरा बहिन	गान्धीजी के साथ रहने वाली एक अंग्रेजी महिला
२७—रवीन्द्रनाथ ठाकुर	भारत के प्रसिद्ध कवि
२८—जवाहरलाल नेहरू २९—वल्लभ भाई पटेल	भारत के प्रसिद्ध नेता

स्थान

पोरबन्दर, राजकोट डरबन—दक्षिण अफ्रीका में नैटाल प्रान्त का एक नगर, फिनिक्स—दक्षिण अफ्रीका के नैटाल प्रान्त का एक नगर, प्रेटोरिया—दक्षिण अफ्रीका की राजधानी अमृतसर, नागपुर, बारदोली अहमदाबाद लाहौर, लन्दन पूना बम्बई नयी दिल्ली

समय

सन् १८७५ ईसवी से सन् १९४८ की १२ फरवरी तक।

पुतलीबाई भगवान् की यही इच्छा है कि आज मुझे भोजन न मिले।

मोहनदास (उसी मुद्रा में) भगवान्! उनकी इच्छा!

पुतलीबाई बेटा मोहनिया, मेरा इस बात पर अखण्ड विश्वास है कि इस सृष्टि में भगवान् की इच्छा बिना एक पत्ता तक नहीं हिलता।

मोहनदास (उसी प्रकार विचारते हुए) विश्वास! भगवान् की इच्छा में विश्वास!

[दोनों कुछ देर तक आकाश की ओर देखते रहते हैं। ऊपर लड़कों का गिल्ली डण्डे का खेल चलता रहता है और किलकारियाँ भी।]

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान : राजकोट में अल्फ्रेड हाईस्कूल का प्रांगण

समय : तीसरा पहर

[प्रांगण में इस समय केवल मोहनदास और उनके शिक्षक हैं। मोहनदास की अवस्था अब १२ वर्ष की है। शरीर पर वे एक लम्बा-सा कोट और धोती पहने हैं। सिर पर जरी के काम की टोपी है। उनका शिक्षक प्रौढ़ अवस्था का है। वह भी कोट और धोती पहने है, सिर पर काठियावाड़ी ढंग की पगड़ी बँधी है।]

प्रौढ़ा महिला हैं। वर्ण गेहुँआ, शरीर न दुबला न मोटा। वेशभूषा गुजराती महिलाओं के सदृश साड़ी और चोली। थोड़े से भूषण, ललाट पर लाल टिकली। मोहनदास और पुतलीबाई के घर से आते आते सूर्य को फिर से बादल ढक लेते हैं।]

मोहनदास (आकाश की ओर देखकर खिन्नाकुल स्वर में) फिर बादलों ने ढाँक लिया सूरज को मा मैंने अभी अभी उसे देखा था।

पुतलीबाई तेरे देखने से क्या होगा दर्शन तो सूर्य के मुझे करना है।

मोहनदास पर, बा मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि सूरज आकाश में है।

पुतलीबाई (हँसते हुए) मैं यह कहाँ कहती हूँ कि नहीं है।

मोहनदास फिर जब तुम मानती हो कि वह आकाश में है तब भोजन क्यों न करोगी?

पुतलीबाई मोहनिया ये बातें तर्क की नहीं होतीं श्रद्धा की होती है।

मोहनदास (विचारते हुए गम्भीरता से) तर्क! श्रद्धा!

पुतलीबाई बेटा मैंने नियम लिया है इस चातुर्मास में सूर्य के दर्शन के बिना भोजन न करना। जीवन में जो भी प्रतिज्ञा करली जाय उसे निभाना ही सच्चा धर्म है।

मोहनदास (और भी गम्भीर हो विचारते हुए) प्रतिज्ञा! धर्म!

पुतलीबाई प्रतिज्ञा और धर्म पर चलना ही नैतिकता है।

मोहनदास (उसी तरह विचारते हुए) नैतिकता!

पुतलीबाई भगवान् की यही इच्छा है कि आज मुझे भोजन न मिले।

मोहनदास (उसी मुद्रा में) भगवान्! उनकी इच्छा!

पुतलीबाई हाँ, मोहनिया, मेरा इस बात पर अखण्ड विश्वास है कि इस सृष्टि में भगवान् की इच्छा बिना एक पत्ता तक नहीं हिलता।

मोहनदास (उसी प्रकार विचारते हुए) विश्वास! भगवान् की इच्छा में विश्वास!

[दोनों कुछ देर तक आकाश की ओर देखते रहते हैं। उधर लड़कों का गिल्ली डण्डे का खेल चलता रहता है और किलकारियाँ भी।]

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान — राजकोट में एल्फ्रेड हाईस्कूल का आलय

समय — तीसरा पहर

[आलय में इस समय केवल मोहनदास और उनके शिक्षक हैं। मोहनदास की अवस्था अब १२ वर्ष की है। शरीर पर वे एक लम्बा-सा कोट और धोती पहने हैं। सिर पर ज़री के काम की टोपी है। उनका शिक्षक प्रौढ़ अवस्था का है। वह भी कोट और धोती पहने है, सिर पर काठियावाड़ी ढंग की पगड़ी बँधी है।]

शिक्षक (उत्तेजनापूर्वक) यह क्या किया तूने ! मैंने तुझे इशारा भी किया कि केटिल का के ई टी टी एल ई स्पेलिंग गलत है और तू पास के विद्यार्थी की स्लेट से नकल कर ले। पर —पर क्या कहूँ तूने मेरे इशारे को नहीं समझा या तुझे अपने साथी की पट्टी दिखायी न दे रही थी ?

मोहनदास नहीं मैंने आपका इशारा समझ लिया था और मुझे अपने साथी की पट्टी भी दिख रही थी।

शिक्षक तब ?

मोहनदास मने नकल करना अनैतिक समझा।

शिक्षक (क्रोध से) नैतिक और अनैतिक ! जमीन म से तो उगा नहीं है और नैतिकता और अनतिकता की व्याख्या करता है। मूर्ख कहीं का !

मोहनदास (विचारते हुए) मूख ! मूर्ख तो मैं जरूर हूँ बुद्धि मन्द है और स्मरण-शक्ति कच्ची।

शिक्षक तभी तो केटिल के सदृश सामान्य शब्द का भी स्पेलिंग गलत लिखा। दूसरे किसी लड़के ने किसी शब्द के हिज्जे में गलती नहीं की। तेरी मूर्खता की वजह से मेरी कक्षा का सारा रिकार्ड खराब हो गया। स्कूल के इन्स्पेक्टर मिस्टर गिल्स (Giles) मेरी कक्षा के विषय में न जाने अब क्या लिखेंगे।

तीसरा दृश्य

स्थान : राजकोट में कर्मचन्द के मकान का एक कमरा

समय : रात्रि

[साधारण-सा कमरा है, थोड़ा-सा सामान। दो पलँग बिछे हुए हैं। पलँग के पास भूमि पर एक गद्दी बिछी है, जिस पर मोहनदास और कस्तूरबा बैठे हुए हैं। मोहनदास की अवस्था अब चौदह वर्ष की है। वे लगभग वैसे ही हैं, जैसे इसके पहले के दृश्य में हमने उन्हें उनके विद्यालय में देखा था। इस समय वे कुरता और धोती पहने हैं, सिर खुला है। कस्तूरबा की अवस्था भी मोहनदास के बराबर ही है। ये गौरवर्ण की सुन्दर बालिका हैं। साड़ी और चोली पहने हैं, शरीर पर कुछ भूषण भी हैं। मोहनदास कस्तूरबा की ओर पीठ किये हुए हैं और कस्तूरबा मोहनदास की ओर। कुछ देर इसी अवस्था में निस्तब्धता रहती है।]

मोहनदास — (धीरे-धीरे अपने आप से) इसके पहले मेरी दो, हाँ, दो बार सगाई हुई थी उन दोनों में से अगर कोई भी आती तो इस इससे तो कहीं अच्छी होती। मेरा कहना मानती, जहाँ मैं कहता वहाँ जाती, जहाँ मैं न कहता वहाँ न जाती। जिससे कहता उससे बोलती, जिससे मैं कहता उससे न बोलती।

कस्तूरबा — (तमककर उठकर मोहनदास के सामने आ) यह कोई घर है या कैदखाना! मैं अपनी ससुराल में आयी हूँ या जेलखाने में! यहाँ जाऊँ वहाँ न जाऊँ इससे बोलूँ उससे

न बोलूँ कोई बात हुई ! एक बार नहीं सौ बार, हजार बार, लाख बार, करोड़ बार सुन लो इस तरह में कैदी के समान नहीं रह सकती। जहाँ इच्छा होगी जाऊँगी, जिससे इच्छा होगी बोलूँगी जो इच्छा होगी करूँगी।

मोहनदास (उसी तरह तमककर) देखें कैसे जाती है जहाँ इच्छा होती है वहाँ, देखें कैसे बोलती है जिससे इच्छा होती है उससे, देखें कैसे करती है जो करना चाहती है वह। सुन ले, तू भी सुन ले मैं हूँ तेरा पति ! भारत में स्त्री के लिए पातिव्रत-धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं। मेरी आज्ञा ही तेरे लिए सब कुछ है। इस लोक की दृष्टि से भी और पर-लोक की दृष्टि से भी।

कस्तूरबा चौदह वर्ष की अवस्था में तुम यदि धरम-करम जानते हो तो मेरी उमर भी तुम्हारे जितनी ही है। मैं भी अपना धरम-करम जानती हूँ।

मोहनदास मैं हूँ पढ़ा-लिखा और तू है अपढ़ ठोठ।

कस्तूरबा बड़े पढ़े-लिखे ! उस दिन तो कह रहे थे गधा विद्यार्थी हूँ। अपने साथियों तक से तो बात करने की हिम्मत नहीं, कोई मजाक न उड़ा दे इसके लिए काँपा करते हो मुझ पर चलाते हो ये रोब-दाब।

मोहनदास क्योंकि तू है मेरी पत्नी और म हूँ तेरा पति।

[कुछ देर निस्तब्धता।]

कस्तूरबा (मोहनदास के कंधे पर हाथ रखकर कुछ प्रेम भरे शब्दों में) न जाने कितने दिन तक तो बोले नहीं और आज बोले तो फिर झगड़ा हो गया।

मोहनदास (कस्तूरबा के कंधे पर पर हाथ रख) म नहीं बोला तो तुम्हीं कहो बोलीं तुम्ही बोल लेतीं।

कस्तूरबा तो आत्म-सम्मान का तुम्हीं न ठका ले लिया है। दूसरों की तो कोई इज्जत आबरू है ही नहीं। मैं पढ़ी-लिखी नहीं हूँ तो क्या हुआ, मेरे बापू और बा ने बिना पढ़ाये लिखाये ही मुझे जो शिक्षा दी है वह जीवन भर मुझे सही रास्ता दिखाती रहेगी।

मोहनदास (हंसते हुए) और पढ़ने लिखने की जो कसर रह गयी है वह म पूरी कर दूंगा।

कस्तूरबा (दीर्घ निश्वास छोड़कर) कहाँ पढ़ाते हो तुम दिन रात लड़ा करते हो।

मोहनदास (अपने दोनों हाथ कस्तूरबा के दोनों कंधों पर रख कर अत्यन्त प्रेमपूर्ण दृष्टि से कस्तूरबा की ओर देखते हुए) लड़ना ही है प्यार नहीं करता ?

कस्तूरबा (हंसते हुए) वह भी करते हो।

मोहनदास देखो अब हम में लड़ाई नहीं होनी चाहिए।

कस्तूरबा यदि तुम मेरी स्वतन्त्रता में बाधा डालोगे और बन्दी बनाकर रखोगे तो झगड़ा जरूर होगा।

मोहनदास अच्छा अच्छा। छोड़ो अब ये बातें, हम अब झगड़ा न कर सच्चे प्रेमियों के समान रहेंगे।

[दोनों एक दूसरे को अत्यन्त प्रेम भरी दृष्टि से देखते हैं। कुछ देर निस्तब्धता।]

कस्तूरबा : अरर तो अब आधी रात बीत गयी, माता न आय ? चलो भूख लगी है।

मोहनदास अभी से ? और बत्ती बुझाने की क्या जरूरत है ?
कस्तूरबा (ठठाकर हँसकर) हाँ अँधेरे में कहीं कोई साँप निकल आया तो ! भूत भी आ सकते हैं और चोर भी !
मोहनदास आखिर, साँप भूत चोर होते ही हैं।

[कस्तूरबा फिर जोर से हँसती है।]

लघु यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान राजकोट में एक वेश्या के मकान का कमरा
समय रात्रि

[छोटा-सा कमरा है। उसकी दीवालों पर शीशे, तस्वीरें आदि लगी हैं। छत से कुछ हाँडियाँ और गोले लटक रहे हैं। भूमि पर दरी बिछी है जिस पर सफेद कपड़े से ढकी गद्दी है और गद्दी पर तकिये लगे हैं। मोहनदास और शेख मेहताब का प्रवेश। मोहनदास की अवस्था अब लगभग पन्द्रह वर्ष की है। शेख मेहताब उनसे कुछ बड़ी उम्र का है। मोहनदास कोट और धोती पहने हैं, सिर पर अब वे काठियावाड़ी पगड़ी बाँधे हैं। शेख मेहताब खूब तगड़ा है। कुरता और ढीला पाजामा पहने है, सिर पर बोहरों के सदृश टोपी लगाये है।]

शेख मेहताब दुनियाँ में डर से ज्यादा बुरी चीज कोई नहीं। कितनी कोशिश करता हूँ तुम्हारे दिल से इस बेहूदे डर को निकालने की।

मोहनदास शायद ही कोई इतनी कोशिश करे, भाई, जितनी तुम करते हो।

[दोनों यहीं पर बैठ जाते हैं।]

शेख मेहताब इसीलिए आज तुम्हें राजकोट की अँधेरी-से-अँधेरी गलियों में से लेकर यहाँ आया। कहो कहीं कोई साँप, भूत, चोर मिला?

मोहनदास आज मैं उतना डरा भी तो नहीं।

शेख मेहताब इसका तो एक सबब यह भी है कि तुमने गोश्त खाना शुरू कर दिया। मैंने तुम्हें अंग्रेजी का जो पद रटाया है वह बिलकुल सच्चा समझो। कहो तो उसे एक दफा फिर।

मोहनदास

Behold the mighty Englishman
He rules the Indian small
Because being the meat-eater
He is five cubits tall

शेख मेहताब ठीक।

मोहनदास पर एक बात जानते हो?

शेख मेहताब क्या?

मोहनदास पहले भी कहा है और फिर कहता हूँ पहले दिन जब मैंने मांस खाया मुझे जान पड़ा जैसे मैं कोई सूखा चमड़ा चबा रहा हूँ। बड़ी मुश्किल से उसे चाब-चाबकर गले से उतारा। जी में मचलाहट हुई और रात को सपने में दिखा कि मेरे पेट में एक मेमना में-में कर रहा है।

[शेख मेहताब का अट्टहास। कुछ देर निस्तब्धता।]

शेख मेहताब अब तो वैसा नहीं होता न ?

मोहनदास किसी भी बात की आदत जो हो जाती है।

शेख मेहताब यकीन रखना गोश्त खाने की वजह से तुम भी खूब ऊँचे-पूरे और ताकतवर हो जाओगे।

मोहनदास तुम्हें उम्मीद है कि मैं तुम्हारे माफिक हो जाऊँगा ? उसी तरह दौड़ और कूद में भी प्रवीण ? इतना ठिगना और दुबला-पतला न रहूँगा ?

शेख मेहताब उम्मीद नहीं, कहा न यकीन है। अभी तुम पन्द्रह-सोलह साल के होगे क्यों ?

मोहनदास और क्या।

शेख मेहताब इन्सान अठारह साल तक बढ़ता है और मोटा-ताजा तो उसके बाद मरते तक होता रहता है। तुम सालों में जितने ऊँचे नहीं हुए हो गोश्त खाकर दो साल में हो जाओगे। और जहाँ आज लाया हूँ, रात को ही यहाँ आना हो सकता है। यहाँ आने की आदत होने पर अँधेरे-से-अँधेरे में भी न कहीं साँप दिखेंगे न कहीं भूत, और न चोर। इस तरह लपकते हुए यहाँ आओगे कि क्या कहूँ।

मोहनदास पर यह जगह कौनसी है ?

शेख मेहताब यह ऐसी जगह है जो जिस्म को कुव्वत और राहत दोनों देती है। सुना है कभी तुमने हिन्दुओं का ही लफ्ज मंगलमुखी ?

मोहनदास (कुछ सकपकाकर) हाँ, हाँ सुना है। मंगलमुखी माने वेश्या। तो -तो यह वेश्या का मकान है ?

सेठ मेहताब　वेश्या का मकान न कह इस नगरमुखों का मन्दिर कहो। (मोहनदास की ओर घूरकर देखता है।) अरे तुम तो घबड़ाये जाते हो! क्यों, तुम लोग जिन गुसाइयों के शागिर्द हो उनके मन्दिर हवेली कहलाते हैं न?

मोहनदास　हाँ हवेली।

सेठ मेहताब　और ये गुसाईं किशन के मानने वाले हैं?

मोहनदास　हाँ हमारे सम्प्रदाय का नाम वल्लभ-सम्प्रदाय है और हम भगवान् कृष्ण के पूजक हैं।

सेठ मेहताब　वह किशन क्या था उसके हालात नहीं सुने पढ़े? गोपियों के घर में घुसा करता था, उन्हीं के साथ घूमा करता था नाचा करता था और न जाने क्या-क्या किया करता था।

मोहनदास　वह बिलकुल दूसरी बात थी सेठ महताब। (कुछ रुककर) मैं समझता हूँ हम लोग अच्छी जगह नहीं आये।

सेठ मेहताब　वही बुजदिली वही तुम्हारी पुरानी बुजदिली फिर उभर रही है। अभी अभी बाई जी आती होंगी। मैं उन्हें तैयार होने को कहकर तुम्हें लेने आया था। उन्हें और उनका नाच देख यह तमाम हिचकिचाहट काफूर हो जायगी।

[मोहनदास सिर झुका लेते हैं। कुछ देर निस्तब्धता। थोड़ी ही देर में एक दरवाजे से पेशवाज पहने हुए एक वेश्या का प्रवेश। उसके पीछे एक तबलची, दो सारंगी वाले और एक मंजीरे वाला आते हैं। वह वेश्या आदाब बजाती है। मोहनदास का सिर नहीं उठता।]

शेख मेहताब : (वेश्या के ग्रादाब का उत्तर देते हुए) लीजिए, बाईजी। वादे के मुताबिक में ले आया वजीर करमचन्द के छोटे साहबजादे मोहनदास को।

वेश्या पर इनका तो सिर ही जमीन में घुसा जाता है।

शेख मेहताब पहले-पहल आये हैं आपके दौलतखाने पर। धीरे धीरे ठीक हो जायेंगे। कोई अच्छा-सा नाच दिखाइए।

[तबला ठनकता है, सारंगी और मजीरे बजते हैं, नाच होता है।]

[शेख मेहताब बीच-बीच में "वाह-वाह" करता है। मोहनदास यद्यपि सिर झुकाये ही रहते हैं, फिर भी कभी-कभी आँखें उठा इस नाच को देखते हैं। नाच पूरा होने पर शेख मेहताब, तबलची, सारंगी वाले और मजीरे वाले को जाने का संकेत करता है और वे जाते हैं।]

शेख मेहताब (मोहनदास से) कहो कैसा नजारा रहा ?

[मोहनदास कोई उत्तर नहीं देते। कुछ देर तक निस्तब्धता।]

शेख मेहताब अच्छा, मैं अभी आया।

[शेख मेहताब का भी प्रस्थान। अब उस कमरे में मोहनदास और वेश्या दो ही रह जाते हैं। फिर निस्तब्धता। मोहनदास को पसीना आ जाता है और वे जेब से रूमाल निकाल उस पसीने को पोंछते हैं। उनके चेहरे पर उड़ती हुई हवाइयाँ देख वेश्या का अट्टहास। वेश्या का अट्टहास सुन मोहनदास की दृष्टि उसकी ओर उठती है। वेश्या उनके निकट आ जाती है।]

वेश्या यह गर्मी का मौसम तो नहीं है आपको पसीना कैसे आ

रहा है ?

मोहनदास पसीना पसीना !

वेश्या आप अपने हाथ में लिये रूमाल से अपना पसीना पोंछ रहे हैं और यह भी नहीं मालूम कि आपको पसीना आ रहा है ?

[वेश्या का पुनः अट्टहास। वह मोहनदास के और निकट बढ़ अपना हाथ उनकी ठुड्डी में लगा उनका मुख ऊँचा करती है। मोहनदास कुछ झिझककर पीछे हट जाते हैं।]

वेश्या (कुछ खीजकर) अरे कैसे आदमी हो तुम ?

[अब वेश्या मोहनदास के गले में अपनी भुजा डालना चाहती है। वे और अधिक झिझककर और पीछे हटते हैं।]

वेश्या (और खीजकर) मैंने तो जिन्दगी में ऐसा आदमी नहीं देखा! चल निकल यहाँ से।

[मोहनदास का शीघ्रता से प्रस्थान।]

लघु यवनिका

पाँचवाँ दृश्य

स्थान : राजकोट में करमचन्द के मकान में करमचन्द का कमरा
समय : रात्रि

[वृद्ध और रोगी करमचन्द अपने पलँग पर बैठे हुए ध्यान से एक पत्र पढ़ रहे हैं। करमचन्द गेहुएँ रंग के साधारण ऊँचाई और शरीर के व्यक्ति हैं। वृद्धावस्था और रुग्णता के कारण वे कृश हो गये हैं। मुख पर की झुर्रियाँ इस कृशता की और अधिक द्योतक हैं। वे एक ढीला-सा कुरता और धोती पहने हुए हैं। कुछ देर तक करमचन्द के पत्र पढ़ते रहने के कारण निस्तब्धता रहती है। अब करमचन्द उस पत्र के कुछ वाक्यों को जोर-जोर से पढ़ने लगते हैं।]

करमचन्द : "भाई का वह सोना मैंने चुराया है। यह मेरी पहली चोरी है बापू। और अब मैं जिन्दगी में कभी चोरी न करूँगा। बा ने एक दिन मुझे नैतिकता की बात कही थी धर्म की बात कही थी मैं बा की उन बातों को भूला नहीं था पर कुसंग में पड़ गया था। आप मुझे सत्संग की बात कहा करते हैं। सचमुच कुसंग से बुरी अन्य कोई चीज नहीं। बा ने मुझे प्रतिज्ञा की बात भी कही थी। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ बापू अब कभी कुसंग न करूँगा। अपने इस अपराध को इस खत के जरिये मैं खुद प्रकट करता हूँ। मुझे इस अपराध पर इस जुर्म पर, इस पाप पर सजा बड़ी-से-बड़ी दीजिए। पर वह सजा देकर मुझे माफ' 'माफ भी कर दीजिए।

[करमचन्द फिर से चुप हो एकटक उस पत्र को देखते रहते हैं। कुछ देर निस्तब्धता।]

करमचन्द मोहनियाँ मोहनियाँ!

[मोहनदास का सिर झुकाये हुए धीरे-धीरे प्रवेश। मोहनदास को देख करमचन्द के नेत्रों से अश्रुधारा बह निकलती है। मोहनदास पिता के निकट पहुँच उनकी ओर देखते हैं और स्वयं रो पड़ते हैं। वे पलंग के नीचे पिता के निकट रोते-रोते बैठ जाते हैं। करमचन्द रोते रोते ही उस पत्र को फाड़कर फेंक देते हैं। एक विचित्र प्रकार का कारुणिक दृश्य।]

यवनिका

दूसरा अङ्क

पहला दृश्य

स्थान   दक्षिण अफ्रीका में नटाल प्रान्त के डरबन नगर के जिस मकान में मोहनदास रहते थे उसका एक कमरा

समय   प्रातःकाल

[कमरा पश्चिमी ढंग से सजा हुआ है। मोहनदास अपने अनेक साथियों के साथ बैठे हुए हैं। मोहनदास की अवस्था अब चौबीस वर्ष की है। वर्ण गेहुँआ, न बहुत ऊँचे न ठिगने, न मोटे न दुबले। सिर पर सँवारे हुए काले बाल, वेश-भूषा पश्चिमी। मोहनदास के पास अनेक मुसलमान, हिन्दू भारतीय बैठे हैं। सभी की वेश-भूषा पश्चिमी ढंग की है। इन्हीं में दादा अब्दुल्ला सेठ और तैय्यब सेठ भी हैं।]

मोहनदास   (दादा अब्दुल्ला सेठ से) हाँ दादा अब्दुल्ला सेठ, आपके मुकदमे की वजह से जो यह एक साल मैंने दक्षिण अफ्रीका में बिताया वह मेरी जिन्दगी में एक बहुत बड़ी जगह रखेगा।

दादा अब्दुल्ला   और इस एक साल में आपने यहाँ बसे हुए हिन्दुस्तानियों के दिलों में जो जगह कर ली है वह अपनी जिन्दगी में कोई हिन्दुस्तानी भी भूलने वाला नहीं है।

तैय्यब आपने यहाँ सबसे ज्यादा ताल्लुकात कर लिये हैं। आप आये थे दादा अब्दुल्ला सेठ के वकील होकर। दादा अब्दुल्ला सेठ की और मेरी लड़ाई चल रही थी। आपने कचहरी के बाहर पंचायत करा इस मामले को निपटाया। पंचायत का फैसला दादा सेठ की तरफ गया, मुझे उन्हें जो सैंतीस हजार पौण्ड और मुकदमे का खर्च देना पड़ा वह अगर फौरन देना पड़ता तब तो मेरा दिवाला ही निकल जाता। दादा सेठ के वकील होने पर भी आपने आसान किस्त बन्दियाँ करा मुझे बचा लिया और आज आपकी जगह मेरे दिल में भी उतनी ही है जितनी दादा अब्दुल्ला सेठ के दिल में।

मोहनदास आप लोग तो मुझे याद ही रखेंगे। परन्तु, मैंने तो इस एक बरस में जो कुछ इस दक्षिण अफ्रीका में पाया है वह मेरी जिन्दगी बना देगा। आज मैं दक्षिण अफ्रीका छोड़ रहा हूँ। ऐसे मौका पर मनुष्य को बीते हुए जीवन की कितनी बातें याद आती हैं और आगे के जीवन के लिए वह कितने मनसूबे बाँधता है। करीब उन्नीस साल की उम्र में बैरिस्टर होने को मैं भारत से इंगलैण्ड गया दो साल आठ महीने वहाँ रहा। अठारह-सौ इक्यानवे में वहाँ से जन्मभूमि को लौटा और दो वर्ष बाद ही यहाँ आ गया। दो साल की भारत की वकालत में तो कुछ बन न पाया पर इस एक साल में यहाँ जो कुछ किया उससे जान पड़ता है कि अब हिन्दुस्तान में ठीक ढंग से अपना काम चला लूँगा। फिर भारत से जब इंगलैण्ड गया उस वक्त माताजी

न जो प्रतिज्ञाएँ करायी थीं उन्होंने मुझे सच्चा आदमी बना दिया। आज वे प्रतिज्ञाएँ भी मुझे कितनी याद आ रही हैं। सुनेंगे आप लोग उन प्रतिज्ञाओं को ?

बाबा अब्दुल्ला जरूर।

लैय्यब नेकी और पूछ-पूछ।

अनेक भारतीय (एक साथ) जरूर बताइए।

मोहनदास उन्होंने कहा था शराब औरत और मांस को न छूना और इन प्रतिज्ञाओं के बन्धन में बँधे रहने के लिए उन्होंने कहा था (कालर के भीतर अँगूठा और उँगली डाल तुलसी की कण्ठी निकाल उसे दिखाते हुए) तुलसी की इस कण्ठी को गले में बाँधे रखना। म, भाइयो ! अपनी उन प्रतिज्ञाओं पर पूरी-पूरी ईमानदारी के साथ चला हूँ और इस कण्ठी को भी बरकरार रखा है। जसा मैंने अभी कहा माँ के सामने की हुई प्रतिज्ञाओं ने मुझे आदमी बना दिया। एक चीज मुझे सच्चा आदमी बनाने में और सहायक हुई।

एक भारतीय वह कौनसी ?

मोहनदास गीता। बीस वर्ष की उम्र में लंदन में मैंने पहले-पहल इस पुस्तक का सर एडविन आरनोल्ड द्वारा किया गया अग्रेजी अनुवाद पढ़ा। उस समय मुझे इस बात पर सचमुच बड़ी शर्म मालूम हुई कि बीस वर्ष की अवस्था में उस पुस्तक को पढ़ रहा हूँ जिसकी हिन्दू धर्म में वही जगह है जो कुरान की इस्लाम में और बाइबिल की ईसाई मजहब में।

[एक भारतीय का हाथ में एक अखबार लिये हुए शीघ्रता से प्रवेश।]

आगन्तुक भारतीय (अखबार को मोहनदास के सामने रखी हुई टेबिल पर पटक घबड़ाये हुए स्वर में) तुम तुम जा रहे हो, गान्धी ? पर आज के इस 'नेटाल मरकरी' को तो देखो। नेटाल की सरकार एक कानून लाने वाली है जिसके मुताबिक दक्षिण अफ्रीका में रहनेवाले हर हिन्दुस्तानी को या तो पाँच साल के बाद हिन्दुस्तान लौटना होगा या दक्षिण अफ्रीका में मजदूर की हैसियत से रहना होगा अथवा अगर वह आजाद आदमी की हैसियत से रहना चाहता है तो उसे अपने लिए और अपने हर कुटुम्बी के लिए हर साल तीन पौण्ड टैक्स देना होगा जो यहाँ के मजदूरों की आधी तनख्वाह के करीब हो जाती है। (एक कुर्सी पर बैठ जाता है।)

[मोहनदास अखबार के उन शब्दों को ध्यान से पढ़ते हैं। उपस्थित सब लोग उत्सुकता से उनकी ओर देखते हैं। कुछ देर निस्तब्धता।]

मोहनदास (अखबार पढ़ने के बाद उपस्थित लोगों की ओर देखते हुए) हाँ यह कानून तो सचमुच हो बहुत बुरा है।

एक भारतीय और आपके जाने के बाद यहाँ हम लोगों का कोई ऐसा मददगार ही न रह जायगा, जो हम सब को इकट्ठा कर इस कानून का विरोध करे।

दूसरा ऐसी हालत में आपका अफ्रीका छोड़ना कहाँ तक मुनासिब होगा ?

तीसरा आप खुद ही विचार कीजिए।

चौथा विचार क्या करना है हम लोगों को ऐसी हालत में छोड़कर ये जा ही नहीं सकते।

कुछ लोग (एक साथ) हरगिज नहीं, हरगिज नहीं।

दादा अब्दुल्ला मैं समझता हूँ आपका अभी तो जाना न हो सकेगा।

तैय्यब मेरी राय भी यही है।

मोहनदास (विचारते हुए) आप सब यदि मुझे न जाने देंगे तो मैं कैसे जा सकता हूँ?

कुछ लोग (अत्यन्त प्रसन्नता से) ठीक, बिलकुल ठीक।

मोहनदास देखिए, इस वक्त इस देश के भारतीयों की जो हालत है उसमें यहाँ के भारतीयों को यहाँ के गोरों के समान हक मिलें, यह मैं नहीं कहता। जो भावनाएँ यहाँ के गोरों में भारतीयों के खिलाफ भरी हुई हैं, वे कोई कानून बनाकर दूर नहीं की जा सकतीं। इनके दूर करने के लिए तो लगातार मेहनत करनी होगी और शिक्षा का प्रसार करना होगा। लेकिन दक्षिण अफ्रीका ब्रिटिश साम्राज्य का एक हिस्सा है और ब्रिटिश साम्राज्य के नागरिकों को कानून की नजर में समान अधिकार मिलने चाहिएँ। कानूनों को जब व्यवहार में लाया जायगा उस वक्त वर्तमान परिस्थितियों में गोरों का पक्षपात जरूर होगा, लेकिन सिद्धान्त में अगर भारतीय अपनी हीनता को मंजूर कर लेंगे तो उनकी आत्म-सम्मान की भावनाएँ हमेशा के लिए कुचल जायँगी।

कुछ व्यक्ति　ठीक, बिलकुल ठीक।

मोहनदास　फिर दक्षिण अफ्रीका की यह जमीन हरी भरी हिन्दुस्तानियों की मेहनत से हुई है। उन्होंने अपने खून का पसीना बना इस जमीन को उवरा किया है। इस तरह के कानून ऐसे भारतीयों के खिलाफ लाये जाना बड़ी से बड़ी बेइन्साफ़ी है।

कुछ व्यक्ति　ठीक　बिलकुल ठीक कहते ह, आप।

मोहनदास　इस दक्षिण अफ्रीका के हिस्से में ये गोरे अल्प मत में ह। थोड़ से लोग ज्यादा लोगों पर इस तरह जुल्म करें और उनका यह जुल्म हमेशा चलता रहे यह गर मुमकिन बात है। म　म इस काम के लिए जब तक जरूरत होगी यहाँ रहूँगा　यहाँ के हिन्दुस्तानियों की ठीक हालत की जानकारी कराने के लिए अगर भारत जाना होगा तो वहाँ जाऊँगा और विलायत जाना होगा तो वहाँ।

आगन्तुक　अब हमें कोई चिन्ता नहीं है।

सब　(एक साथ) जरा भी नहीं　जरा भी नहीं।

[कुछ देर निस्तब्धता]

मोहनदास　(विचारते हुए) और अब यहाँ के सार कामों के लिए हमें एक सभा खड़ी करनी होगी।

कुछ व्यक्ति　(एक साथ) जरूर, जरूर।

एक व्यक्ति　उसके लिए जितने भी धन की जरूरत होगी हम लोग देंगे।

कुछ व्यक्ति　(एक साथ) जरूर　जरूर।

एक व्यक्ति　सब आपके मातहत काम करें।

कुछ व्यक्ति (एक साथ) ज़रूर।

मोहनदास (विचारते हुए) नहीं, मैं तो आप लोगों से मासिक रूप में कुछ नहीं लूंगा।

दादा अब्दुल्ला तब आपका खर्च कैसे चलेगा ?

मोहनदास देखिए, मित्रो एक तो सार्वजनिक काम के लिए किसी को इस तरह कुछ लेना नहीं चाहिए, फिर कोई बड़ी रकम तो हरगिज नहीं। आप लोग अपना कानूनी काम यदि मुझे देंगे तो मैं अपना काम चला लूंगा।

सब (एक साथ) सब लोग देंगे सब लोग।

[कुछ देर निस्तब्धता।]

मोहनदास और देखिए, इस संस्था का नाम हमें 'कांग्रेस' रखना चाहिए। भारत में कांग्रेस क्या कर रही है आप जानते हैं ?

कुछ व्यक्ति (एक साथ) खूब खूब जानते हैं।

मोहनदास हालांकि अब तक भारतीय कांग्रेस से मेरा कोई विशेष सम्बन्ध नहीं रहा है पर उसके प्रति मेरी बड़ी श्रद्धा है इसलिए यहां की इस संस्था का नाम भी मैं कांग्रेस ही रखना ठीक समझता हूँ।

सब (एक साथ) बहुत खूब !

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान डरबन का बन्दरगाह

समय अपराह्न

[पीछे की ओर बन्दरगाह का कुछ हिस्सा दिखायी देता है। सामने सड़क है। बायीं ओर से मोहनदास और लाफटन का प्रवेश। मोहनदास पश्चिमी ढंग का सूट पहने हैं व सिर पर काठियावाड़ी पगड़ी है। लाफटन वृद्धावस्था का साधारण कद और शरीर का गोरा है। वेश-भूषा पश्चिमी।]

लाफटन हाँ यहाँ से हिन्दुस्तान जाकर आपने जो यहाँ के भारतीयों के प्रश्न पर यहाँ हरे रंग की किताब छपवायी उसकी कुछ कापियाँ यहाँ भी आयी थीं और उसी किताब के कारण यहाँ के गोरे बहुत अधिक भड़क उठे हैं।

मोहनदास लेकिन मिस्टर लाफटन उस हरी किताब में कोई एक भी ऐसी बात बता दें जो सच नहीं है। ऐसी सच्ची बातों को सुनने के लिए भी आदमी तैयार नहीं। झूठ-मूठ यह कहें कि मैं कोरलैंड तथा नादरी जहाजों से आठ सौ भारतवासियों को दक्षिण अफ्रीका पर हमला करने को लाया हूँ उन आठ सौ आदमियों को वापिस हिन्दुस्तान भेजना चाहें और यहाँ की सरकार भारत में प्लेग है इस बहाने पर तेईस दिन तक जहाजों के इन मुसाफिरों को इन जहाजों में ही रोके रक्खें सभी बातें आश्चर्यजनक हैं।

लाफटन सच्ची बात सुनने को भी यहाँ के लोग नहीं तैयार हैं। आप पहले भारतीय हैं जिन्होंने साउथ अफ्रीका में बस हुए

हिन्दुस्तानियों के मामले को इतने स्पष्ट ढंग से दुनिया के सामने रक्खा है और यहाँ की सरकार तो गोरों की सरकार है उनसे डरती है।

मोहनदास (चारों ओर देखकर) अब तो यहाँ कोई नजर नहीं पड़ रहा है।

लाघटन (चारों ओर देखते हुए) हाँ सवेरे तो आपने जहाज में से देखा ही होगा कि यहाँ भीड़ इकट्ठा हो गयी थी, जब लोगों ने देखा कि जहाज से आप नहीं उतरे तब उन्होंने समझा कि आप शायद इस जहाज से आये ही नहीं इसलिए भीड़ हट गयी। मैं समझता हूँ कि नैटाल सरकार के एटार्नी जनरल मिस्टर हैरी कौम्ब की यह राय ठीक नहीं थी कि आपको रात को छिपकर यहाँ से निकलना चाहिए, क्योंकि फिर तो आपका यहाँ रहना और काम करना ही कठिन हो जाता। इसीलिए मैं यहाँ आया। गोरा होते हुए भी वकालत के पेशे ने मुझे न्याय के साथ रहना सिखाया है। मैं चाहता हूँ आप सबकी जानकारी में मेरे साथ चलें।

मोहनदास यद्यपि मिस्टर कौम्ब ने यह राय झगड़े को बचाने को ही दी थी पर मैंने भी छिपकर जाना मुनासिब नहीं समझा।

लाघटन यहाँ आपके खिलाफ जो कुछ हुआ है यद्यपि उसमें मिस्टर कौम्ब भी यहाँ के गोरों के साथ रहे हैं लेकिन यहाँ कोई वारदात न हो जाय इसी कारण उन्होंने यह राय दी थी इसे मैं भी मानता हूँ। फिर भी उनकी राय से

मैं सहमत नहीं।

मोहनदास : मैं भी आपकी राय से ही सहमत हूँ। (कुछ रुक-कर) तो अब हम लोग चलें।

सायटन : हाँ मेरी समझ में भी चलना ही चाहिए।

[दाहिनी ओर से दो गोरे लड़कों का प्रवेश।]

एक : ओ! गान्धी!

दूसरा : गान्धी गान्धी!

दोनों : (एक साथ) गान्धी गान्धी!

पहला : थू न हिम!

दूसरा : मराडण्ड हिम!

[इन लड़कों की आवाज सुन कुछ गोरे आ जाते हैं। मोहनदास और सायटन चलने के लिए दाहिनी ओर से आगे बढ़ते हैं पर आये हुए गोरों के कारण बढ़ नहीं पाते। भीड़ बढ़ती जाती है। कुछ ही देर में कुछ गोरे मोहनदास को सायटन के पास से खींचकर उन्हें पीटना आरम्भ करते हैं, कुछ पत्थर चलाते हैं, कुछ ईंट और कुछ डण्डे।]

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान — डरबन में मोहनदास का एक कमरा

समय — सन्ध्या

[कस्तूरबा और उनके दो पुत्र हरिलाल और मणिलाल बैठे हुए हैं। कस्तूरबा की अवस्था अब लगभग बत्तीस वर्ष की है। वे गौर-वर्ण की अत्यन्त सुन्दर महिला हैं। रेशमी साड़ी और सलूका पहने हैं, और थोड़े-से आभूषण। हरिलाल की अवस्था लगभग १४ वर्ष की और मणिलाल की लगभग १० वर्ष की है। इन दोनों की वेशभूषा पश्चिमी ढंग की है।]

कस्तूरबा — लगभग तीन बरस के बाद फिर से जन्म भूमि के दर्शन होंगे। तुम दोनों को याद है भारत की?

हरिलाल — बहुत अच्छी तरह याद है, बा।

मणिलाल — और मुझे भी थोड़ी-थोड़ी याद है।

कस्तूरबा — मैं तो सन् १८९७ की १३ जनवरी की उस घटना को कभी भूल ही नहीं सकती जब हम भारत से यहाँ लौटे थे। तुम दोनों को और मुझको तो तुम्हारे बापू ने रुस्तम जी के यहाँ भिजवा दिया था पर खुद आये थे पैदल। कितनी बुरी तरह उस दिन उन्हें गोरों ने पीटा था। वह तो पुलिस सुपरिण्टेण्डण्ट एलेक्जेण्डर की पत्नी और एलेक्जेण्डर ने उन्हें बचा लिया नहीं तो या तो उसी पिटाई में उनका दम निकल जाता या वे गोरे उस रात को रुस्तम जी के मकान को जला डालते।

हरिलाल — मुझे उस दिन की एक बात सबसे ज्यादा याद है।

कस्तूरबा कौन सी ?

हरिलाल एलेक्जेण्डर ने उन गोरों को खुश करने के लिए अंग्रेजी में एक गाना गाया था।

मणिलाल हाँ हाँ मैंने तो बाद में उस गाने की दो कड़ियाँ याद करली हैं—

And we'll hang old Gandhi
on the sour apple tree

कस्तूरबा और जिन दुष्टों ने यह सब किया उनमें से कुछ के पकड़े जाने पर भी तुम्हारे बापू ने उन पर कोई मुकदमा चलाना मंजूर न कर उन्हें छुड़वा दिया। (कुछ ठहरकर) ऐसी कुछ घटनाओं को छोड़कर बाकी तो इस देश के हमारे संस्मरण बहुत अच्छे ही हैं। हम यहाँ सन् १८९६ में आये, यह १९०१ है। इन पाँच वर्षों में हमने यहाँ खूब ही अपना भला किया, यहाँ के हिन्दुस्तानियों का भी, यहाँ के गोरों का भी और अंग्रेज सरकार का भी। तुम्हारे बापू वकालत से करीब हजार रुपया साल कमाते हैं, खूब शान से रहते हैं, हिन्दुस्तानियों की सेवा करते हैं। और लड़ाई में यहाँ के गोरों के प्रति सहानुभूति रखी और अंग्रेजों को भी मदद दी।

हरिलाल इसीलिए तो इस बार जन्म भूमि को लौटते समय यहाँ हिन्दुस्तानियों ने इतनी बड़ी विदा दी है।

मणिलाल इस विदाई में सोने चाँदी और जवाहरात का कितना सामान है।

कस्तूरबा और मुझे जो हीरे का नेकलेस दिया है वह तो सचमुच ही बहुत सुन्दर और कीमती है।

हरिलाल पर बा इस सारी विदाई को क्या हमें मंजूर करना चाहिए ?

कस्तूरबा (कुछ आश्चर्य से) मंजूर करना चाहिए ! मंजूर क्या करना चाहिए मंजूर कर ही लिया है ।

हरिलाल और अगर हम मंजूर करने के बाद भी इस यहीं के हिन्दुस्तानियों के धन के लिए लौटा दें तो ?

कस्तूरबा ओह ! समझी ! तुम्हारे बापू ने तुम दोनों को अपनी ओर मिलाया दिखता है । कल मुझसे भी कह रहे थे कि इस सारे सामान को लौटा देना चाहिए । पर क्यों लौटा देना चाहिए, यह मेरी तो समझ में ही नहीं आता । तुम्हारे बापू ने यहाँ के भारतीयों के लिए जितना किया है उसके सामने य भेंट तुच्छ है । हम इन्हें क्यों लौटाएँ ?

[मोहनदास का प्रवेश ।]

मोहनदास इसलिए लौटाएँ कि धन के संग्रह में मैं बहुत बड़ा भय देखता हूँ । जवाहरात का यह संग्रह जायदाद के संग्रह से भी बुरा है । जब मैंने दूसरों से इस तरह का संग्रह न करने का आग्रह किया है तब हम खुद इस प्रकार के संग्रह को करें यह किसी भी तरह मुनासिब नहीं । तुम अगर पहनती भी बहुत कम हो फिर हम इन सब भेंटों का क्या करेंगे ?

हरिलाल हाँ बा इस सारे सामान को तो लौटा ही देना चाहिए ।

मणिलाल जरूर जरूर लौटा देना चाहिए ।

कस्तूरबा (मोहनदास से) तुम्हारा इन भेंटों को चाह न रखना

शायद ठीक होगा। तुम जवाहरात की पर्वाह नहीं करते, तुम उन्हें पहनते भी नहीं हो, इन बच्चों को भी तुमने अपने मत का कर लिया है ये तो वही करेंगे जो तुम कहते हो। मैंने भी तुम्हारी इच्छा के अनुसार जेवर पहनना प्राय छोड़ दिया है। पर जब मेरी पुत्र-वधुएँ आयेंगी तब उन्हें तो गहनों की जरूरत होगी।

मोहनदास इन लड़कों की अभी शादी नहीं हुई है और जिस तरह हमारा बाल-विवाह हुआ हम इनका करने वाले भी नहीं हैं। जब ये बड़े हो जायेंगे तब खुद अपने विषय में तय करेंगे। फिर हम ऐसी बहुएँ लाने वाले भी नहीं हैं जो जेवर की शौकीन हों।

कस्तूरबा यौवन में अच्छी चीजें सदा अच्छी लगती हैं।

मोहनदास यदि ऐसा भी हुआ तो विवाह के समय देखेंगे। मैं कहीं भागा तो जाता नहीं हूँ उस वक्त तुम मुझसे कहना।

कस्तूरबा (क्रोध से) तुम न कहोगे! अब मैं तुम्हें खूब जान-बूझ गयी हूँ। तुमने मेरे ही सब गहने ले लिये तुम दाग जेवर बनवा था! लड़कों को ही भिखारी बनाने की कोशिश कर रहे हो। भेंट का यह सामान हर्गिज नहीं लौटाया जायगा। फिर वह हार का नवलख तो मेरा है। उसे लौटाने वाले तुम कौन हो?

मोहनदास यह नवलख तुम्हारी सेवाओं के लिए दिया गया है या मेरी सेवाओं के लिए तुम्हें भेंट किया गया है?

कस्तूरबा (आँखों में आँसू भरकर) तुम्हारी सेवायें क्या मेरे बिना हो सकती थीं? अगर तुमने जनता की सेवा की है

तो मैंने दिन रात तुम्हारी। दिन और रात एक करके तुम्हारे मेहमानों के लिए मैं क्या-क्या करती रही हूँ! क्या ये कोई सेवाएँ ही नहीं हैं? तुम्हारे सिद्धान्तों के अनुसार मैंने क्या-क्या किया है? मेहतरों और नीच जातियों के गन्दे काम तक।

[कुछ देर निस्तब्धता।]

मोहनदास (कुछ देर बाद निश्चयात्मक स्वर में) जो कुछ हो, किसी जन-सेवक को कभी भी कोई कीमती भेंट नहीं लेना चाहिए। सन् १६०१ में मिली हुई विदाई का यह सामान ही नहीं, पर सन् १८६६ में जब हम भारत गये थे और उस वक्त हमें जो भेंटें मिली थीं वे भी लौटा दी जायेंगी। इस सब धन का एक ट्रस्ट बनेगा जिससे दक्षिण अफ्रीका में बसे हुए भारतीयों की सेवा होगी।

लघु यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान　फिनिक्स में मोहनदास का फार्म

समय　तीसरा पहर

[पीछे की ओर कुछ ऊँचाई पर फार्म के मकान का कुछ हिस्सा दिखायी देता है। उसके आगे की भूमि पर गन्ने की फसल है। फार्म में रहने वाले कुछ भारतीय बैठे हुए बातें कर रहे हैं। ये सभी पश्चिमी ढंग के वस्त्र पहने हैं।]

एक भारतीय (जिसके हाथ में एक कागज़ है) हाँ 'इण्डियन ओपीनियन' के इस अङ्क में १९१३ की चौदह मार्च का केप कालोनी के उच्च न्यायालय का वह पूरा फैसला छपा है। इस फैसले के अनुसार यहाँ की सब भारतीय स्त्रियाँ अब धर्मपत्नियाँ न रहकर रखैल बन जायेंगी।

दूसरा हिन्दू, मुस्लिम पारसी सभी जातियों की भारतीय महिलाएँ।

तीसरा हमीं ने इस दक्षिण अफ्रीका की इस भूमि को आबाद किया और हम पर ही एक-पर-एक कैसे अत्याचार किये जा रहे हैं, इन गोरों के द्वारा।

चौथा हाँ, पहला कानून बना—हर भारतीय को हर साल तीन पौंड टैक्स देने का। दूसरा वह काला कानून जिसके अनुसार हर आठ साल के ऊपर की उम्र के हिन्दुस्तानी को अपने को रजिस्टर कराने, अपने फिंगर प्रिंट देने और अपने सर्टिफिकेट को हमेशा अपने साथ रखने का और तीसरा उच्च न्यायालय का यह फैसला है जिसके मुताबिक यहाँ ईसाई शादियाँ ही कानूनी मानी जायेंगी।

पाँचवाँ शायद ही दुनिया में ऐसा कोई मुल्क हो जिसमें इस तरह के कानून, काले कानून बनें और अदालतों के फैसले हों।

छठवाँ न कहीं मानव का ही ऐसा बुरा नाश होगा।

सातवाँ हाँ गोरों के होटलों में हम ठहर नहीं सकते। उनके सिनेमा और नाटकघरों में हम जा नहीं सकते। रेलों में उनके

तो मैंने दिन रात तुम्हारी। दिन और रात एक करके तुम्हारे मेहमानों के लिए मैं क्या-क्या करती रही हूँ! क्या ये कोई सेवाएँ ही नहीं हैं? तुम्हारे सिद्धान्तों के अनुसार मैंने क्या-क्या किया है? मेहतरों और नीच जातियों के गन्दे काम तक।

[कुछ देर निस्तब्धता।]

मोहनदास (कुछ देर बाद निश्चयात्मक स्वर में) जो कुछ हो किसी जन-सेवक को कभी भी कोई कीमती भेंट नहीं लेना चाहिए। सन् १९०१ में मिली हुई विदाई का यह सामान ही नहीं पर सन् १८९६ में जब हम भारत गये थे और उस वक्त हमें जो भेंटें मिली थीं वे भी लौटा दी जावेंगी। इस सब धन का एक ट्रस्ट बनेगा जिससे दक्षिण अफ्रीका में बसे हुए भारतीयों की सेवा होगी।

लघु यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान फिनिक्स में मोहनदास का फार्म

समय तीसरा पहर

[पीछे की ओर कुछ ऊँचाई पर फार्म के मकान का कुछ हिस्सा दिखायी देता है। उसके आगे की भूमि पर गन्ने की फसल है। फार्म में रहने वाले कुछ भारतीय बैठे हुए बातें कर रहे हैं। ये सभी पश्चिमी ढंग के वस्त्र पहने हैं।]

एक भारतीय (जिसके हाथ में एक कागज है) हाँ "इण्डियन ओपीनियन" ने इस अङ्क में १९१३ की चौदह मार्च का केप कालनी के उच्च न्यायालय का यह पूरा फैसला छपा है। इस फैसले के अनुसार यहाँ की सब भारतीय स्त्रियाँ अब धर्मपत्नियाँ न रहकर रखैल बन जायेंगी।

दूसरा हिन्दू, मुस्लिम पारसी सभी जातियों की भारतीय महिलाएँ।

तीसरा हमीं ने इस दक्षिण अफ्रीका की इस भूमि को आबाद किया और हम पर ही एक-पर-एक ऐसे अत्याचार किये जा रहे हैं, इन गोरों के द्वारा।

चौथा हाँ, पहला कानून बना—हर भारतीय का हर साल तीन पौंड टैक्स देने का। दूसरा वह काला कानून जिसके अनुसार हर आठ साल के ऊपर की उम्र के हिन्दुस्तानी को अपने को रजिस्टर कराने, अपने फिंगर प्रिंट देने और अपने सर्टिफिकेट को हमेशा अपने साथ रखने का और तीसरा उच्च न्यायालय का यह फैसला है जिसके मुताबिक यहाँ ईसाई शादियाँ ही कानूनी मानी जायेंगी।

पाँचवाँ शायद ही दुनियाँ में ऐसा कोई मुल्क हो जिसमें इस तरह के कानून, काले कानून बनें और अदालतों के फैसले हों।

छठवाँ न कहीं इन्साफ का ही ऐसा गला घोंटा गया होगा।

सातवाँ हाँ, गोरों के होटलों में हम ठहर नहीं सकते। उनके सिनेमा और नाटकघरों में हम जा नहीं सकते। रेलों के उनके

सा मैंने दिन-रात तुम्हारी। दिन और रात एक करके तुम्हारे मेहमानों के लिए मैं क्या-क्या करती रही हूँ! क्या ये कोई सेवाएँ ही नहीं हैं? तुम्हारे सिद्धान्तों के अनुसार मैंने क्या-क्या किया है? मेहतरों और नीच जातियों के गन्दे काम तक।

[कुछ देर निस्तब्धता।]

मोहनदास (कुछ देर बाद निश्चयात्मक स्वर में) जो कुछ हो किसी जन-सेवक को कभी भी कोई कीमती भेंट नहीं लेना चाहिए। सन् १६०१ में मिली हुई विदाई का यह सामान ही नहीं पर सन् १८६६ में जब हम भारत गये थे और उस वक्त हमें जो भेंटें मिली थीं वे भी लौटा दी जायँगी। इस सब धन का एक ट्रस्ट बनेगा जिससे दक्षिण अफ्रीका में बसे हुए भारतीयों की सेवा होगी।

लघु यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान फिनिक्स में मोहनदास का फार्म

समय तीसरा पहर

[पीछे की ओर कुछ ऊँचाई पर फार्म के मकान का कुछ हिस्सा दिखायी देता है। उसके आगे की भूमि पर गन्ने की फसल है। फार्म में रहने वाले कुछ भारतीय बैठे हुए बातें कर रहे हैं। ये सभी पश्चिमी ढंग के वस्त्र पहने हैं।]

एक भारतीय (जिसके हाथ में एक कागज है) हाँ, 'इण्डियन ओपीनियन' में इस अङ्क में १९१३ की चौदह मार्च का केप कालनी के उच्च न्यायालय का यह पूरा फैसला छपा है। इस फैसले के अनुसार यहाँ की सब भारतीय स्त्रियाँ अब धर्मपत्नियाँ न रहकर रखैल बन जायेंगी।

दूसरा हिन्दू, मुस्लिम, पारसी सभी जातियों की भारतीय महिलाएँ।

तीसरा हमीं ने इस दक्षिण अफ्रीका की इस भूमि को आबाद किया और हम पर ही एक-पर-एक कस अत्याचार किये जा रहे हैं इन गोरों के द्वारा।

चौथा हाँ, पहला कानून बना—हर भारतीय को हर साल तीन पौंड टैक्स देने का। दूसरा यह काला कानून जिसके अनुसार हर आठ साल के ऊपर की उम्र के हिन्दुस्तानी को अपने को रजिस्टर कराना, अपने फिंगर प्रिंट देने और अपने सर्टिफिकेट को हमेशा अपने साथ रखने का और तीसरा उच्च न्यायालय का यह फैसला है जिसके मुताबिक यहाँ ईसाई शादियाँ ही कानूनी मानी जायेंगी।

पाँचवाँ शायद ही दुनियाँ में ऐसा कोई मुल्क हो जिसमें इस तरह के कानून, काले कानून बनें और अदालतों के फैसले हों।

छठवाँ न कहीं रंगभेद का ही ऐसा नंगा नाच होगा।

सातवाँ हाँ, गोरों के हाटेलों में हम ठहर नहीं सकते। उनके मनवा और मोटरकारों में हम जा नहीं सकते। रेलों में उनके

डिब्बों में बैठ नहीं सकते। ट्राम तक में उनके बैठने की जगह अलग और हमारी अलग।

आठवाँ अरे, सड़क पर चुपचाप चलते-चलते भी न जाने हम में से कितनों का कितनी तरह से अपमान हो जाता है।

पहला और वह मसल यहाँ सच्ची हो रही है जिसमें कहा है—'मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा हुई।'

दूसरा हाँ गान्धी ने अब तक कितने आन्दोलन किये यहाँ की सरकार के खिलाफ।

तीसरा उन्होंने निहत्थों के लिए अन्याय का मुकाबला करने का एक नया रास्ता ही निकाल दिया।

चौथा और कितना सुन्दर नाम रक्खा है उसका सत्याग्रह।

पाँचवाँ उन्हें अंग्रेजी का पैसिव रिजिस्टेन्स नाम अच्छा न लगा।

छठवाँ हाँ, क्योंकि पसिव रिजिस्टेन्स का उपयोग करने वाला यह मानता है कि उसके पास दूसरी तरह से लड़ने की ताकत नहीं अतः पसिव रिजिस्टेंस की लड़ाई कमजोर की लड़ाई होती है। पर सत्याग्रह की लड़ाई तो बलवान् की लड़ाई है।

सातवाँ फिर जो पैसिव रिजिस्टन्स करता है उसके मन में अपने विरोधी के लिए घृणा रहती है क्रोध रहता है। सत्याग्रही के मन में तो विरोधी के लिए भी घृणा और क्रोध की जगह प्रेम और शांति रहती है।

आठवाँ मगनलाल गान्धी के बताये हुए सदाग्रह से उन्होंने सत्याग्रह शब्द बनाया।

नवाँ इस सत्याग्रह की फिलासफी है सत्य के आग्रह के साथ

प्रथम विरोधी को कष्ट न दे स्वयं कष्ट पाकर विरोधी का हृदय परिवर्तन।

दसवाँ और गांधी के मतानुसार सत्याग्रही की कभी हार तो होती ही नहीं।

पहला इस सत्य के आग्रह में गांधी ने कितने कष्ट सहे।

दूसरा जेल भी गये।

तीसरा हम उनके देशवासियों तक ने उन्हें गलत समझा।

चौथा हाँ पहली बार जब वे सरकार से समझौता कर जेल से निकले तब कुछ ने कहा कि वे पन्द्रह हजार पौण्ड खा गये।

पाँचवाँ केवल कहा इतना ही नहीं उन्हें बुरी तरह पीटा भी।

छठवाँ पर वाह गांधी वाह! बिना किसी के बुरे-भले कहने की परवाह किये डटे रहे अपनी बात पर।

सातवाँ इसलिए मिस्टर पोलक और कैलिनबैक के सदृश गोरे तक आज उनके साथ हैं।

आठवाँ अब आज फिर न्यूकासल से चार्ल्सटाउन तक ३६ मील चलकर नेटाल की सीमा पर सत्याग्रह होगा।

पहला और इस बार के सत्याग्रह की विशेषता होगी उसमें स्त्रियों और बच्चों का भी भाग लेना।

दूसरा इसीलिए तो आज हमें इन आन्दोलनों की ये सब न जाने कितनी बातें याद आ रही हैं।

[नेपथ्य में गान की ध्वनि सुन पड़ती है।]

पहला लो और बालाएँ भी गीत गाती हुई रवाना हो रही हैं।

[गीत की ध्वनि निकट आती जाती है।]

गीत

न हाथ एक शस्त्र हो,
न साथ एक अस्त्र हो,
न अन्न, नीर, वस्त्र हो,
हटो नहीं! डटो वहीं!
बढ़े चलो! बढ़े चलो!

रहे समक्ष गिरि शिखर,
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाय तन बिखर,
रुको नहीं! झुको नहीं!
बढ़े चलो! बढ़े चलो!

घटा घिरी अटूट हो
अधर में कालकूट हो
वही अमृत का घूंट हो,
जिये चलो! मरे चलो!
बढ़े चलो! बढ़े चलो!

गगन उगलता आग हो,
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू की अपने फाग हो
अड़ो वहीं! गड़ो वहीं!
बढ़े चलो! बढ़े चलो!

चली नयी मिसाल हो
जली नयी मशाल हो

बढ़ो नया कमाल हो
रुको नहीं ! झुको नहीं !
बढ़े चलो ! बढ़े चलो !

[कस्तूरबा का कुछ स्त्रियों के साथ उपर्युक्त गीत गाते हुए प्रवेश। उनकी अवस्था अब लगभग चवालीस वर्ष की है। प्रौढ़ होने पर भी वे सुन्दर हैं। अब उनकी वेशभूषा अत्यन्त सादी है। शरीर पर कोई भूषण नहीं है। इन स्त्रियों के आते ही जो व्यक्ति पहले से यहाँ बैठे थे वे खड़े हो जाते हैं। स्त्रियों के पश्चात् ही मोहनदास एक पुरुषों के समूह के साथ आते हैं। इनमें भी केलनबैक और भी पोलक भी हैं। मोहनदास की अवस्था अब लगभग चवालीस वर्ष की है। उनकी वेशभूषा पश्चिमी नहीं रही, वे नीचे के अङ्ग पर घुटने तक एक सफेद ढीला पाजामा पहने हैं, ऊपर के शरीर पर एक कुरता है। एक निवाड़ में बाँध कन्धे से दाहिनी ओर कमर पर एक थैला लटक रहा है। सिर खुला है, पर सिर के बालों पर मशीन चल गयी है। केलनबैक और पोलक अधेड़ अवस्था के हैं, कुछ ठिगने पर भरे हुए शरीर के। वेशभूषा पश्चिमी।]

मोहनदास — बहनो और भाइयो ! मुझे इस देश में प्राय: करीब बीस बरस बीत गये। मैं यहाँ आया था दादा अब्दुल्ला सेठ के एक मुकदमे में उनका वकील बनकर।

एक व्यक्ति — और फिर बन गये यहाँ बसे हुए सब हिन्दुस्तानियों के वकील।

दूसरा — नहीं, नहीं नेता।

तीसरा — नेता क्या सब कुछ।

कुछ व्यक्ति (एक साथ) हाँ, सब कुछ सब कुछ।

मोहनदास यहाँ आने के कोई एक साल बाद अब्दुल्ला सेठ का काम निपटने पर लौट रहा था भारत, पर उसी वक्त यहाँ के हिन्दुस्तानियों पर तीन पौण्ड वाला टैक्स आ गया। मैंने वचन दिया जब तक जरूरत होगी यहाँ रहूँगा।

एक व्यक्ति और खूब निभाया उस वचन को।

दूसरा हाँ, वचन निभाने वाला हो तो ऐसा हो।

मोहनदास तीन पौण्ड टैक्स के कानून के बाद दूसरा काला कानून आया आठ बरस की उम्र के ऊपर के हर भारतीय को रजिस्टर कराने का और तीसरा जब यह अदालत का फैसला आया कि ईसाइयों की शादियाँ ही कानूनी शादियाँ मानी जायँगी। इन कानूनों के खिलाफ इस देश की सरकार से हमने जो अहिंसात्मक सत्याग्रह कर लड़ाइयाँ इन बीस बरसों में लड़ीं उन्हें आप में से अनेक भाई-बहन जानते हैं।

एक व्यक्ति जानते क्या, आपकी आज्ञानुसार लड़ते रहे हैं।

मोहनदास हाँ आपकी मदद बिना मैं अकेला क्या कर सकता था? कितनी बार आज मुझे याद आ रही है इन बीते हुए दिनों की खासकर हमारे टालस्टाय फार्म के निवास के समय की और श्री गोपालकृष्ण गोखले के दक्षिण अफ्रीका के दौरे की। मेरी पक्की राय है कि अगर टाल्स-टाय फार्म न होता तो जो हम आज हो गये हैं वह न होने पाते और यदि गोखले यहाँ न आते तो हमारे पक्ष में भारत के वाइसराय लार्ड हार्डिंग ने जैसा भाषण दिया वैसा भाषण वे कभी न देते।

जनसमुदाय—ठीक, बिलकुल ठीक!

मोहनदास—इन लड़ाइयों में जो कुछ हुआ उससे भी आप में से कई वाकिफ हैं। मुझे यहाँ के गोरों ने ही गलत नहीं समझा पर कई बार हमारे भाइयों ने भी।

एक व्यक्ति—बेवकूफ थे वे भारतीय।

दूसरा—बेवकूफ नहीं अहसान-फरामोश।

मोहनदास—नहीं नहीं, किसी के लिए ऐसा न कहो। अपना अपना खयाल तो ठहरा। उन्होंने मुझे गलत समझा इतना ही कहा जा सकता है।

एक व्यक्ति—यह आपकी उदारता है।

कुछ व्यक्ति—महान् उदारता... महान् उदारता!

मोहनदास—मेरे लिए गोरे, गेहुँएँ, काले किसी भी देश के रहने वाले आदमी, सब बराबर हैं। जिन गोरों से मैं लड़ा हूँ, उनके लिए भी मेरे मन में कोई घृणा नहीं है। मैं सबसे प्रेम करता हूँ और अगर किसी से लड़ता भी हूँ तो उसूलों पर। साथ ही जिससे लड़ता हूँ उसकी भी भलाई के लिए।

कुछ व्यक्ति—धन्य है! धन्य है!

मोहनदास—पर जिस ईश्वर ने गोरों को बनाया है उसी ने हम हिन्दियों को भी। जिस तरह गोरों के एक सिर, दो आँखें, एक नाक, एक मुँह, दो कान, दो हाथ और दो पैर हैं उसी तरह हम हिन्दियों के भी। ईसा को मानने वाला कोई आदमी भी दूसरे आदमी से नफरत करे यह कैसे हो सकता है?

एक व्यक्ति—ये सारे सच्चे ईसाई हों तब तो!

मोहनदास सब गोरों के लिए ऐसा न कहो। (कैलनबैक और पोलक की ओर इशारा कर) ये कैलनबैक और पोलक भी तो गोरे हैं। और भी कई गोरे भाई-बहन हमारे साथ रहे हैं।

एक व्यक्ति ऐसे गोरों की जय हो!

कुछ व्यक्ति (एक साथ) कैलनबैक और पोलक की जय!

मोहनदास आदमी एक तरफ ईश्वर की पूजा करे और दूसरी ओर मनुष्य का तिरस्कार यह बात बनने लायक नहीं है। ईश्वर का नाम लेने वाले आस्तिक नहीं हैं लेकिन ईश्वर का काम करने वाले आस्तिक हैं। यह पृथ्वी परमेश्वर की है इस पर रहने वाले सब मानव एक हैं कोई बड़ा नहीं, कोई छोटा नहीं। एक को दूसरे से बड़ा समझना भारी पाप है।

कुछ व्यक्ति सत्य है!

मोहनदास इसीलिए मैं यहाँ के इस रंग भेद को बड़े से बड़ा पाप मानता हूँ। इस पाप के खिलाफ आज हम इन बीस बरसों की सबसे बड़ी अहिंसात्मक लड़ाई लड़ने को सत्याग्रह करने को चल रहे हैं। सत्याग्रह सत्य का अर्थ सत्य का अवलम्बन है। जो सदा रहता है वही सत्य है इसीलिए सत्य ही मेरे लिए ईश्वर है। विचार में सत्य, वाणी में सत्य और कृति में भी सत्य होना चाहिए। सत्य का रास्ता सँकरा है पर सीधा। अहिंसा बिना सत्य को नहीं ढूँढ़ा जा सकता। समय से अगर हम सत्य के रास्ते पर चलें और साधन ठीक रखें तो जल्दी हो या देर से साध्य मिल ही जाता है। इसलिए सत्याग्रही वह

है जो अपने जीवन को ईश्वर के अर्पण कर देता है। सच्चा सत्याग्रही ईश्वरी व्यक्ति होता है। इस दुनियां में ऐसा आदमी बुराई से जंग किये बिना रह ही नहीं सकता। अन्याय शोषण दमन, निर्दयता का वह सामना करता ही है और वह सामना वह अपनी तमाम ताकत से करता है। इस युद्ध में वह सत्य पर आश्रित रहता है और चूंकि यह सत्य दुनिया की एकता है इसलिए वह अहिंसा से सबकी सेवा से ही हासिल हो सकती है।

अहिंसा और प्रेम एक ही चीज के दो नाम हैं। इसीलिए सत्याग्रही का हथियार अहिंसा ही है। यह अहिंसा जीवित शक्ति है। इसमें कायरता और कमजोरी की जगह नहीं। अहिंसा के बिना सत्य ढूंढा ही नहीं जा सकता। अहिंसा साधन है और सत्य साध्य।

एक व्यक्ति सत्य की जय!

जनसमुदाय सत्य की जय!

मोहनदास इस अहिंसा के पालन के लिए आत्मशक्ति जरूरी है। इस आत्मशक्ति से सत्याग्रही बुराई करने वालों के बुरे कामों से असहयोग करता है पर बुरे काम करने वालों से नहीं। सत्याग्रह की विशेषता यह है कि सत्याग्रही सत्य के आग्रह को कहीं बाहर खोजने के लिए नहीं जाता। सत्य के आग्रह की पहचान उसके स्वयं के भीतर होती है जिसके पता होने के बाद वह उस धर्म-युद्ध में लगता है जिसमें न कहीं कोई कोई पालिसी बात रहती जिसको छिपाने की जरूरत हो न वहां धूर्तता का समावेश रहता

और न कहीं असत्य की जगह रहती।

जनसमुदाय धन्य है! धन्य है!

मोहनदास जिसे धर्म में विश्वास है वह ऐसे धर्म-युद्ध के लिए हमेशा तैयार रहता है। इस न्याय-परायण युद्ध की योजना खुद ईश्वर बनाता है, वही इसे चलाता है। धर्म-युद्ध सिर्फ ईश्वर के नाम पर लड़ा जा सकता है। दूसरी लड़ाइयाँ जिनकी पहले से योजना बनती है वे सच्चे न्याय-परायण धर्म-युद्ध नहीं हैं। ईश्वर द्वारा नियोजित इस धर्म-युद्ध का सैनिक-सत्याग्रही जब अपने चारों तरफ अँधेरा देखता है और उससे निकलने का दूसरा कोई उपाय नहीं तब ईश्वर उसकी मदद के लिए पहुँचता है। ईश्वर तभी सहायता करता है जब कोई व्यक्ति अपने को अपने पैर की नीचे की धूलि से भी ज्यादा विनम्र पाता है। सेवा का जीवन नम्रता का ही जीवन हो सकता है।

जनसमुदाय धन्य है! धन्य है!

मोहनदास ऐसे सैनिक के लिए यह धर्म-युद्ध ही विजय है क्योंकि सत्य के इस आग्रह में ही उसे आनन्द मिल जाता है। उसकी फल की ओर नजर ही नहीं जाती। उसके लड़ाने में दु ख और हार शब्द ही नहीं रहते। उसके लिए गीता के शब्दों में सुख और दुःख जीत और हार, सब समान रहते है। फिर इस सत्याग्रह की एक और विशेषता यह है कि इसके उसूल इतने सरल हैं कि वे बच्चों तक को समझाए जा सकते हैं। सत्याग्रही के लिए चार नियम सबसे जरूरी हैं पहला ईमानदारी दूसरा हिम्मत, तीसरा

सर्वस्व त्याग की भावना यहाँ तक कि मौत तक का सामना और चौथा शत्रु तथा अपने साथियों के लिए भी विचार शब्द और कृति में अहिंसा।

कुछ व्यक्ति धन्य है! धन्य है!

मोहनदास और इस बार की इस लड़ाई में सबसे बड़ी बात तो यह है कि इसमें हमारी बहनें भी हिस्सा ले रही हैं। सत्याग्रह में नारी की जगह पुरुष से भी ज्यादा है क्योंकि सत्याग्रही के लिए जिस अहिंसा और प्रेम की जरूरत रहती है वह नारी में पुरुष से कहीं ज्यादा रहता है। नारी माता है माता से ज्यादा ये गुण और त्याग की भावना किसमें ज्यादा होती है? माता अपने बच्चे को नौ महीने पेट में रखती है फिर उसके जन्म में तकलीफ पाती है और लगातार उसके लालन-पालन में। लेकिन वह निर्माण कर रही है इस खुशी में वह इन सारी तकलीफों को भूल जाती है। नारी के इन्हीं नैसर्गिक गुणों का उसे सत्याग्रह में उपयोग करना है।

एक व्यक्ति भारत की वीर बालाओं की जय!

कुछ व्यक्ति भारत की वीर बालाओं की जय!

मोहनदास एक दिन मैं बहनें जेल जायें यह मन ठीक नहीं समझता था। पर जिस कानून के अनुसार धर्मपत्नियों को रखैल स्त्रियों का रूप दिया जा रहा है उसका विरोध तो बहनों को चाहे वे कहीं भी हों करना ही चाहिए।

कुछ व्यक्ति (एक साथ) जरूर जरूर।

मोहनदास इस तरह के कानूनों को मंजूर करने से मरना कहीं

बहतर है। मैं साहसपूर्वक और पक्की तौर पर कहना चाहता हूँ कि अगर हम मुट्ठी भर भी रह जायेंगे तो भी हमारा यह अहिंसात्मक सत्याग्रह चलेगा। सत्याग्रही हार नहीं जानता, उसका नतीजा अन्त में जीत ही होता है। फिर सत्याग्रह की प्रणाली में विरोधी के लिए किसी तरह की कटुता लाना, उसे नीचा दिखाना उसे झुकाना, उसे नुकसान पहुँचाना या उसे बर्बाद करना नहीं है। न सत्याग्रह-विरोधी को कमजोर कर जीत हासिल करना चाहता है। सत्याग्रही अपनी सच्चाई और आत्म-त्याग से विरोधी के दिमाग को अपनी तरफ करता और उसके दिल को जीतता है। सत्याग्रही बुराई का अच्छाई से, क्रोध का प्रेम से, असत्य का सत्य से और हिंसा का अहिंसा से दमन करता है। सत्याग्रही को मानव-हृदय में विश्वास रहता है इसलिए उसका विरोधी अगर बीस दफा भी उसे धोखा दे तो वह इक्कीसवें बार फिर उस पर विश्वास करेगा।

एक व्यक्ति   गान्धीजी की जय!

कुछ व्यक्ति   सत्याग्रह की जय!

मोहनदास   लेकिन आदमी यकायक नहीं बदलता। इन गोरों को एक दिन में बदलने की कोशिश कुदरती नियमों के खिलाफ होगी। हमारी यह लड़ाई दरअसल मानव मात्र की आज़ादी की लड़ाई है और इस तरह यह एक सच्ची धार्मिक लड़ाई है।

समस्त व्यक्ति   गान्धीजी की जय!

लघु यवनिका

पाँचवाँ दृश्य

स्थान — प्रिटोरिया में जनरल स्मट्स का दफ्तर

समय — तीसरा पहर

[दफ्तर पश्चिमी ढंग के दफ्तरों सदृश सजा है। जनरल स्मट्स और उनका एक सेक्रेटरी दफ्तर में इधर-उधर घूमते हुए बातें कर रहे हैं। स्मट्स ऊँचे-पूरे अधेड़ अवस्था के गोरे हैं। चेहरे पर मूँछों के साथ दाढ़ी है, बाल खिचड़ी, लिबास पश्चिमी ढंग का। सेक्रेटरी भी ठिगना नहीं है, कुछ मोटा है। लिबास पश्चिमी।]

स्मट्स — इतना आगे बढ़ने के बाद हमारी रेलों की स्ट्राइक सुनते ही अपने आप को इस तरह रोक देना यह गांधी ही कर सकता था। सचमुच गांधी बड़ा बहुत बड़ा आदमी है।

सेक्रेटरी — तो आप मानते हैं कि इस आदमी से अब सच्चा और स्थायी समझौता करने के सिद्धान्त को मंजूर कर आपने उचित काम किया है?

स्मट्स — इसमें मुझे अब जरा भी शक नहीं है। इधर इन वर्षों में इस देश में जो कुछ गांधी करता रहा है उससे मैं काफी परेशान हूँ। इस मुल्क के प्रधान मन्त्री की हैसियत से मेरा फर्ज था शान्ति की रक्षा। कई ऐसे मौके आये जिनमें मुझे सख्त [illegible] होना पड़ा। इस बात का अब मैं इकरार करूँगा ही कि गांधी ने दुनिया को अपने हकों की रक्षा के लिए एक नया तरीका बनाया है।

सेक्रेटरी अपने 'इण्डियन ओपीनियन' अखबार में गान्धी ने इस तरीके के सम्बन्ध में लिखा है कि सत्याग्रह की शक्ति ऐसी ताकत है कि अगर दुनियाँ में उसका व्यापक उपयोग होने लगे तो वह सामाजिक कीमतों को बदल देगी और पश्चिमी राष्ट्र जो अपनी फौजी ताकत बढ़ा दुनियाँ में साम्राज्यवाद को कायम कर खुद ही नाश की ओर बढ़ रहे हैं उनका भी पूर्वी राष्ट्रों के साथ ही बचाव हो जायगा।

स्मट्स मुझे सचमुच इस बात का बड़ा दुःख है कि गान्धी और उसके उसूलों को जानने पर भी और गान्धी के लिए अपने मन में ऊँची-से ऊँची इज्जत रखते हुए भी मुझे उसके साथ लड़ना पड़ा है। पर मुश्किल-से-मुश्किल मौकों पर भी गान्धी ने कभी भी अपना सन्तुलन नहीं खोया अपने पर घृणा का कब्जा नहीं होने दिया और बुरे-से बुरे पाशविक अत्याचारों के होने पर भी उसने अपने मान बोचित गुणा को नहीं छोड़ा।

सेक्रेटरी ऐसे आदमी के सामने पाशविक शक्ति कामयाब हो ही नहीं सकती।

[वर्दी लगाये हुए चपरासी का प्रवेश। उसके हाथ में चाँदी की तश्तरी में एक कार्ड है। चपरासी सलाम कर वह तश्तरी स्मट्स के सामने करता है। स्मट्स कार्ड उठाता है।]

स्मट्स (कार्ड को पढ़ सेक्रेटरी से) लो गान्धी आ गये। (चपरासी से) ब्रिंग हिम हियर प्लीज।

[चपरासी का सलाम कर प्रस्थान। स्मट्स सिर झुका चुपचाप इधर-उधर घूमते हैं। सेक्रेटरी भी चुपचाप उनकी

और खेलते हुए उसके साथ घूमता है। गान्धी का प्रवेश। उनकी वही वेशभूषा है जो सत्याग्रह के मार्च के समय थी।]

स्मट्स (आगे बढ़ गान्धी से हाथ मिलाते हुए) हालांकि गये छ मासों में हम लोग कई दफा मिले हैं मिस्टर गान्धी, पर आज आपका इस दफ्तर में स्वागत कर मुझे विशेष खुशी हो रही है।

मोहनदास मुझे भी जनरल स्मट्स, क्योंकि मुझे यह उम्मीद है कि इस बार का हमारा समझौता शायद न टूटने वाला और स्थायी हो सकेगा।

[अब मोहनदास और जनरल का सेक्रेटरी भी हाथ मिलाते हैं।]

स्मट्स बैठने की कृपा कीजिये।

[तीनों बैठ जाते हैं।]

सेक्रेटरी यह कहने की शायद जरूरत नहीं है मिस्टर गान्धी, कि जनरल स्मट्स की सरकार अभी सारी शक्ति रखती है, पर आप जानते हैं कि जिस आदमी के दिल में इन्द्रियों के सुखों की चाह न रह गयी हो आराम की इच्छा न रह गयी हो पदों और तारीफों की लालसा न रह गयी हो, और जो जिसे वह न्यायोचित समझता है, उस पर कभी भी हासिल में लाने के लिए कमर कस रहे, उससे शक्तिशाली दुनिया में और कोई नहीं होता।

स्मट्स (मुस्कराते हुए) ऐसा विरोधी बड़ा नसमीहत-दे होता है और भयानक भी, क्योंकि उसके शरीर को तो जीता जा सकता है पर उसकी रूह को नहीं। मैं आपसे

लड़ने की पाशविक शक्ति जरूर रखता हूँ पर लड़ने के लिए आत्मिक शक्ति की भी तो जरूरत है, वह अब मुझमें नहीं रही।

सेक्रेटरी चाहे हम आपको दिल से मदद न देना चाहें पर हम करें क्या? हमसे लड़ते हुए भी हमारे आपद्‌काल में आप हमें उलटी मदद देते हैं आप अपने दुश्मनों को भी नुकसान नहीं पहुँचाना चाहते आप जीत चाहते हैं खुद तकलीफ़ उठाकर। आपके इन आचरणों ने हमें बेकाम कर दिया।

स्मटस (कुछ रुककर) मिस्टर गान्धी म यूनियन पार्लियामेंट में बिल पेश कर रहा हूँ जिसके अनुसार हिन्दू मुस्लिम और पारसियों की शादियाँ भी कानूनी मानी जायेंगी। हिन्दुस्तानियों पर का तीन पौण्ड का टैक्स खत्म किया जायगा और वे बिना रजिस्ट्रेशन तथा उसके सर्टीफिकेट वगैरह के अफ्रीका में घूम सकेंगे।

मोहनदास (गद्‌गद्‌ स्वर से) दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुस्तानियों के लिए आपका यह कानून 'मग्नाकार्टा' होगा। आठ साल के बाद यहाँ का सत्याग्रह खत्म हुआ। सुनार सोने को परख के लिए सोने को कसौटी पर कसता है पर जब उसे सन्तोष नहीं होता तब वह उस सोने को आग में डाल देता है। आग में उसका मैल निकल जाता है और सच्चा सोना आग से बाहर निकल आता है। दक्षिण अफ्रीका में हिन्दुस्तानी इसी परीक्षा से गुजरे हैं।

यवनिका

तीसरा अङ्क

पहला दृश्य

स्थान — अमृतसर में कांग्रेस के कैम्प में कांग्रेस सभापति
पं० मोतीलाल नेहरू के डेरे का भीतरी भाग

समय — रात्रि

[डेरे के तीन ओर की कनातें दिखती हैं, जमीन पर दरी बिछी है, जिस पर सोफे, कुर्सियों, टेबिल आदि की सजावट है। कुर्सियों पर पं० मोतीलाल नेहरू, लोकमान्य तिलक, पं० मदनमोहन मालवीय, श्री मुहम्मद अली जिन्ना, श्री चितरंजन दास, मौलाना मुहम्मद अली और स्वामी श्रद्धानन्द बैठे हुए हैं। इन नेताओं के स्वरूप का वर्णन अनावश्यक है क्योंकि सभी इनके स्वरूपों से परिचित हैं। तिलक, मालवीय, मुहम्मद अली और श्रद्धानन्द की वेशभूषा को छोड़ शेष सबकी वेशभूषा पश्चिमी ढंग की है। तिलक, मालवीय, मुहम्मद अली और श्रद्धानन्द पूर्वीय वेशभूषा में हैं। उनकी वेशभूषा भी उनके चित्रों के कारण सभी को ज्ञात है।]

तिलक — (चितरंजनदास से) दास बाबू, कांग्रेस के इस अधिवेशन में आप जिस प्रस्ताव का समर्थन करेंगे वही इस अधिवेशन का मुख्य प्रस्ताव होगा। परन्तु ... परन्तु ... (रुक जाते हैं।)

चितरंजनदास परन्तु पर आप रुक कसे गये, लोकमान्य ?

तिलक म इसलिए रुक गया कि गान्धी को बिना कुछ संशोधनो के आपका यह प्रस्ताव मंजूर नहीं है ।

जिन्ना ओ ! यह गान्धी ! आप लोग जानते हैं जब साउथ अफ्रीका से यह हजरत हिन्दुस्तान तशरीफ लाये तब इनके वेलकम के लिए बम्बई में जो आम जलसा हुआ उसकी सदारत मैंने ही की थी । लेकिन यहाँ आने के बाद इनका जो रवैया म देख रहा हूँ उसकी वजह से हिन्दुस्तान के आग के पालिटिक्स में मुझे बहुत खतरा दिखायी दे रहा है ।

श्रद्धानन्द यूरोप की गत लड़ाई में आप सब ने अंग्रेज सरकार को इतनी सहायता दी ।

मालवीय (बीच ही में मुस्कराकर) और स्वामी जी आप उन सहायता देने वालो में नहीं थे ?

श्रद्धानन्द (मुस्कराकर) भूल गया मुझे कहना चाहिए था कि हम सबने अंग्रेजों को इतनी सहायता दी । उसके फलस्वरूप हमें मिले दो रौलट कानून । और उसका जब हमने विरोध किया तब अंग्रेजों ने जलियाँवाला बाग का अभूतपूर्व और भीषण हत्याकाण्ड किया ।

जिन्ना मगर, अगर कान्स्टीट्यूशनल तरीके से उन कानूनों की मुखालफत की जाती गान्धी सत्याग्रह न चलाता और अमृतसर में वैसी वारदातें न होतीं तो अंग्रेज जलियाँ वाले बाग में जो किया यह वह कर ही न सकते ।

मुहम्मद अली पर ऐसे कानूनों की कान्स्टीट्यूशनल तरीके से मुखालफत हो ही कैसे सकती थी ?

मोतीलाल नेहरू : और फिर हम चाहते थे आज़ादी। उस आज़ादी के जगह पाये थे माण्टफोर्ड रिफ़ार्मस्।

चित्तरंजन दास : इन रिफ़ार्मस् के लिए (अपने जेब से कागज़ निकाल उसे देखते हुए) इस प्रस्ताव में जो कुछ कहा गया है वह हम न कहेंगे तथा इन सुधारों के लिए अपूर्ण असन्तोषजनक और निराशापूर्ण शब्दों का उपयोग न करेंगे तो फिर और क्या करेंगे।

तिलक : परन्तु आप लोग जानते हैं गांधी की एक फ़िलासफ़ी है। दक्षिण अफ़्रीका से लौटकर उन्होंने इस फ़िलासफ़ी के अनुसार चम्पारन में सत्याग्रह आन्दोलन चलाया और उसमें उन्हें सफलता मिली।

मुहम्मद अली : आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं लोकमान्य। मैं तो मध्य प्रदेश के छिंदवाड़े जिले के जेल से छूटने पर छिन्दवाड़े से अमृतसर का स्पेशल टिकट ही लेकर आया हूँ।

मोतीलाल नेहरू : मैं भी धीरे धीरे यह मानने लगा हूँ कि गांधी जी बहुत दूरन्देश हैं।

मालवीय : आपकी यह राय जवाहरलाल के कारण तो नहीं होती जा रही है?

[कुछ लोग हँस देते हैं।]

तिलक : गांधी का कहना है कि यदि हम कोई चीज़ स्वीकार ही करते हैं तो फिर उसमें मीन-मेख नहीं निकालनी चाहिए। साथ ही हमें मॉण्टेगू साहब की सद्भावना के लिए उन्हें धन्यवाद भी देना चाहिए। जलियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड के लिए यदि हम अंग्रेज़ सरकार की निन्दा करते

हैं तो यहाँ भारतीयों ने जो हिंसा की है उसकी भी निन्दा करनी चाहिए।

जिन्ना ओ!

चितरंजन दास राजनीति फिलासफी का क्षेत्र नहीं है।

तिलक पर मेरा निश्चित मत है कि आज देश को गान्धी की आवश्यकता है और हम गान्धी की अवहेलना नहीं कर सकते।

[मोहनदास का प्रवेश। वे अब खादी का कुरता और धोती पहने हैं और सिर पर गान्धी टोपी लगाये हैं। मोहनदास को देख, जिन्ना को छोड़ उनके स्वागत के लिए सब खड़े हो जाते हैं।]

तिलक आइए, बैठिए, गान्धीजी।

[सब लोग बैठ जाते हैं।]

मोहनदास लोकमान्य मैं आपसे बिदा लेने आया हूँ। कांग्रेस में अब मेरे लिए कोई जगह नहीं है।

तिलक वाह! वाह! यह आपने खूब ही कहा! आप समझते हैं हम लोग आपको इस तरह बिदा दे सकते हैं?

मोहनदास पर, आप जानते हैं सही हों या गलत मेरे कुछ सिद्धान्त बन गये हैं और कांग्रेस क्या तमाम दुनियाँ को मैं उन उसूलों के लिए छोड़ सकता हूँ।

तिलक : पर पर, गान्धीजी क्या हमारा और आपका कोई समझौता नहीं हो सकता?

मोहनदास समझौता? समझौता तो मैं बड़े-से-बड़े विरोधी से भी करने को तैयार रहता हूँ। फिर आप तो मेरे

और हम देश के नेता हैं। आपके और हमारे ध्येय में भी कोई फ़र्क़ नहीं। उस ध्येय को हासिल करने के रास्ते में ही अन्तर है।

तिलक — इसीलिए तो मैंने कहा न कि क्या हमारा कोई समझौता नहीं हो सकता? (कुछ रुककर) गान्धीजी अभी आपके आने के पहले मैं अपने इन साथियों से कह रहा था कि देश को अब गान्धी की आवश्यकता है और हम गान्धी की अवहेलना नहीं कर सकते। कोई भी समझौता करना पड़े हम आपसे समझौता करेंगे और इस प्रकार आपको कांग्रेस में विघ्न न होने देंगे।

मोहनदास — (एकटक लोकमान्य की ओर देखते हुए) कितने कितने महान् हैं आप लोकमान्य! मैं स्वर्गीय गोपालकृष्ण गोखले को अपना राजनैतिक आदर्श मानता हूँ। उन्हें देखते ही मेरा उनके प्रति अत्यधिक प्रेम हो गया था और इनके लिए मैंने उस गंगा की उपमा दी थी जिसके पवित्र जल में स्नान तथा जीवन रहता है तथा जिस स्नान के लिए आत्मा लालायित रहता है। आपको मैंने उस रत्न उस समुद्र के मानिंद माना था जिसकी गहराई थी। पर मुश्किल यही (गद्गद् स्वर में) सचमुच कितने कितने महान् हैं आप!

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान : नागपुर में कांग्रेस अधिवेशन का पण्डाल

समय : तीसरा पहर

[कांग्रेस अधिवेशन के इस पंडाल का कुछ भाग दिखायी देता है। पीछे की तरफ मंच का कुछ हिस्सा दीखता है जिस पर लोकमान्य तिलक का आदमकद तैलचित्र लगा हुआ है। मंच की मुंडेर पर एक और विशाल चित्र बना है जिसमें लोकमान्य तिलक का स्वर्गारोहण दिखाया गया है। इस चित्र में विमान पर लोकमान्य स्वर्ग जा रहे हैं और भारतमाता मूर्छित होकर गिर रही हैं जिन्हें महात्मा गान्धी सँभाल रहे हैं। ये दोनों चित्र इतने बड़े और इस प्रकार बनाये गये हैं कि दर्शकों को दूर से भी दृष्टि-गोचर होते हैं। मंच के नीचे कुर्सियों पर बैठे हुए जनसमुदाय का कुछ भाग दिख पड़ रहा है। मंच की कुर्सियाँ इस समय खाली हैं। मंच के नीचे जो जनसमुदाय बैठा है, उसका मुख मंच की तरफ है। इस जनसमुदाय में बातचीत चल रही है, जिसके कारण पंडाल में कुछ हल्ला-सा मचा हुआ है। अधिकांश बातचीत तो समझ में नहीं आती पर बीच-बीच में जब कुछ लोग जोर-जोर से बातचीत करने लगते हैं तब शेष आदमियों की बातचीत कुछ रुक जाती है और इन जोर-जोर से बातचीत करने वालों की बातचीत सुनायी देने लगती है।]

एक व्यक्ति : हाँ हाँ, मैं पक्की, पक्की खबर दे रहा हूँ, असह-योग का प्रस्ताव चित्तरंजनदास पेश करने वाले हैं।

दूसरा : पर, मैं मानूँ कैसे ? चित्तरंजनदास बंगाल और आसाम

मैं सैकड़ों प्रतिनिधियों को इसलिए लाया हूँ कि कलकत्ते में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन ने जो असहयोग का प्रस्ताव मंजूर किया है उसे नागपुर के कांग्रेस के इस अधिवेशन में अस्वीकृत करा सका।

तीसरा और इन सैकड़ों प्रतिनिधियों के कलकत्ते से नागपुर लाने का हजारों रुपया दास बाबू ने अपने जेब से खर्च किया है यह मुझे मालूम है।

चौथा पर भाई

[फिर हल्ला होने के कारण कुछ सुनायी नहीं देता। कुछ देर बाद फिर सुन पड़ता है।]

एक यह गांधी अजीब आदमी है अजीब!

दूसरा हाँ अजीब तो है ही! किस दिन क्या करेगा कोई नहीं जानता। अमृतसर में मान्टफोर्ड सुधारों को बिना किसी मीन-मेख के कांग्रेस द्वारा मंजूर करवाना चाहता था।

तीसरा मिस्टर मान्टगू को धन्यवाद तो अमृतसर कांग्रेस के प्रस्ताव द्वारा दिलवा ही दिया।

दूसरा और कुछ महीनों बाद ही सरकार से असहयोग करने का कार्यक्रम सामने लाया।

तीसरा पंजाब के हत्याकाण्ड पर सरकारी लीपापोती ने इसके मन में इस सरकार की न्यायपरायणता में जो विश्वास था उसे डगमगा

[फिर हल्ले में कुछ नहीं सुनायी पड़ता, कुछ देर बाद फिर सुन पड़ता है।]

एक इस असहयोग के कार्यक्रम का महाराष्ट्र भी कुछ कम विरोधी नहीं है।

दूसरा　और महाराष्ट्र का विरोध है खूब संगठित ।

तीसरा　फिर सुना महामना मालवीय और जिन्ना भी इस असहयोग के प्रस्ताव का विरोध करेंगे ।

चौथा　उन्होंने तो कलकत्ते में भी विरोध किया था　पर कांग्रेस में अब उनकी कोई नहीं सुनता ।

पाँचवाँ　और जहाँ तक जिन्ना साहब का सम्बन्ध है　मैंने तो यह सुना है　कि वे कांग्रेस के　आज के अधिवेशन में　आवेंगे ही नहीं ।

छठवाँ　जिस अपने पतलून के क्रीज खराब होने का इतना फ़िक्र रहता है　वह तर्क-मवालात के　प्रोग्राम की　ताईद कैसे कर सकता है ।

[कुछ लोगों की हँसी का शब्द ।]

सातवाँ　और जब इस अधिवेशन के सभापति विजय राघवाचार्य ने अपने मन के　सभापति पद से दिये गये　भाषण में असहयोग के कार्यक्रम का　इतना विरोध किया और उस तक का असर न पड़ा तब इन विरोधों में क्या धरा है ?

आठवाँ　सभापति के भाषण पर तो　नागपुर के मराठी अखबार के आज प्रातःकाल के　अंक में ठीक　लिखा है —"नालायक सभापति का नालायक भाषण ।"

[जोर की हँसी । फिर हल्ले में कुछ सुनायी नहीं देता । कुछ देर बाद फिर सुन पड़ता है ।]

एक　हाँ कांग्रेस के किसी अधिवेशन में　इतने प्रतिनिधि नहीं आये जितने इसमें । इस अधिवेशन के प्रतिनिधियों की संख्या मैं अभी स्वागत-समिति के दफ्तर से देखकर आया हूँ ।

दूसरा कितनी है ?

पहला चौदह हजार पाँच सौ ब्यासी जिनमें एक हजार पचास मुसलमान हैं एक सौ उन्हत्तर स्त्रियाँ और विलायत से आये हुए मजदूर दल के मित्र प्रतिनिधि की हैसियत से तीन अंग्रेज—असल मजदूर मिस्टर हालफार्ड और मिस्टर बैनस्पूर।

तीसरा हिन्दू-मुस्लिम एकता तो अभी अब हुई है वैसी कभी देखने में नहीं आयी।

चौथा क्या न होगी! गांधी ने उनकी खिलाफत का सवाल कांग्रेस के मंच पर ले लिया।

पाँचवाँ पर भाई राजनीति और धर्म का इस तरह मिलाना मैं भविष्य के लिए अच्छा नहीं समझता।

छठवाँ क्या बकते हो जी तुम शायद नहीं जानते कि हम मुसलमानों के मजहबी मामलात भी मजहब से अलहदा नहीं देखे जा सकते और यह भी

[फिर हल्ले में कुछ सुनायी नहीं देता। अब नेपथ्य में "महात्मा गान्धी की जय", "असहयोग आन्दोलन जिन्दाबाद", "खिलाफत अमर हो", "भारत माता की जय" आदि नारों का शब्द होता है और कुछ ही देर में दाहिनी ओर से विजयराघवाचार्य, सेठ जमनालाल बजाज, महात्मा गान्धी लाला लाजपतराय, बाबू विपिनचन्द्र पाल चित्तरंजनदास, मोतीलाल नेहरू, विट्ठलभाई पटेल, मौलाना शौकतअली, मौलाना मुहम्मदअली हकीम अजमलखाँ डाक्टर अन्सारी, मौलाना अबुल कलाम आजाद, सरोजिनी नायडू, सरला देवी चौधरानी, नरसिंह चिन्तामणि

केलकर, जवाहरलाल नेहरू आदि नेताओं तथा तीनों अंग्रेज कर्नल वेजवुड, हालफोर्ड नाइट, और मिस्टर बनस्पूर का प्रवेश। इनमें से आज कोई भी पश्चिमी लिबास में नहीं है। महात्मा गान्धी खादी का कुरता तथा धोती पहने और गान्धी टोपी लगाये हुए है। शेष सबके वस्त्र भारतीय मिलों के कपड़ों के हैं। नेताओं को देख पंडाल में उपस्थित सारा जनसमुदाय खड़ा हो जाता है और नेपथ्य में जिस प्रकार नारे लग रहे थे और जयघोष हो रहा था उसी प्रकार पंडाल में होता है। नेताओं की यह मंडली मंच पर रखी हुई कुर्सियों पर बैठ जाती है। कुछ समय बीतने का दिग्दर्शन कराने के लिए लघु यवनिका गिरती है, परन्तु तुरन्त ही उठ जाती है। जब लघु यवनिका उठती है, उस समय महात्मा गान्धी बोल रहे हैं। वे एक कुर्सी पर बैठे हुए अपना भाषण दे रहे हैं और उस समय लाउड स्पीकर ईजाद न होने के कारण उनका भाषण साधारण स्वर में धीरे-धीरे ही सुनायी देता है।]

महात्मा जो प्रस्ताव आपके सामने देशबन्धु चितरञ्जनदास ने रक्खा है और जिसका अनुमोदन लाला लाजपतराय ने किया है उसका मैं समर्थन करता हूँ। असहयोग का यह प्रोग्राम कांग्रेस ने कलकत्ते के अपने विशेष अधिवेशन में मंजूर कर लिया था और अब यह नागपुर में कांग्रेस के सालाना जलसे में ताईद करने के लिए पेश है।

एक व्यक्ति हम इसे ज्यों-का-त्यों मंजूर करेंगे।

अनेक व्यक्ति (जोर से) हाँ ज्यों-का-त्यों, ज्यों-का-त्यों।

महात्मा इस कार्यक्रम में क्या जादू है इसका पता इसी से

लग जाता है कि कलकत्ते में कांग्रेस के अधिवेशन के बाद कौंसिलों के जो चुनाव हुए उनमें अस्सी फीसदी वोटर वोट देने को नहीं गये और श्री देशबन्धुदास इस प्रोग्राम के खिलाफ थे उन्होंने इस कार्यक्रम के प्रस्ताव को आज आपके सामने रखा है।

एक व्यक्ति — यह कार्यक्रम तो नहीं आपका जादू है।

बहुत से व्यक्ति — (ज़ोर से) हाँ आपका जादू आपका।

[महात्मा गान्धी की जय के ज़ोर के नारे और तालियों की गड़गड़ाहट।]

महात्मा — आपने जो प्रस्ताव सुना उसके कुछ खास हिस्सों में से कौंसिल बायकाट के अंग में कामयाबी मिलने के बाद अब जो प्रधान अंग रह गये हैं उनमें हैं—पहला सरकारी खिताबों का छोड़ना, दूसरा सरकारी शिक्षा संस्थाओं से ताल्लुक न रखना, तीसरा सरकारी अदालतों का बहिष्कार, चौथा विदेशी माल का बायकाट यानी स्वदेशी वस्त्रों तथा खादी का उपयोग करना और पाँचवाँ अस्पृश्यता निवारण।

एक व्यक्ति — इस देश की जनता कौंसिलों के बायकाट के समान ही इन अंगों को भी पूरा करेगी।

कुछ व्यक्ति — (एक साथ ज़ोर से) ज़रूर ज़रूर।

महात्मा — पर आपको असहयोग के उसूलों को अच्छी भाँति समझ लेना चाहिए। हमारे दिल में अंग्रेज़ जाति से कोई घृणा नहीं है। हम ईश्वर की इस सृष्टि में सबसे प्रेम करते हैं। प्रेम और अहिंसा का एक दूसरे से चोली-दामन का सम्बन्ध है। असहयोग में प्रेम और अहिंसा [illegible] है। यहा

जनसमुदाय महात्मा गान्धी की जय !
भारत माता की जय !

महात्मा आपने अगर असहयोग का प्रोग्राम ठीक तरह से चलाया तो पंजाब के अत्याचारों पर सरकार को वाजिब कार्यवाही करनी ही होगी खिलाफत का मसला हल हो जायगा और एक साल के अन्दर आपको स्वराज्य मिल जायगा। इस कार्यक्रम को चलाने के लिए इस मुल्क के हर मर्द और औरत को कमर कसनी होगी अपने सर्वस्व की आहुति देने के लिए तयार होना पड़ेगा। और इस शैतानियत से भरी हुई सरकार के बड़े-से-बड़े दमन की परवाह न कर उसे सहन करने के लिए अपने को हर तरह से बनाना होगा। कोई भी देश बिना कष्ट की आग में तपे शुद्ध नहीं हुआ है। माँ इसलिए कष्ट पाती है कि उसका बच्चा जिन्दा रहे। बीज इसलिए अपने को खतम कर देता है कि उससे पौधा बनकर निकले मृत्यु से जीवन पैदा होता है। भारत को अपनी गुलामी खतम कर अपने उत्थान के लिए इसी कष्ट से शुद्ध होने के कुदरती नियम से गुजरना होगा। दुनियाँ में अकर्मण्यता से कभी कुछ नहीं हुआ। जो कुछ हुआ वह हमेशा कर्मण्यता से हुआ है।

[महात्मा चुप हो जाते हैं। पुनः जय-जयकार के नारे लगते हैं और तालियों की गड़गड़ाहट होती है।]

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान : एक सफेद चादर

समय : प्रातःकाल से ले रात्रि तक अनेक दिन

[सफेद चादर पर निम्नलिखित दृश्य दिखायी देते हैं। अनेक बार नारे भी सुन पड़ते हैं और गीत भी।]

[निम्नलिखित गीत गाते हुए कांग्रेस का तिरंगा झण्डा लिये जिसमें उस समय लाल, हरे और सफेद रंग थे एक युवकों और महिलाओं का जुलूस आता है। युवक सफेद खादी के कुरते और धोती पहने हैं और सिर पर गान्धी टोपी लगाये हैं। महिलाएँ केसरी रंग की साड़ियाँ और चोलका पहने हैं, पर कोई आभूषण नहीं।]

गीत

सँदेसा पूज्य गान्धी का जगत को हम सुना देंगे।
हमारा देश सोया जो उसे अब हम जगा देंगे॥
छुटा है मोह जोखिम का नहीं परवाह है उसकी।
मुसीबत मातृ भू की पर, उसे उन्नत बना देंगे॥
तजेंगे स्कूल और कालेज अदालत का भी तज देंगे।
स्वदेशी वस्त्र भूषा का, सबक सबको पढ़ा देंगे॥
पलायन में न दुख पाया करो पंचायती जारी।
मिटे अन्याय जल्दी से, प्रथा ऐसी चला देंगे॥
नहीं बन्दूक का डर है न तोपों का हमें खटका।
आत्मबल का नया डंका जगत में हम बजा देंगे॥
लड़ाई है न युद्ध अनबन, न शस्त्रों का जमघट है।

भड़कती आग को हम सब, सुधारस से बुझा देंगे ॥
हमें स्वराज्य मिट्टी में, सुवर्णम चक्र है भला।
इसी से हम विदेशी को मूल जड़ से उड़ा देंगे ॥

[गीत गाते-गाते बीच-बीच में यह जुलूस दाहने हाथ ऊँचे करके निम्नलिखित नारे भी लगाता है ।]

नारे महात्मा गान्धी की जय !
भारत माता की जय !
भारत आज़ाद हो !

[यह दृश्य लुप्त होकर सामूहिक कताई का दृश्य दिखायी देता है ।

यह दृश्य लुप्त होकर एक शराब की दूकान पर पिकेटिंग का दृश्य दिखायी देता है । स्वयंसेवक और स्वयंसेविकाएँ शराब की दूकान के सामने खड़े हैं, शराब पीने को आने वाले लोगों के हाथ जोड़ते हैं पैर पड़ते हैं और बड़ी आजीजी से इन्हें रोकने की कोशिश करते हैं । शराब पीने को आने वाला जब वापिस लौट जाता है तब ऊपर लिखे नारे लगते हैं ।

यह दृश्य लुप्त होकर बम्बई में विलायती कपड़े का एक बहुत बड़ा ढेर दिख पड़ता है । महात्मा गान्धी जिन्होंने अब लँगोटी लगा ली है, अपने अनेक साथियों के साथ आते हैं, उस कपड़े के ढेर में आग लगाते हैं । आग की लपटें आकाश को छूती जान पड़ती हैं । आग लगते ही ऊपर लिखे नारे सुनायी देते हैं ।

यह दृश्य लुप्त होकर कलकत्ते के प्रेसीडेन्सी कालेज के विद्यार्थियों द्वारा बायकाट किये जाने पर हजारों विद्यार्थियों के जुलूस का दृश्य दिख पड़ता है । उसमें भी ऊपर लिखे नारे

लगाये जा रहे हैं।

यह दृश्य लुप्त होकर स्त्रियों की एक सभा का दृश्य दिखायी देता है, जिसमें गान्धीजी के माँगने पर स्त्रियाँ बड़े उत्साह से अपने आभूषण राष्ट्रीय कार्य के लिए उन्हें भेंट करती दिखायी देती हैं।

यह दृश्य लुप्त होकर मलाबार में मोपला विद्रोह के दृश्य दिखायी पड़ते हैं, जिनमें अधिकारियों द्वारा मोपलों को उत्तेजित करने और उसके बाद मोपलों के कुछ हिंसात्मक काण्ड दिखायी देते हैं।

यह दृश्य लुप्त होकर प्रिंस आफ वेल्स के आगमन पर कलकत्ते की पूरी और सफल हड़ताल का दृश्य दिखायी देता है। प्रिंस आफ वेल्स शाही ढंग से कलकत्ते की सड़क पर निकले हैं। सड़क की न एक दूकान खुली है और न कोई सवारी या व्यक्ति ही सड़क पर दिखायी देता है। कलकत्ते की आलीशान इमारतों के दिखते हुए भी जान पड़ता है कलकत्ता उजड़ गया है और एक आदमी भी वहाँ नहीं रह गया है।

यह दृश्य लुप्त होकर चौरी-चौरा का सामूहिक हिंसा का दृश्य दिखायी पड़ता है। पुलिस थाना जल रहा है अनेक पुलिस वाले जनता द्वारा पीटे और मारे जा रहे हैं।]

लघु यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान — बारडोली में गान्धीजी के झोंपड़े के सामने का चौगान

समय — सन्ध्या

[गान्धी जी सन्ध्या के प्रार्थना में एक तख्त पर बैठे हुए हैं। वे नीचे के शरीर पर घुटने तक लम्बा एक वस्त्र धारण किये हैं। उनका ऊपर का अङ्ग खुला हुआ है। तख्त के नीचे एक जन समुदाय इकट्ठा है। इसमें सरदार वल्लभभाई पटेल आदि प्रमुख रूप से दिख पड़ते हैं। सान्ध्य-प्रार्थना हो चुकी है और प्रार्थना के अनन्तर निम्नलिखित गीत गाया जा रहा है।]

गीत

वैष्णवजन तो तेने कहिए
जे पीड़ पराई जाणे रे
पर दुःखे उपकार करे तोये
मन अभिमान न आणे रे।
सकल लोक मां सहुने वंदे
निंदा न करे केनी रे,
वाच काछ मन निश्चल राखे
धन धन जननी तेनी रे।
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी
पर स्त्री जेने मात रे
जिह्वा थकी असत्य न बोले
पर धन नव झाले हाथ रे।

मोह माया व्यापे नहि जेने,
दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे
रामनाम शुं ताली लागी
सकळ तीरथ तेना तनमां रे।
वणलोभी ने कपट रहित छे
काम क्रोध निवार्या रे
भणे नरसैयो तेनुं दरसन करतां
कुळ एकोतेर तार्या रे।

[गीत पूर्ण होने पर रघुपति राघव राजाराम की रामधुन होती है।]

महात्मा (रामधुन समाप्त होने पर) बहनो और भाइयो! संयुक्त प्रान्त के गोरखपुर जिले में चौरीचौरा नामक एक गाँव है। आपने अब तक इस गाँव का नाम सुन लिया होगा और वहाँ हाल ही में जनता द्वारा जो हिंसा हुई है उसका हाल भी आपको मालूम हो गया होगा। चौरीचौरा का यह भयानक काण्ड इस बात का सबूत है कि कांग्रेस वालन्टियरों ने भी अब तक यह बात अच्छी तरह नहीं समझी कि यह सत्याग्रह या सिविल नाफरमानी के लिए अहिंसा एक जरूरी और [illegible] शर्त है। अगर इस हिंसा में कांग्रेसवाले शामिल न होते तो भी इसका [illegible] करना पड़ता पर इसमें कांग्रेस के लोग भी शामिल थे। चूँकि स्वयं सेवकों की भर्ती में बिना छानबीन किये ही और कांग्रेस की बनाई हुई हिदायतों के खिलाफ भी लोग ले लिये गये हैं जिससे यह जाहिर होता है कि सत्याग्रह के मूल

सत्य की समझ में कमी है। अपनी गलती को मंजूर करना उस झाड़ू के समान है जो गन्दगी साफ कर देता है और जिस जगह की गन्दगी साफ करता है वह जगह पहले से भी कहीं अधिक स्वच्छ हो जाती है। (कुछ रुककर) सारी परिस्थिति पर विचार कर आज कांग्रेस की कार्य कारिणी ने तय किया है कि हम बारडोली में होने वाले करबन्दी के सामूहिक सत्याग्रह को रोका जाय और कांग्रेस के अन्दरूनी संगठन को मजबूत बनाने के लिए रचनात्मक काम किया जाय। रचनात्मक कार्यों में (अपने बायें हाथ को ऊपर उठाकर उसके अंगूठे को अपने दाहने हाथ की दो उँगलियों के बीच में लेते हुए) पहला है अस्पृश्यता-निवारण (उसी तरह बायें हाथ की तर्जनी को दाहने हाथ की दो उँगलियों के बीच में लेते हुए) दूसरा है सूत-कताई (मध्यमा को उसी प्रकार लेते हुए) तीसरा है शराब-बन्दी (अनामिका को लेते हुए) चौथा है हिन्दू मुस्लिम एकता (कनिष्ठिका को लेते हुए) और पाँचवाँ है नारी का समान अधिकार। हाथ शरीर में कलाई से बँधा हुआ है कलाई है अहिंसा। ये पाँचों रचनात्मक काम अहिंसा के द्वारा हर शरीर को स्वतन्त्र करेंगे और तमाम शरीरों की स्वतन्त्रता हिन्दुस्तान को।

कुछ व्यक्ति धन्य है! धन्य है!

महात्मा अगर भारत को आजादी नहीं मिली तो सत्याग्रह जरूर होगा। सत्याग्रह के सम्बन्ध में मेरे विचारों में कोई फर्क नहीं पड़ा है। सत्य अहिंसा और सत्याग्रह के सम्बन्ध में

मेरा ज्ञान हर दिन बढ़ता रहा है और अभी भी बढ़ता जा रहा है। पर सत्याग्रह में हिस्सा लेने वाले ऐसे ही लोग होने चाहिएँ जो उसके उसूलों में विश्वास रखते हों। सत्याग्रह आन्दोलन उसमें भाग लेने वाले स्त्री पुरुषों की संख्या पर नहीं लेकिन उनके गुण और योग्यता पर निर्भर करता है। चरित्र की पूँजी के बिना सत्याग्रह नामुमकिन है। जिस कांग्रेस की तरफ से यह सत्याग्रह होने वाला था उसमें आज ऐसे व्यक्ति भी आ गये हैं जो सत्याग्रह के तत्त्वों को नहीं समझते। इसीलिए आज उसे रोकने के सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। मैं जानता हूँ सत्याग्रह को मुल्तवी करने के इस कदम से आपको और देश को बड़ी भारी निराशा होगी।

एक व्यक्ति बहुत बड़ी।

कुछ व्यक्ति (एक साथ) बहुत बड़ी बहुत बड़ी।

दूसरा व्यक्ति [illegible] हिन्दुस्तान की [illegible] बनने वाली थी।

तीसरा व्यक्ति हम सब इस सत्याग्रह के लिए पूरी तौर पर तैयार हैं।

कुछ व्यक्ति (एक साथ) पूरे तैयार पूरे तैयार।

महात्मा मैं जानता हूँ कि आप लोग आज तैयार हो, आगे भी तैयार हो पर मुल्क के सारे कांग्रेसवाले अभी तैयार नहीं हैं। अभी कांग्रेस के लोगों ने भी त्याग का पाठ नहीं सीखा है। [illegible] प्रकार का [illegible] है [illegible] पालन। आप [illegible] मौन धारण कर [illegible] जाना चाहिए।

इसलिए इस समय चाहे हमें कितना ही बुरा क्यों न लगे कितनी ही नाउम्मीदी क्यों न हो, इस सत्याग्रह को रोक, मौन धारण कर रामनाम लेते हुए रचनात्मक काम करना चाहिए। यही ईश्वर की इस समय इच्छा है। उसकी इच्छा के बिना एक घास का तिनका भी न पदा हो सकता है और न हिल सकता है। जीवन विभिन्न शक्तियों से शासित होता है। किसी कृति के लिए भी उन सब पर ध्यान रखना जरूरी है किसी एक ही व्यापक सिद्धान्त के अनुसार जीवन चलाया जा सकता तो बड़ी आसान बात होती। पर मुझे कोई भी तो ऐसी कृति नहीं दिखती जिसका निर्णय सरलता से किया जा सके क्योंकि जीवन प्राय एक दूसरे से विरोधी तत्त्वों और कर्त्तव्यों से भरा रहता है।

लघु यवनिका

पाँचवाँ दृश्य

स्थान अहमदाबाद के सर्किट हाउस का एक कमरा

समय बाहर

[कमरा अदालतों के कमरे के सदृश सजाया गया है। इस समय इस कमरे में केवल एक चपरासी इधर-उधर घूम रहा है। डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद और नरसिंह चिंतामणि केलकर का प्रवेश। राजेन्द्रप्रसादजी का चेहरा बहुत ही उतरा हुआ है।]

केलकर (दीवाल में लगी हुई घड़ी को देखकर) हम लोग कुछ जल्दी आ गये।

राजेन्द्रप्रसाद मुझसे रहा ही नहीं जा रहा था।

केलकर जितने उदास हैं आप लोगों के आँसू कठिनाई से रुक रहे हैं।

राजेन्द्रप्रसाद मेरा स्वभाव ही कुछ ऐसा है ऐसे मौका पर मैं अपने को रोक नहीं पाता।

केलकर गान्धीजी पर जिस तरह का राजद्रोह का मुकदमा चल रहा है उसी तरह का मुकदमा जब लोकमान्य पर चला था उस समय हम लोगों की भी यही दशा हुई थी।

[राजेन्द्रप्रसादजी दीर्घ निश्वास छोड़ते हैं और दोनों सिरिश्तेदार के सामने की बेंच पर बैठ जाते हैं।]

राजेन्द्रप्रसाद केलकर साहब, गान्धीजी पर यह मुकदमा हम लोगों की वजह से ही चल रहा है।

केलकर यह कैसे ?

राजेन्द्रप्रसाद दिल्ली का गत अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में जो बहस हुई उससे अंग्रेज सरकार को मालूम हो गया कि हम लोगों में आपस में फूट हो गयी है। गान्धीजी का अब वैसा अनुसरण नहीं रहा जैसा था। इसीलिए जिस सरकार की हिम्मत असहयोग आन्दोलन के समय [illegible] गान्धीजी पर हाथ डालने की नहीं होती थी उसी सरकार ने सत्याग्रह बन्द करने पर भी गान्धीजी को गिरफ्तार कर लिया। केलकर साहब, इस [illegible] में हम देश का सत्यानाश किया है।

उस फूट से अभी भी हम अपना पिंड नहीं छुड़ा पा रहे हैं। क्या कहूँ!

[केलकर राजेन्द्र बाबू के कथन का कुछ उत्तर दें इसके पहले ही कुछ लोग और आ जाते हैं। इन्हें देख केलकर चुप रह जाते हैं। बहुत जल्दी सारा कमरा लोगों से खचाखच भर जाता है। न्यायाधीश, उसके साथ असेसर और उसके सिरिश्तेदार आते हैं। सब अपने-अपने स्थानों पर बैठ जाते हैं। अब गान्धीजी और उनके साथ शंकरलाल बैंकर अभियुक्त की हैसियत से पुलिस द्वारा लाये जाते हैं। गान्धीजी उसी प्रकार नीचे के शरीर पर एक लँगोटी बाँधे हैं और उनका ऊपर का शरीर खुला है। उनके हाथ में एक लिपटा हुआ कागज है। शंकरलाल बैंकर खादी का कुरता-धोती पहने हैं और सिर पर गान्धी टोपी लगाये हैं। गान्धीजी के प्रवेश के समय कमरे में बैठे हुए सब लोग मय न्यायाधीश के एकदम खड़े हो जाते हैं। जब गान्धीजी और शंकरलाल बैठते हैं, उस समय न्यायाधीश और जो लोग बैठे हुए थे बैठ जाते हैं।]

न्यायाधीश (गान्धीजी से) आप जान ही चुके हैं कि आप पर राजद्रोह का यह मुकदमा आपके अखबार 'यंग इंडिया' में आपके द्वारा लिखे हुए 'राजभक्ति में दखल' 'समस्या और उसका हल' और 'गर्जन-तर्जन' तीन लेखों पर चलाया गया है। (शंकरलाल बैंकर से) आप 'यंग इंडिया' के प्रकाशक हैं इसलिए उस हैसियत से आप पर भी यह मुकदमा चला है। अब आप लोगों को जो कुछ कहना हो आप कह सकते हैं।

महात्मा : मैं अपना अपराध मंजूर करता हूँ।

शंकरलाल बैंकर : और मैं भी।

महात्मा : मुझे जो कुछ कहना है वह मैं लिखकर ले आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरा यह लिखित बयान इस मुकदमे की मिसल में रहे। इसके कुछ हिस्से मैं यहाँ पढ़ देता हूँ। (हाथ में लिये हुए कागज को पढ़ते हैं।) मुझ पर यह जो मुकदमा चलाया जा रहा है वह इंगलैण्ड की जनता को खुश करने के लिए है इसलिए मेरा यह कर्तव्य है कि मैं इंग्लैण्ड और भारत की जनता को यह बता दूँ कि मैं कट्टर सहयोगी से कैसा राजद्रोही और असहयोगी कैसे बन गया? मैं अदालत को भी बताना चाहता हूँ कि मैं इस सरकार के प्रति जो देश में कानूनन् कायम हुई है राजद्रोहपूर्ण आचरण करने के लिए अपने आपको दोषी क्या मानता हूँ? मेरे सार्वजनिक जीवन का आरम्भ सन् १८९३ ईस्वी में दक्षिण अफ्रिका में वहाँ की विषम परिस्थिति में हुआ। मुझे पता लगा कि मनुष्य और एक हिन्दुस्तानी के नाते वहाँ मेरा कोई अधिकार नहीं है। पर मैंने हिम्मत न हारी।

मैंने शुरू ही से वहाँ की सरकार के साथ सहयोग किया जब कभी मैंने सरकार में कोई दोष पाया तो मैंने उसकी खूब आलोचना की पर मैंने उसके विनाश की इच्छा कभी नहीं की। दक्षिण अफ्रिका में जब बोअरों की धमकी से सारे ब्रिटिश साम्राज्य को महान् विपत्ति में डाल दिया उस मौके पर मैंने उसे अपनी सेवाएँ भेंट

कीं। दक्षिण अफ्रिका में मैंने जो काम किया उसके लिए लार्ड हार्डिंग ने मुझे कैसरे-हिन्द पदक दिया। जब इंग्लैण्ड और जर्मनी में लड़ाई छिड़ी तो मैंने खेड़ा में रंगरूट भरती करते हुए अपनी तन्दुरुस्ती तक को जोखिम में डाला। इन सारे सेवा-कार्यों में मेरा एक मात्र यही विश्वास रहा कि इस तरह मैं साम्राज्य में अपने देशवासियों के लिए बराबरी का दर्जा हासिल कर सकूंगा। पहला धक्का मुझे रौलट एक्ट ने दिया। इसके बाद पंजाब के भीषण काण्ड का नम्बर आया।

मुझे यह भी पता लग गया कि प्रधान मन्त्री ने भारत के मुसलमानों को जो आश्वासन दिया कि टर्की और इस्लाम के तीर्थ-स्थानों की पवित्रता बदस्तूर रक्खी जायगी वह कोरा आश्वासन ही रहेगा। मेरी सारी उम्मीदें धूल में मिल गयीं। इधर अधपेट भूखे रहने वाले भारतवासी धीरे धीरे निर्जीव होते जा रहे हैं। सबसे बड़े दुर्भाग्य की बात यह है कि जिन अंग्रेजों और उनके हिन्दुस्तानी सहयोगियों के जिम्मे इस देश की हुकूमत है वे खुद नहीं जानते कि मैंने जिस अपराध का वर्णन किया है उसमें उनका हाथ है।

जिस एक-सौ-चौबीस ए धारा के मुताबिक मुझ पर मुकदमा चलाया जा रहा है वह नागरिकों की आजादी का अपहरण करने में ताजीरात हिन्द की धारा में सिरताज है। प्रेम न तो पैदा किया जा सकता है न कायदे कानून के मातहत रह सकता है। अगर किसी के

दिल में किसी दूसरे के लिए प्रेम-भाव न हो तो जब तक वह हिंसापूर्ण काम या विचार या प्रेरणा न करे तब तक उसे अपने अप्रीति के भाव जाहिर करने का पूरा हक होना चाहिए। पर श्रीयुत बैंकर पर और मुझ पर जिस धारा का प्रयोग किया गया है उसके अनुसार अप्रीति फैलाना अपराध है। इस धारा के अन्तर्गत चलाये गये कुछ मामलों का मैंने अध्ययन किया है और मैं जानता हूँ कि इस धारा के अनुसार देश के कई परम-प्रिय देशभक्तों को सजा दी गयी है। इसलिए मुझ पर जो इस धारा के मुताबिक मामला चलाया गया है उसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। वास्तव में मेरा विश्वास तो यह है कि भारत और ब्रिटेन जिस गैर कुदरती तौर से रह रहे हैं, मैंने असहयोग के द्वारा उससे उद्धार पाने का रास्ता बताकर दोनों की एक खिदमत की है। मेरी राय में जिस तरह भलाई में सहयोग करना फर्ज है उसी तरह बुराई में असहयोग करना भी कर्तव्य है। इससे पहले बुराई करने वाले को नुकसान पहुँचाने के लिए असहयोग को हिंसात्मक ढंग से किया जाता रहा है। पर मैं अपने देशवासियों को यह बताने की कोशिश कर रहा हूँ कि हिंसा बुराई को कायम रखती है इसलिए बुराई की जड़ काटने को यह जरूरी है कि हिंसा से बिलकुल अलग रहें। अहिंसा का मतलब यह भी है कि बुराई से असहयोग करने के लिए जो कुछ भी सजा मिले उसे मंजूर करें। इसलिए मैं यहाँ उस काम के लिए जो कानून

की निगाह में जान-बूझकर किया गया अपराध है और जो मेरी निगाह में किसी नागरिक का सबसे बड़ा कर्तव्य है सबसे बड़ा दण्ड चाहता हूँ, और उसे खुशी ग्रहण करने को तयार हूँ। जज और असेसरों के सामने सिर्फ दो ही रास्ते हैं। अगर आप लोग दिल से समझते हैं कि जिस कानून का प्रयोग करने के लिए आपसे कहा गया है वह बुरा है और मैं बेकसूर हूँ तो आप लोग अपने-अपने पदों से स्तीफा दे दें और बुराई से अपना सम्बन्ध अलग करलें। अथवा आपका यही विश्वास हो कि जिस कानून का प्रयोग करने में आप मदद दे रहे हैं वह वास्तव में इस मुल्क की जनता के भले के लिए है और मेरा आचरण लोगों के अहित के लिए तो मुझे बड़ी-से-बड़ी सजा दें।

[महात्मा गान्धी चुप हो जाते हैं। सारे कमरे में एक विचित्र प्रकार की निस्तब्धता छा जाती है। न्यायाधीश सिर झुकाकर कुछ लिखने लगता है। उसका सिर उसकी टेबिल पर घुस-सा जाता है। कुछ देर बाद वह उसी तरह सिर झुकाये हुए ही बोलता है।]

न्यायाधीश अभियुक्तों के अभियोग को मंजूर कर लेने से मेरा काम एक तरह से तो हलका हो गया है पर दूसरी तरह से जो काम बाकी रह गया है अर्थात् सजा देने का वह काम बहुत ही मुश्किल हो गया है। गान्धीजी को उनके बेशुमार देशवासी पूज्य मानते हैं मुझे किसी ऐसे आदमी के मुकद्दमे के देखने-सुनने का मौका कभी नहीं

मिला है और शायद मिलेगा भी नहीं। जज को सिर्फ कानून के मुताबिक काम करने का ही अधिकार है। कानून एक मनुष्य और दूसरे मनुष्य में व्यक्तित्व की वजह से कोई भेद नहीं करता इसलिए मुझे दोनों अभियुक्तों को सजा तो देनी पड़ेगी ही। गान्धीजी का स्थान लोकमान्य तिलक जैसा ही है। जो सजा उनको ऐसी ही परिस्थिति में मिली थी वही अर्थात् छः साल की कैद की सजा गान्धीजी को देना मुनासिब होगा। श्री शंकरलाल बैंकर को एक साल की सजा काफी होगी और एक हजार रुपया जुर्माना। जुर्माना न देने पर छः महीने और।

महात्मा — मेरी यह बड़ी खुशकिस्मती है कि मुझे लोकमान्य तिलक के समकक्ष माना गया। न्यायाधीश महोदय आपने सजा देने के मामले में जिस विचारशीलता से काम लिया और जो शिष्टता दिखायी उसके लिए मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

[न्यायाधीश उठकर जाता है। गान्धीजी और शंकरलाल खड़े होते हैं। गान्धीजी राजेन्द्र बाबू को हृदय से लगाते हैं। राजेन्द्र बाबू रो पड़ते हैं। अनेक व्यक्तियों की आँखों से अश्रु धारा बह निकलती है। अनेक व्यक्ति गान्धीजी के पैरों में गिर पड़ते हैं। एक महान् कारुणिक दृश्य।]

यवनिका

चौथा अङ्क

पहला दृश्य

स्थान : लाहौर में कांग्रेस अधिवेशन का पंडाल

समय : सन्ध्या

[कांग्रेस अधिवेशन के इस पंडाल का थोड़ा-सा हिस्सा दृष्टिगोचर होता है। पीछे की ओर मंच का कुछ भाग दिखता है जिसके एक ओर वक्ताओं के बोलने के स्थान पर लाउडस्पीकर लगे हैं। मंच के नीचे बैठे हुए जनसमुदाय का कुछ भाग दीख पड़ता है। नागपुर के कांग्रेस अधिवेशन के पंडाल के सदृश इस पंडाल में कुर्सियाँ नहीं हैं। यह जन समुदाय भूमि पर बिछी हुई बिछायत पर बैठा है। मंच का जो भाग दीख पड़ता है, वह इस समय खाली है। इस भाग में बैठने के लिए गद्दी-तकिये लगे हुए हैं। जनसमुदाय में बातचीत चल रही है, जिसकी वजह से पंडाल में कुछ हल्ला-सा मचा हुआ है। अधिकतर वार्तालाप तो समझ में नहीं आता, पर बीच-बीच में जब कुछ लोग जोर से बोलते हैं तब आम आदमी चुप हो जाते हैं और इस जोर से बात करने वालों की बातें सुन पड़ने लगती हैं।]

एक व्यक्ति : मैं कहता हूँ कि सन् १९२० के नागपुर में कांग्रेस

अधिवेशन के बाद कांग्रेस का वह ऊँचा स्तर नागपुर के अधिवेशन के बाद ही जो अधिवेशन अहमदाबाद में हुआ उस भर में रहा ।

दूसरा — हाँ, अहमदाबाद के अधिवेशन के बाद गया में जो अधिवेशन हुआ वह भी स्तर का गिरना ही बताता था ।

तीसरा — मैं भी मानता हूँ । फिर गया के बाद तो यह स्तर और भी गिर गया ।

चौथा — यहाँ तक हुआ कि जो अधिवेशन बेलगाँव में महात्माजी के सभापतित्व में हुआ, उस तक में कोई जान नहीं थी ।

पाँचवाँ — इस सबकी जिम्मेदारी देशबन्धु दास और प० मोतीलाल नेहरू पर है । उन्होंने बिना स्वराज्य मिले ही स्वराज्य पार्टी बना कौंसिल में जाने का आन्दोलन छेड़ दिया ।

छठवाँ — जिन कौंसिलों का सन् २० में बायकाट किया था उन्हीं कौंसिलों में ।

सातवाँ — पर भाई मेरी तो इस मामले में राय ही दूसरी है ।

कुछ लोग — (एक साथ) क्या ?

सातवाँ — कोई भी क्रान्ति हो चाहे हथियारों वाली अथवा सत्याग्रह के मानिन्द अहिंसात्मक वह हमेशा नहीं चल सकती । कौंसिल प्रवेश ने असहयोग की असफलता को एक तरह से ढाँक दिया ।

आठवाँ — परन्तु

[फिर हल्ला होने के कारण कुछ नहीं सुन पड़ता । कुछ देर बाद फिर सुनायी देता है ।]

एक　कौंसिल का मोर्चा असफल रहा इसे देशबन्धु तो अब हैं नहीं कि वे भी मान सके, पर पं० मोतीलाल नेहरू मान गये हैं।

दूसरा　तुम्हें विश्वास है कि मोतीलालजी और स्वराजी अब इन कौंसिलों से स्तीफा दे देंगे ?

पहला　मुझे इसमें थोड़ा भी शक नहीं है।

तीसरा　पर देखो मेरी तो स्वतन्त्रता के आन्दोलन के सभी पहलुओं के बाबत में यह राय है कि वे असफल होते ही नहीं। न इस दिशा में असहयोग के पहले के काम असफल हुए, न असहयोग आन्दोलन और न कौंसिल मोर्चा। हम बराबर स्वराज्य की तरफ आगे बढ़ते जा रहे हैं।

चौथा　यह तो मैं भी मानता हूँ। लेकिन

[फिर हल्ले में कुछ सुनायी नहीं देता। कुछ देर बाद सुन पड़ता है।]

एक　तो आज रात को बारह बजे डूमेनियन स्टेट्स हमेशा के लिए दफना दिया जायगा ?

दूसरा　या यह कहो कि रावी में बहा दिया जायगा।

तीसरा　हाँ दफना देने के बनिस्पत बहा देना ज्यादा ठीक है।

चौथा　यह क्यों ?

तीसरा　इसलिए कि दफनायी हुई चीज फिर खोदकर निकाली जा सकती है। इंग्लैण्ड में जब वहाँ की जनता क्रामवेल से नाराज हुई तब उसकी हड्डियाँ उसकी कब्र से खोदकर निकाली गयीं और उसका सार्वजनिक अपमान किया गया। इसी तरह यहाँ इसमें उल्टी बात

होकर यहाँ की जनता कभी डुमेनियन स्टेटस से मुक्त हुई तो वह फिर खोदकर निकाला जा सकता है पर रावी में बहायी हुई चीज का पता न लगेगा ।

[कुछ लोगों की हँसी ।]

चौथा इस तरह डुमेनियन स्टेटस को खत्म कर आज रात को बारह बजे हम पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा कर देंगे ।

[फिर से हल्ले में कुछ सुनायी नहीं देता । कुछ देर बाद सुन पड़ता है ।]

एक साइमन कमीशन आया हमने उसका सफल बायकाट किया । इस कमीशन की रिपोर्ट आयी उसे हमने मंजूर नहीं किया । नेहरू कमेटी बनी उसकी रिपोर्ट को मंजूर करने के लिए हमने सरकार को एक साल का समय दिया उस सरकार ने मंजूर नहीं किया । अब हम सन् १९३० में १९२० के असहयोग आन्दोलन के मानिन्द ही कौंसिलों के बायकाट आन्दोलन से शुरू करके फिर से एक नया आन्दोलन चलाना चाहते हैं पर इस आन्दोलन का रूप क्या होगा ?

दूसरा यह सब तय करेंगे वे ही महात्मा जिन्होंने असहयोग आन्दोलन का रूप तय किया था और जो कुछ समय से तटस्थ होकर बैठे रहे थे साबरमती के किनारे ।

तीसरा और उस बार जिसको चुनेंगे ।

चौथा इसीलिए तो कांग्रेस के लाहौर के इस अधिवेशन के सभापति इस देश के सबसे बड़े हृदय-सम्राट् पं० जवाहर-लाल नेहरू चुने गये हैं ।

पाँचवाँ - भाई चुने तो वे नहीं गये थे चुने तो गये थे महात्मा

गान्धी। और उनके बाद बारदोली सत्याग्रह के यशस्वी सेनानी सरदार वल्लभभाई पटेल। गान्धीजी को दस प्रान्तों ने वोट दिये थे सरदार को पाँच ने। जवाहरलाल जी को तो सिर्फ तीन प्रान्तों के वोट मिले थे। पर महात्मा गान्धी हैं दूरदर्शी आगे आन्दोलन के लिए जिन नौजवानों की जरूरत है वे उन्हें मिल सकते थे जवाहरलाल के सभापति होने से ही।

छठवाँ　हाँ कितना ज़ोर डाला गया गान्धीजी पर इस अधिवेशन का सभापति होने के लिए। पर वे अपने निश्चय पर पहाड़ के मानिंद अचल रहे और जब उन्होंने अपना नाम हटाकर जवाहरलालजी का नाम प्रस्तावित किया तब सरदार कैसे खड़े रह सकते थे उन्होंने भी अपना नाम वापिस ले लिया।

सातवाँ　सचमुच विचित्र व्यक्ति है, यह गान्धी।

आठवाँ　हाँ कौन इतनी दूर तक देखता है ?

नवाँ　वे हमारे भारतीय ऋषि मुनियों के समान त्रिकालज्ञ हो गये हैं।

दसवाँ　यह दिव्य-दृष्टि कर्म तथा विचार और चरित्र की शुद्धता तथा पवित्रता से ही मिल सकती है।

ग्यारहवाँ　और ऐसे विचार ऐसे कर्म ऐसे चरित्र से जिसमें किसी तरह की भी खुदगर्जी का सम्बन्ध न हो।

बारहवाँ　जन-कल्याण ही उनके दिवस की चिन्ता और रात्रि का स्वप्न है।

तेरहवाँ　पर सबका कल्याण चाहे वे विपक्षी ही क्यों

न हों !

चौदहवाँ — हाँ, महात्मा गान्धी भारतवासियों के कल्याण के जितने इच्छुक हैं, अंग्रेजों के कल्याण के उससे कम नहीं।

[फिर से हल्ला होता है और कुछ सुनायी नहीं देता। कुछ देर बाद सुन पड़ता है।]

एक — हाँ, मैं कहता हूँ गान्धीजी ने मिट्टी के पुतलों को बड़े से बड़े वीर और योद्धा बनाया है।

दूसरा — हाँ, कहीं-कहीं से भिन्न-भिन्न को निकाला है।

तीसरा — इस देश में तो किसी ने भारतवासियों का ऐसा निर्माण नहीं किया।

चौथा — इस मुल्क में क्या तमाम दुनियाँ में शायद ही किसी ने आदमियों का समाज में ऐसी कामयाबी हासिल की हो।

[फिर हल्ला होता है और कुछ सुनायी नहीं देता। कुछ देर बाद सुन पड़ता है।]

एक — हमारे सन् ३० का यह आन्दोलन वहीं से शुरू होगा जहाँ सन् २० का असहयोग आन्दोलन खत्म हुआ था।

दूसरा — हाँ, असहयोग के बाद सत्याग्रह आना ही चाहिए।

[अब मण्डप में वाद्य-ध्वनि सुन पड़ती है और उसी के साथ "महात्मा गान्धी की जय", "भारत माता की जय", "इन्कलाब जिन्दाबाद", "साम्राज्यवाद का नाश हो" आदि नारे। कुछ ही देर में पं० जवाहरलाल नेहरू, डाक्टर किचलू, पं० मोतीलाल नेहरू, महात्मा गान्धी, पं० मदनमोहन मालवीय, डाक्टर अन्सारी, सुभाषचन्द्र बोस, सेन गुप्ता, सरदार वल्लभभाई पटेल, मौलाना अबुलकलाम आज़ाद, श्री राजगोपालाचार्य, सेठ जमनालाल

बजाज, कस्तूरबा गान्धी, स्वरूपरानी नेहरू, कमला नेहरू, विजयलक्ष्मी पण्डित, कृष्णा नेहरू, सरोजिनी नाइडू, कमलादेवी चट्टोपाध्याय आदि का प्रवेश। ये लोग मंच पर बठते हैं। इनके बठने के बाद कुछ स्त्रियाँ भाषण देने की जगह पर आती हैं और वन्देमातरम् का गीत आरम्भ करती हैं। गीत आरम्भ होते ही मंच पर बठे हुए तथा मंच के नीचे बठे हुए सब लोग खड़े हो जाते हैं।]

दूसरा दृश्य

स्थान : साबरमती आश्रम के बाहर का मैदान

समय : प्रातःकाल

[गांधीजी प्रातःकाल की प्रार्थना में आसन पर बैठे हुए हैं। वेशभूषा सदा के समान। सामने नीचे साबरमती आश्रम के निवासी हैं। प्रार्थना हो चुकी है। प्रार्थना के पश्चात् निम्नलिखित गीत गाया जा रहा है।]

गीत

सुने री मैंने निर्बल के बल राम।
पिछली साख भरूँ संतन की आड़ सँवारे काम॥
जब लग गज बल अपनो बरत्यो नेक सरो नहिं काम।
निर्बल ह्वै बलराम पुकार्यो आये आधे नाम॥
द्रुपद-सुता निर्बल भई ता दिन गहलाये निज धाम।
दुःशासन की भुजा थकित भई वसन रूप भये श्याम॥
अप-बल तप-बल और बाहु-बल चौथो है बल दाम।
सूर किशोर कृपा तें सब बल हारे को हरिनाम॥

[गीत पूर्ण होने पर रघुपति राघव राजाराम की रामधुन होती है।]

महात्मा : (रामधुन समाप्त होने पर) आश्रम-निवासियो ! आज हम प्राणों की बाजी लगाकर इस युद्ध को आरम्भ करने के लिए सत्याग्रह का पहला कूच करेंगे। आप जानते हैं यह सत्याग्रह नमक कानून को तोड़कर किया जायगा और नमक कानून तोड़ा जायगा डांडी नामक गाँव में, जो

साबरमती से लगभग दो-सौ मील दक्खिन में समुद्र के किनारे है। गत दिसम्बर में लाहौर में जब कांग्रेस का अधिवेशन हुआ और उसमें मुकम्मिल आजादी का प्रस्ताव पास किया गया उस वक्त मैं नहीं जानता था कि यह पूर्ण स्वतन्त्रता किस तरह के सत्याग्रह से हासिल होगी। इन्हीं तक इस अँधेरे में मुझे रोशनी की कोई किरण नहीं दिखायी दी। कांग्रेस के इस अधिवेशन के बाद रवीन्द्र बाबू जिन्हें मैं सबसे अधिक इज्जत की नजर से देखता हूँ साबरमती आश्रम में पधारे और उन्होंने मुझसे पूछा कि अब मैं क्या करने वाला हूँ। लेकिन उस वक्त मैंने यही जवाब दिया कि मुझे अभी तो कहीं भी रोशनी दिखायी नहीं देती। यकायक मुझे प्रकाश की किरण के दर्शन हुए। मुझे अन्तःप्रेरणा मिली नमक कानून को तोड़ने की। आप जानते हैं मैं बातों को तर्क के आसरे से तय नहीं करता।

एक व्यक्ति कभी नहीं।

दूसरा तर्क भावना-हीन होता है।

तीसरा तर्क हानि-लाभ दर्शक होता है।

महात्मा तर्क के आसरे से कोई बड़ा सत्कार्य किया ही नहीं जा सकता। उसके लिए तो श्रद्धा की जरूरत होती है। इस श्रद्धा की जगह है शुद्ध अन्तःकरण। दुनियाँ के बड़े-बड़े काम इस श्रद्धा के विश्वास से ही कराये हैं।

कुछ व्यक्ति : (एक साथ) महात्मा गान्धी की जय!

महात्मा मैंने सविनय अवज्ञा के लिए जो नमक कानून चुना

इसे कुछ भाइयों ने अनूठा कहा है और कुछ ने खतरनाक। मेरे नजदीकी राजनीतिज्ञ सब का इस बात में शक है कि नमक कानून के मामूली कानून को तोड़ने से ऐसी छोटी-सी बात करने से स्वराज्य कैसे मिलेगा? पर जो कुछ मैं कर रहा हूँ उसमें मुझे विश्वास है, अटल विश्वास।

कुछ व्यक्ति — महात्मा गान्धी की जय!

महात्मा — कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के पहले तक मैं तो अंग्रेज सरकार को सहयोग देने के लिए मर रहा था। मुझे औपनिवेशिक-स्वराज्य मिल जाता तो भी सन्तोष हो जाता क्योंकि जरूरत इस बात की है कि हृदय-परिवर्तन हो। औपनिवेशिक स्वराज्य की मेरी कल्पना यह थी कि जब चाहे तब मैं ब्रिटिश-सम्बन्ध छोड़ सकूँ। ब्रिटेन और भारत के आपसी ताल्लुकात के तय करने में जबर्दस्ती अभी कोई बात नहीं चल सकती।

एक व्यक्ति — कदापि नहीं।

कुछ व्यक्ति — (एक साथ) कदापि नहीं, कदापि नहीं।

महात्मा — लाहौर कांग्रेस के मुकम्मिल आजादी के प्रस्ताव के बाद और सविनय अवज्ञा शुरू करने से पहले मैंने फिर वाइसराय को खत लिखा और उसे उन्हीं के एक देशवासी रेजिनाल्ड रेनाल्ड्स के हाथ उनके पास भेजा। उस पत्र में मैंने उनसे ग्यारह बातों की माँग की थी। उन ग्यारह बातों में नमक-कर भी था। गरीब जनता का शोषण था पर राजप्रतिनिधि ने मुझे उस चिट्ठी का जवाब तक देने की मेहरबानी।

नहीं की। वे मुझसे मिले भी नहीं। उनके सेक्रेटरी साहब का चार लाइन का एक छोटा-सा जवाब आया। मैं घुटने टेककर रोटी माँगने गया था और मुझे मिला पत्थर!

एक व्यक्ति — खेद की बात है।

कुछ व्यक्ति — (एक साथ) अत्यन्त खेद की! अत्यन्त खेद की।

महात्मा — तब मेरे पास सविनय अवज्ञा शुरू करने के सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं था। पर अहिंसा पर मेरा अडिग विश्वास है। जान-बूझकर मैं किसी प्राणी को दुःख नहीं पहुँचा सकता, मनुष्यों को तो दुःख पहुँचाने की बात ही नहीं। इसलिए जहाँ मैं ब्रिटिश राज्य को इस देश के लिए अभिशाप समझता हूँ वहाँ मैं एक भी अंग्रेज को या भारत में उनके किसी भी मुनासिब स्वार्थ को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता। मेरी देशभक्ति संकीर्ण नहीं है। यह किसी दूसरे देश या राष्ट्र को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहती। हिन्दुस्तान की आज़ादी से दुनिया का नुकसान न होकर फ़ायदा होने वाला है।

कुछ व्यक्ति — महात्मा गान्धी की जय!

महात्मा — और आज़ादी मैं हासिल करना चाहता हूँ अहिंसा सिर्फ अहिंसा से। इसीलिए कांग्रेस की कार्य-समिति ने यह फ़ैसला किया है कि सत्याग्रह का यह आन्दोलन उन्हीं लोगों के द्वारा शुरू और संचालित होना चाहिए जिनका पूर्ण स्वराज्य हासिल करने के लिए अहिंसा में धार्मिक विश्वास हो। और चूँकि कांग्रेस-संगठन में सब ऐसे ही स्त्री-पुरुष नहीं हैं बल्कि कुछ लोग भी शामिल हैं जो अहिंसा को मुल्क की वर्तमान स्थिति में सिर्फ नीति के तौर पर मानते हैं,

इसलिए आश्रम की कार्य-समिति ने मुझे अधिकार दिया है कि उन्हीं लोगों को साथ लेकर इस आन्दोलन का शुरू करूँ जिन्हें अहिंसा में धार्मिक विश्वास हो। मैं चाहता हूँ भारत में एक अहिंसक असहयोगी और सत्याग्रही हो जिसके लिए लिखा जाय कि उन्होंने गालियों को बिना क्रोध के सहा या गोली मारने वालों के लिए प्रार्थना करते हुए और उन शत्रुओं को भी उन्हें अज्ञानी मान माफ करते हुए। इसके लिए मैंने आप उत्साही साथियों को चुना है।

एक व्यक्ति : हम सौभाग्यशाली हैं।

शेष समस्त जन : (एक साथ) महान् सौभाग्यशाली परम सौभाग्यशाली।

महात्मा : अब तक इस आश्रम को मैंने इसीलिए रक्खा था कि सत्य तथा तप अनुशासन की आग में इसे तपाया जाय। मुझे लगता है कि लोगों ने आश्रम पर जो विश्वास रक्खा है और मित्रों ने उस पर जो प्रेम बरसाया है उसका असर पड़ा है तो आश्रम के लिए अब सत्याग्रह-संग्राम में निश्चिन्त गुणों का सुन्दर रूप का पता पा गया है। अगर जीवन के अन्त तक भी आश्रम यह जौहर न दिखा सका तो आश्रम के और मेरे लिए ज्ञान न होगा। राष्ट्र की, मेरी और आश्रम की भलाई होगी। इसलिए मैं इस आश्रम का त्याग करता हूँ और प्रतिज्ञा करता हूँ कि स्वराज्य मिलने तक इस आश्रम को लौटूँगा नहीं। प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहना ही सच्चा धर्म है।

कुछ व्यक्ति : महात्मा गांधी की जय!

महात्मा अगर मैं गिरफ्तार हो जाऊँ तो क्या किया जाना चाहिए, यह मैंने 'यंग इंडिया' में लिख दिया है। सत्याग्रह की शुरूआत जब ठीक ढंग से हो चुकेगी तब मुझे उम्मीद है कि देश के कोने-कोने से सहयोग मिलेगा। आन्दोलन की कामयाबी के लिए इच्छा रखने वाले हरेक व्यक्ति का धर्म होगा कि वह इस आन्दोलन को अहिंसात्मक और नियन्त्रित बनाये रखे। इस आन्दोलन का आरम्भ एक गाँव से इसलिए हो रहा है कि भारत में सौ में से अस्सी आदमी गाँवों में रहते हैं। गाँव ही सच्चा भारत है।

उपस्थित व्यक्ति भारत माता की जय!

महात्मा हमें मनसा वाचा कर्मणा अहिंसक रह ईश्वर में विश्वास रख अपना काम शुरू करना है। ईश्वर और सत्य में कोई फर्क नहीं। ईश्वर सत्य है और सत्य ईश्वर। सत्य के दर्शन बगैर अहिंसा के हो ही नहीं सकते। अहिंसा ही साध्य और साधन है। हम प्राणों की बाजी लगा रहे हैं ईश्वर हमें शक्ति दे।

[महात्मा गान्धी खड़े होते हैं और पास में रखे हुए एक ऊँचे से डण्डे को दाहने हाथ में उठा लेते हैं। वे रवाना होते हैं और उनके पीछे जयघोष के गगनभेदी नारों के साथ उनके साथी।]

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—एक सफ़ेद चादर

समय—प्रातःकाल से लेकर रात्रि तक अनेक दिन

[सफ़ेद चादर पर नीचे लिखे दृश्य दिखायी देते हैं, अनेक बार नारे भी सुन पड़ते हैं और गीत भी। पहले दृश्य में सफ़ेद खादी के वस्त्र पहने हुए कुछ युवक और केसरी साड़ी पहने हुए कुछ युवतियाँ निम्नलिखित गीत गाते हुए एक गाँव से गान्धीजी का स्वागत करने के लिए कांग्रेस के तिरंगे झण्डों के साथ निकल रहे हैं। इस झण्डे के अब तीन रंग केसरी, सफ़ेद और हरे हो गये हैं।]

गीत

ज़िन्दगी है शान्तिमय शान्ति में बिताये जा।
गान्धी से प्राप्त मन्त्र वीर जवाहर त्याग यन्त्र
आत्मसाम्य की आवाज़ देश में फैलाये जा।
गूँजा अभी दुन्दुभी जाग जाय कायर भी
धमनियों में रक्त की धारायें बहाये जा।
ज़िन्दगी है एक गान शान्ति उसमें है चिराग
उस चिराग जितना हो जग सब जगाये जा।
ज़िन्दगी हम पर तमाम मगर कौन मरता है मगर
फिर भी तू आज़ाद बाग़ चमन का बनाये जा।
ज़िन्दगी है एक जुआ डर न हारना है क्या
आगे बढ़कर अपना जान दाँव पर लगाये जा।

[गीत के बीच-बीच में निम्नलिखित नारे भी लगाये जा रहे हैं।]

महात्मा गान्धी की जय !
भारत माता की जय !
युग-युग जियो बापू !
इन्कलाब जिन्दाबाद !
साम्राज्यवाद का नाश हो !
भारत आजाद हो !

[अब गान्धीजी अपने साथियों के साथ आते हुए दिखायी देते हैं। यह समूह पुष्पों की वर्षा कर गान्धीजी का स्वागत करता है। उत्साह चरम सीमा को पहुँच जाता है।

यह दृश्य लुप्त होकर गान्धीजी के डाण्डी गाँव की ओर कूच के अनेक अद्भुत दृश्य दिखायी देते हैं।

ये दृश्य लुप्त होकर डाण्डी के समुद्र-तट पर गान्धीजी नमक बटोर रहे हैं यह दृश्य दिख पड़ता है।

यह दृश्य लुप्त होकर गान्धीजी की गिरफ्तारी का दृश्य दिखायी देता है।

यह दृश्य लुप्त होकर देश में अनेक स्थानों के नमक कानून तोड़े जाने के दृश्य दिखायी देते हैं। इन दृश्यों में कई जगह स्वाभाविक नमक के स्थान पर कृत्रिम ढंग से नमक बनाये जाने के दृश्य भी दिख पड़ते हैं।

ये दृश्य लुप्त होकर धरसना में नमक के कारखानों पर के धावे के कुछ दृश्य दिखायी देते हैं और उस वक्त पुलिस द्वारा लाठी-चार्ज और गोलाबारी के दृश्य दिख पड़ते हैं।

ये दृश्य लुप्त होकर पेशावर में गोलाबारी के दृश्य दिख पड़ते हैं।

ये दृश्य लुप्त होकर मध्य प्रदेश में जंगल सत्याग्रह के दृश्य दिखायी देते हैं, यहाँ भी सरकारी दमन, लाठी-चार्ज और गोलाबारी के रूप में दिख पड़ता है।

सभी दृश्यों में अत्यधिक गति है, उत्साह है। सारे दृश्य जोर-जोर के नारों से मुखरित हैं। सरकारी दमन बड़ी क्रूरता से होता है। अतः अनेक स्थलों पर वीर रस की चरम सीमा में कभी भयानक रस और कभी करुण रस की पराकाष्ठा मिल जाती है।]

लघु यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान : लन्दन के गोलमेज परिषद् का हाल

समय : मध्याह्न के पश्चात

[इस हाल का कुछ हिस्सा ही दिख पड़ता है। इस हाल तथा इसमें गोलमेज परिषद् की बैठक जिस समय हुई उसकी सजावट के इतने चित्र प्रकाशित हो चुके हैं कि उसके वर्णन की जरूरत नहीं। जिस वक्त दृश्य खुलता है, उस समय इस हाल में कोई नहीं है। दृश्य खुलते ही श्रीमती सरोजनी नाइडू, श्री महादेव भाई देसाई, श्री देवदास गान्धी, श्री प्यारेलाल और मीरा बहन का प्रवेश।]

[गीत के बीच-बीच में निम्नलिखित नारे भी लगाये जा रहे हैं।]

महात्मा गांधी की जय !
भारत माता की जय !
युग-युग जियो बापू !
इन्कलाब जिन्दाबाद !
साम्राज्यवाद का नाश हो !
भारत आजाद हो !

[अब गान्धीजी अपने साथियों के साथ आते हुए दिखायी देते हैं। यह समूह पुष्पों की वर्षा कर गान्धीजी का स्वागत करता है। उत्साह चरम सीमा को पहुँच जाता है।

यह दृश्य लुप्त होकर गान्धीजी के डाण्डी गाँव की ओर कूच के अनेक अद्भुत दृश्य दिखायी देते हैं।

ये दृश्य लुप्त होकर डाण्डी के समुद्र-तट पर गान्धीजी नमक बटोर रहे हैं, यह दृश्य दिख पड़ता है।

यह दृश्य लुप्त होकर गान्धीजी की गिरफ्तारी का दृश्य दिखायी देता है।

यह दृश्य लुप्त होकर देश में अनेक स्थानों के नमक कानून तोड़े जाने के दृश्य दिखायी देते हैं। इन दृश्यों में कई जगह स्वाभाविक नमक के स्थान पर कृत्रिम ढंग से नमक बनाये जाने के दृश्य भी दिख पड़ते हैं।

ये दृश्य लुप्त होकर धरसना में नमक के कारखानों पर के धावे के कुछ दृश्य दिखायी देते हैं और उस वक्त पुलिस द्वारा लाठी-चार्ज और गोलाबारी के दृश्य दिख पड़ते हैं।

ये दृश्य लुप्त होकर पेशावर में गोलाबारी के दृश्य दिख पड़ते हैं।

ये दृश्य लुप्त होकर मध्य प्रदेश में जंगल सत्याग्रह के दृश्य दिखायी देते हैं यहाँ भी सरकारी दमन, लाठी-चार्ज और गोलाबारी के रूप में दिख पड़ता है।

सभी दृश्यों में अत्यधिक गति है, उत्साह है। सारे दृश्य जोर-जोर के नारों से मुखरित हैं। सरकारी दमन बड़ी क्रूरता से होता है। अतः अनेक स्थलों पर वीर रस की चरम सीमा में कभी भयानक रस और कभी करुण रस की पराकाष्ठा मिल जाती है।]

लघु यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान – लन्दन में गोलमेज परिषद् का हाल

समय – मध्याह्न के पश्चात

[इस हाल का कुछ हिस्सा ही दिख पड़ता है। इस हाल तथा इसमें गोलमेज परिषद् की बैठक जिस समय हुई उसके सब पर के इतने चित्र प्रकाशित हो चुके हैं कि उनके वर्णन की जरूरत नहीं। जिस भाग का दृश्य खुलता है, उस समय इस हाल में कोई नहीं है। दृश्य खुलने पर श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्री महादेव भाई देसाई, श्री घनश्याम दास, श्री प्यारेलाल और मीरा बहन का प्रवेश।]

सरोजनी नाइडू सत्याग्रह के बाद गान्धी अरविन-पेक्ट के जरिये चाहे भारत को स्वाधीनता न मिली हो लेकिन हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि की हैसियत से गान्धीजी और ब्रिटिश गवर्नमेंट के नुमाइन्दे की हैसियत से लार्ड अरविन का बराबरी के दर्जे से बैठकर एक समझौते पर दस्तखत करना अंग्रेजी हुकूमत के इतिहास में एक नयी बात थी।

देवदास इसमें कोई शक नहीं।

सरोजनी नाइडू इसीलिए जिस समय इस पैक्ट पर दस्तखत हुए मुझे उम्मीद हो गयी थी कि आगे चलकर भारत के राजनैतिक मामलात में कुछ अच्छे गुल खिलेंगे।

महादेव भाई देसाई पर उस समझौते के पत्र की स्याही भी न सूख पायी थी कि सरकारी अफसरों ने उस समझौते को तोड़ना शुरू कर दिया।

प्यारेलाल और अब तो भारत से जो समाचार आ रहे हैं वे बड़े चिन्ताजनक हैं।

सरोजनी नाइडू इतने पर भी लन्दन की इस गोलमेज-परिषद् में आने के समय उस पैक्ट के वक्त उम्मीदों का जो पौधा मेरे दिल में उगा था उसमें कुछ फूल निकल आये थे।

महादेव भाई देसाई और आज जब यह गोलमेज-परिषद् खतम हो रही है, उस वक्त उसमें के फूल वे कुम्हला भी गये।

सरोजनी नाइडू कुम्हला ही नहीं गये, मुरझाकर झड़ गये। और उम्मीदों का वह पौधा भी सूखता नजर आ रहा है।

प्यारेलाल बात यह है कि इस परिषद् का गठन ही इस तरह

हुआ था कि परिषद् कभी कामयाब हो ही नहीं सकती थी।

महादेव भाई देसाई　हाँ यह परिषद् भारत को स्वतन्त्रता देने के उद्देश्य से बुलायी ही नहीं गयी। यह बुलायी गयी थी इस बात को सिद्ध करने के लिए कि भारत स्वराज्य के लायक ही नहीं है।

प्यारेलाल　इसीलिए जो लोग साम्प्रदायिकता के सबसे बड़े हामी हैं उन्हीं को यहाँ बुलाया गया।

महादेव भाई देसाई　और ब्रिटिश गवर्नमेंट की पुरानी 'डिवाइड एण्ड रूल' की पालिसी के अनुसार अब यह सिद्ध कर कि हम अपने आपस के झगड़े तय नहीं कर सकते इस परिषद् की असफलता का सारा दोष हमारे सिर पर मढ़ स्वराज्य का मकाम फिर से खटाई में डाल दिया जायगा।

सरोजनी नाइडू　पर यहाँ जो करने आये थे वह चाहे सरकार से न मिला हो, लेकिन यहाँ की जनता पर तो बापू एक अजीब असर छोड़कर जा रहे हैं।

प्यारेलाल　दरअसल उनका यहाँ का काम इस परिषद् के भीतर कम और बाहर ज्यादा हुआ है।

महादेव भाई देसाई　हाँ इसमें शक नहीं।

मीरा बहन　इस परिषद् के लिए तो वे ज्यादातर 'वारिंग' शब्द का उपयोग करते हैं।

सरोजनी नाइडू　परिषद् के सिवा कितनी आम सभाओं में उन्होंने भाषण दिये। कितने लोगों से मिले।

मीरा बहन　मुझे तो उनकी यहाँ की सबर को सहूलत्याँ हमेशा याद रहेंगी।

महादेव भाई देसाई कितने मर्द कितनी औरतें कितने बच्चे इन महफिलों में साथ हो जाते थे।

प्यारेलाल कितने लोग कितनी तरह के सवाल उनसे पूछते थे उनका वे कैसा जवाब देते थे।

देवदास बच्चे जब अंकिल गान्धी कहकर उनसे लिपटते थे उस वक्त के नजारे तो भुलाये नहीं जा सकते।

मीरा बहन खासकर एक दिन एक बच्चे ने जब उनसे पूछा— गान्धी तुम्हारा पतलून कहाँ गया? तब उस पर जब बापू खिलखिलाकर हँसे वह तो एक अजीब ही दृश्य था।

[प० मदनमोहन मालवीय का प्रवेश।]

सरोजनी नाइडू लो मालवीयजी आ गये अब और लोग भी आ रहे होंगे।

[ये लोग हाथ जोड़कर मालवीयजी को प्रणाम करते हैं। मालवीयजी उसी प्रकार उत्तर देते हैं।]

मालवीय तो सरोजनी देवी आज इस गोलमेज परिषद् की समाप्ति हो जायगी।

सरोजनी नाइडू हाँ पण्डितजी और मैं यह भी समझती हूँ कि कांग्रेस और सरकार की जो अस्थायी सुलह हुई थी वह भी इसी परिषद् के साथ खत्म हो जायगी।

मालवीय (दीर्घ निश्वास छोड़कर) हाँ भारत में जो समाचार मिल रहे हैं वे तो अत्यन्त निराशाजनक हैं। यहाँ कुछ होता तो कदाचित् वहाँ की स्थिति भी सुधरती पर यह गोलमेज परिषद् कभी असफल हुई कि क्या कहूँ!

महादेव भाई देसाई जिस ढंग से यह संगठित हुई थी उससे

इसकी सफलता की आशा तो कम ही थी।

मालवीय — पर लार्ड इर्विन, तुम मेरा स्वभाव तो जानते हो, मुझे तो क्वचित् ही निराशा होती है। और निराशा के वायुमण्डल में भी मुझ को सदा आशा की किरण दीखती रहती है। फिर भी यह गोलमेज परिषद् इस प्रकार पूर्णतया असफल हो जायगी यह मैं नहीं समझता था।

[अब और भी लोग आने लगते हैं। जिनमें आगा खाँ, महम्मदअली जिन्ना, मौलाना शौकतअली, फजलुल हक, डाक्टर मुंजे, महाराजा बीकानेर, सर तेजबहादुर सप्रू, श्रीनिवास शास्त्री, श्री जयकर, जफरुल्ला खाँ, डाक्टर अम्बेडकर, सर चमनलाल सीतलवाड, बेगम शाहनवाज आदि प्रमुख हैं। श्री महादेव भाई देसाई, प्यारेलाल, देवदास, और मीरा बहन दर्शकों के स्थान पर चले जाते हैं। शेष लोग एक-दूसरे से मिलते-जुलते सदस्यों के स्थान पर बैठते हैं। अब श्री रैम्जे मैकडानल्ड के साथ महात्मा गान्धी आते हैं। गान्धीजी सदा के सदृश घुटने तक लँगोटी धारण किये हैं, ऊपर के शरीर पर गरम कपड़े की एक सफेद चादर है, सिर खुला है और पैरों में चप्पल हैं। मैकडानल्ड और गान्धीजी को देख इनके स्वागत के लिए सब लोग खड़े हो जाते हैं। मैकडानल्ड सभापति के स्थान पर बैठते हैं और गान्धीजी उनके निकट की कुर्सी पर। कुछ देर बाद एक कागज को देखकर गान्धीजी खड़े होते हैं।]

महात्मा — सभापतिजी बन्धुओ और भगिनियो! इस परिषद् के खतम होने के पहले मुझे एक छोटा-सा काम रह गया है, वह है इस परिषद् के सभापति को धन्यवाद का प्रस्ताव मंजूर

महादेव भाई देसाई कितने मर्द कितनी औरतें कितने बच्चे इन चहलकदमियों में साथ हो जाते थे ।

प्यारेलाल कितने लोग कितनी तरह के सवाल उनसे पूछते थे उनका वे कैसा जवाब देते थे ।

देवदास बच्चे जब अंकिल गान्धी कहकर उनसे लिपटते थे उस वक्त के नजारे तो भुलाये नहीं जा सकते ।

मीरा बहन खासकर एक दिन एक बच्चे ने जब उनसे पूछा—गान्धी तुम्हारा पतलून कहाँ गया ? तब उस पर जब बापू खिलखिलाकर हँसे वह तो एक अजीब ही दृश्य था ।

[पं० मदनमोहन मालवीय का प्रवेश ।]

सरोजनी नाइडू लो मालवीयजी आ गये अब और लोग भी आ रहे होंगे ।

[ये लोग हाथ जोड़कर मालवीयजी को प्रणाम करते हैं । मालवीयजी उसी प्रकार उत्तर देते हैं ।]

मालवीय तो सरोजनी देवी आज इस गोलमेज परिषद् की समाप्ति हो जायगी ।

सरोजनी नाइडू हाँ पण्डितजी और मैं यह भी समझती हूँ कि कांग्रेस और सरकार की जो अस्थायी सुलह हुई थी वह भी इसी परिषद् के साथ खतम हो जायगी ।

मालवीय (दीर्घ निश्वास छोड़कर) हाँ भारत से जो समाचार मिल रहे हैं वे तो अत्यन्त निराशाजनक हैं । यहाँ कुछ होता तो कदाचित् वहाँ की स्थिति भी सुधरती पर यह गोलमेज परिषद् इसी असफल हुई कि क्या कहें !

महादेव भाई देसाई जिस ढंग से यह संगठित हुई थी उससे

इसकी सफलता की आशा तो कम ही थी।

मालवीय — पर देसाई तुम मेरा स्वभाव तो जानते हो, मुझे तो क्वचित ही निराशा होती है। घोर निराशा के वायुमण्डल में भी मुझे तो सदा आशा की किरण दीखती रहती है। फिर भी यह गोलमेज परिषद् इस प्रकार पूर्णतया असफल हो जायगी यह मैं नहीं समझता था।

[अब और भी लोग आने लगते हैं। जिनमें आगा खाँ, मुहम्मदअली जिन्ना, मौलाना शौकतअली, फजलुल हक, डाक्टर मुंजे, महाराजा बीकानेर, सर तेजबहादुर सप्रू, श्रीनिवास शास्त्री, श्री जयकर, जफरुल्ला खाँ, डाक्टर अम्बेडकर, सर चमनलाल सीतलवाड, बेगम शाहनवाज आदि प्रमुख हैं। श्री महादेव भाई देसाई, प्यारेलाल, देवदास, और मीरा बहन दर्शकों के स्थान पर चले जाते हैं। सब लोग एक-दूसरे से मिलते-जुलते सदस्यों के स्थान पर बैठते हैं। अब श्री रेम्जे मैकडानल्ड के साथ महात्मा गान्धी आते हैं। गान्धीजी सदा के सदृश घुटने तक लँगोटी धारण किये हैं, ऊपर के शरीर पर गरम कपड़े की एक सफेद चादर है, सिर खुला है और पैरों में चप्पल है। मैकडानल्ड और गान्धीजी को देख इनके स्वागत के लिए सब लोग खड़े हो जाते हैं। मैकडानल्ड सभापति के स्थान पर बैठते हैं और गान्धीजी उनके निकट की कुर्सी पर। कुछ देर बाद एक कागज को देखकर गान्धीजी कहते हैं।]

महात्मा — सभापतिजी बन्धुओ और भगिनियो! इस परिषद् के खतम होने के पहले अब इतना ही काम रह गया है कि इस परिषद् के सभापति को धन्यवाद का प्रस्ताव मंजूर

करना। मैं उस प्रस्ताव को आपके सामने पेश करता हूँ। यह प्रस्ताव मैं आपको पढ़कर सुना देता हूँ। (सामने रखे हुए कागज को पढ़ते हुए) 'यह परिषद् अपने सभापति को परिषद् का काम सुचारु रूप से चलाने के लिए हृदय से धन्यवाद देती है। इस परिषद् की कमेटियों में और परिषद् के खुले अधिवेशन में वक्त-बेवक्त पर मैं कुछ न कुछ कहता रहा हूँ। आज अन्त में भी मैं कुछ बातें कह देना चाहता हूँ। आज यह परिषद् खत्म हो रही है। यहाँ से हम लोग जल्दी ही अपने अपने स्थान को जाने वाले हैं। मैं पहले भी यह दावा कर चुका हूँ कि कांग्रेस पच्चासी फीसदी भारत की जनता की प्रतिनिधि है। अब मैं यह दावा करता हूँ कि अपनी सत्ता के अधिकार से कांग्रेस राजा महाराजाओं जमींदारों और शिक्षित वर्ग की भी प्रतिनिधि है। इस परिषद् में शामिल होने के लिए जो दूसरे नुमाइन्दे आये हैं वे खास-खास वर्गों के प्रतिनिधि होकर आये हैं। कांग्रेस ही एक ऐसी जमात है जो साम्प्रदायिकता से दूर है। इसका मंच सबके लिए जाति वर्ण और धर्म के भेद भाव का ख्याल किये बिना एक-सा खुला है। इसका मकसद बहुत ऊँचा है इसलिए यह मुमकिन है कि कुछ लोग इसके पास न आते हों लेकिन कांग्रेस उन्नतिशील जमात है भारत में दूर से दूर गाँव में भी इसकी जगह है। इतने पर भी यहाँ कांग्रेस को अनेक दलों में से एक दल माना गया। लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि कांग्रेस ही एकमात्र ऐसी जमात है जिसने बिना फैसला

और आमद हो सकता है। यहाँ मुझे ऐसा लगा कि आप मुझ पर तो शायद विश्वास करते हैं पर कांग्रेस पर नहीं। लेकिन एक मिनट के लिए भी मुझे उस महान् संस्था से अलग न समझिए जिसमें कि मैं तो समुद्र की एक बूँद के समान हूँ। मैं कांग्रेस में बहुत छोटा हूँ और अगर आप मुझ पर विश्वास करें मुझे कोई जगह देना हो तो मैं आपको आमन्त्रित करता हूँ कि आप कांग्रेस पर भी विश्वास कीजिए अन्यथा मुझ पर आपका जो विश्वास है वह किसी काम का नहीं क्योंकि कांग्रेस से जो अधिकार मुझे मिला है उसके सिवा मेरे पास कोई अधिकार नहीं। मुझे यहाँ यह भी मालूम हुआ कि अलग अलग जातियों के नुमाइन्दों को अपने पूरे बल के साथ अपनी अपनी माँग पर जोर देने के लिए उत्साहित किया गया था लेकिन साम्प्रदायिक समझौते का सवाल आधार रूप नहीं था हमारे सामने मुख्य प्रश्न तो शासन विधान का निर्माण था। क्या ७ हजार साल हुए इन नुमाइन्दों को सिर्फ साम्प्रदायिक सवाल हल करने के लिए बुलाया गया था? मैं प्रधान मन्त्री मिस्टर मैकडानल्ड को साम्प्रदायिक समस्या हल करने के लिए पंच बनाने का विरोधी नहीं था बशर्ते कि उनको सिक्ख मुसलमानों और हिन्दुओं सब शामिल रहें। दूसरे अल्पसंख्यक जातियों के बारे में मैं फिर भी समझ सकता हूँ लेकिन अछूतों का अगर यह पृथक् किया गया ज्यादा तो मेरे लिए सबसे ज्यादा निन्दा पाप है। इसका मतलब यह होता है कि हमारे माथे पर अस्पृश्यता का कलंक

हमेशा रहेगा। हम नहीं चाहते कि अस्पृश्यों का एक अलग जाति के रूप में वर्गीकरण किया जाय। सिक्ख सदैव के लिए सिक्ख मुसलमान हमेशा के लिए मुसलमान और ईसाई सदा के लिए ईसाई रह सकते हैं लेकिन क्या अछूत भी हमेशा के लिए अछूत रहेंगे? अस्पृश्यता जीती रहे इसके बनिस्पत मैं यह ज्यादा अच्छा समझूँगा कि हिन्दू धर्म ही डूब जाय। इसलिए मैं अपनी पूरी ताकत के साथ कहता हूँ कि इस बात का विरोध करने वाला अगर मैं ही अकेला होऊँ तो भी मैं अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी इसका विरोध करूँगा। भारत पहुँचने पर मैं नहीं जानता कि मेरा रास्ता किस दिशा में होगा लेकिन इसकी मुझे जरा भी फिक्र नहीं है। सभापतिजी अगर मुझे आपसे बिलकुल विभिन्न दिशा में भी जाना पड़े तो भी आप हार्दिक धन्यवाद के अधिकारी हैं हो। इसलिए मैं यह प्रस्ताव यहाँ पेश कर रहा हूँ।

लघु यवनिका

पाँचवाँ दृश्य

स्थान यरवदा जेल का एक मैदान

समय सन्ध्या

[दूर पर जेल की ऊँची दीवाल का कुछ हिस्सा दीख पड़ता है। कुछ दूर पर एक आम के वृक्ष के नीचे महात्मा

गान्धी अपने पलंग पर लेटे हुए हैं। उनके आस-पास बहुत सा जनसमुदाय भी एकत्रित है। इनमें कस्तूरबा गान्धी, पं० मदनमोहन मालवीय, सरदार वल्लभभाई पटेल, स्वरूप रानी नेहरू, राजगोपालाचार्य, वासन्तीदेवी, उर्मिलादेवी, महादेव भाई देसाई, प्यारेलाल, ठक्कर बापा, डा० अम्बेडकर, एम० सी० राजा, सर तेजबहादुर सप्रू, पं० हृदयनाथ कुंजरू, श्री जयकर, सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, [illegible] श्री अम्बालाल साराभाई, देवदास गान्धी, घनश्यामदास बिड़ला, वृजकृष्ण चांदीवाला, शंकरलाल बैंकर प्रमुख हैं। परन्तु दूर होने के कारण इनमें से अनेक स्पष्ट रूप से नहीं दिखायी देते। रवीन्द्रनाथ ठाकुर और श्रीमती सरोजनी नाइडू का प्रवेश।]

रवीन्द्रनाथ — [illegible] गान्धी जन्म से ही महात्मा थे। मैंने ही पहले-पहल उन्हें महात्मा कहा था। वे उस देश में भी [illegible] हैं जिसमें वे हैं। वे उस आदर्श में भी [illegible] हैं जो उन्होंने अपने जीवन का आदर्श बनाया है। वे राजनीतिज्ञ [illegible] भारी संगठन करने की शक्ति रखने वाले जन-नेता [illegible] परन्तु जीवन के इन सब पहलुओं की अपेक्षा भी उनमें जो मानवता है वह इन सब बातों से [illegible] है। यद्यपि उनके कार्य भी आज उनकी मानवता का [illegible] नहीं कर पाते। वे [illegible] भावना की [illegible] उनका [illegible] है और यही उनकी सच्ची मानवता की कसौटी है। [illegible] जो कुछ किया उससे [illegible] मान लिया कि वे [illegible] परन्तु [illegible]

जितने बड़े हिन्दू जाति की एकता की रक्षा करने के लिए अस्पृश्यों के प्रश्न पर यरवदा जेल में वह अनशन करके हो गये हैं। अब जब सवर्ण हिन्दुओं और हरिजनों में समझौता हो गया, सरकार ने भी उसे स्वीकार कर लिया और वे इस अनशन को तोड़ रहे हैं, उस समय मैं तुम्हें एक चीज दिखाता हूँ। (जेब में से एक पत्र निकाल उसे सरोजनी नायडू को देते हुए) ता० २० सितम्बर को अनशन प्रारम्भ करने के पहले रात को ढाई बजे उठकर महात्मा ने यह पत्र मुझे भेजा था।

सरोजनी नायडू (रवीन्द्रनाथ ठाकुर के हाथ से पत्र लेकर उसे पढ़ती हैं) "आज मध्याह्न में मैं अग्नि-परीक्षा के द्वार में घुसूँगा। यदि आप मेरे प्रयत्न की सफलता के लिए आशीर्वाद भेज सकें तो मुझे बल मिलेगा। आप मेरे सबसे बड़े और सबसे सच्चे मित्र रहे हैं क्योंकि आपने सदा मुझे अपने विचार स्पष्ट कहे हैं। यदि आपका हृदय मेरे इस कार्य को निन्दनीय मानता है तो उसे भी स्पष्ट रूप से कहिए। मैं आपकी ऐसी आलोचना को भी अपने उपवास के समय शिरोधार्य करूँगा। मुझ में वैसा गर्व नहीं है जो मुझे अपनी भूल को स्वीकार करने में बाधा पहुँचाये। यदि मुझे विश्वास हो जाय कि मैंने कोई भूल की है तो उसे मैं अवश्य स्वीकार कर लूँगा, चाहे उस स्वीकृति का मुझे कितना भी बड़ा मूल्य क्यों न चुकाना पड़े। परन्तु यदि आपका हृदय मेरी इस कृति का समर्थन करता है तो इस उपवास को सहन करने में वह मुझे शक्ति देगा।" (आँखों

में आँसू भरकर यह पत्र रवीन्द्र बाबू को लौटाती हैं और उनकी ओर देखती हैं।)

रवीन्द्रनाथ और, सरोजिनी देवी, इस पत्र के पहुँचने के पहले ही इस प्रश्न का वक्त सुनकर जो तार मैंने उन्हें भेजा था वह भी पढ़ लो। (दूसरे जेब से एक कागज निकाल सरोजिनी नाइडू को देते हैं।)

सरोजिनी नाइडू (रवीन्द्रनाथ ठाकुर से कागज लेकर पढ़ते हुए) "भारत की एकता और उसकी सामाजिक स्थिति को अक्षुण्ण रखने के लिए मूल्यवान जीवन का बलिदान भी सर्वथा उचित है।" (फिर वे उसी प्रकार कागज लौटाते हुए रवीन्द्रनाथ ठाकुर की ओर देखती हैं।)

रवीन्द्रनाथ (गद्गद् स्वर से) और, और सरोजिनी देवी, इस महान् अनशन की इस प्रकार सफल समाप्ति पर मेरा तो मौन भाव सुमन, मौन भाव सुमन, 'सुमन अर्पित हर्षोन्मत्त हो गाता हूँ।'

सरोजिनी नाइडू हाँ, जिस तरह पारे में तपने से सोने में और ज्यादा निखार आ जाता है उसी प्रकार इस अनशन में तप कर स्वतन्त्रता का यह महान् सेनानी, दुखी समाज का त्राता, मानव-जीवन के सुख की आशा और मानवता का आत्म-विश्वास और भी तेजस्वी होकर निकला है।

रवीन्द्रनाथ हाँ, और सरोजिनी देवी, मैं नहीं जानता कि अनशन जीवन में सफल होता है या असफल। पर सफलता और असफलता तो बहुत छोटी चीज़ें हैं। बुद्ध के समान, ईसा के समान ये असफल भी हो सकते हैं पर उनका जीवन सदा

जितने बड़े हिन्दू जाति की एकता की रक्षा करने के लिए अस्पृश्यों के प्रश्न पर यरवदा जेल में यह अनशन करके हो गये हैं। अब जब सवर्ण हिन्दुओं और हरिजनों में समझौता हो गया, सरकार ने भी उसे स्वीकार कर लिया और वे इस अनशन को तोड़ रहे हैं, उस समय मैं तुम्हें एक चीज दिखाता हूँ। (जेब में से एक पत्र निकाल उसे सरोजनी नाइडू को देते हुए) ता० २० सितम्बर को अनशन प्रारम्भ करने के पहले रात को ढाई बजे उठकर महात्मा ने यह पत्र मुझे भेजा था।

सरोजनी नाइडू (रवीन्द्रनाथ ठाकुर के हाथ से पत्र लेकर उसे पढ़ती है) 'आज मध्याह्न में मैं अग्नि-परीक्षा के द्वार में घुसूँगा। यदि आप मेरे प्रयत्न की सफलता के लिए आशीर्वाद भेज सकें तो मुझे बल मिलेगा। आप मेरे सबसे बड़े और सबसे सच्चे मित्र रहे हैं क्योंकि आपने सदा मुझे अपने विचार स्पष्ट कहे हैं। यदि आपका हृदय मेरे इस काम को निन्दनीय मानता है तो उसे भी स्पष्ट रूप से कहिए। मैं आपकी ऐसी आलोचना को भी अपने उपवास के समय शिरोधार्य करूँगा। मुझ में ऐसा गर्व नहीं है जो मुझे अपनी भूल को स्वीकार करने में बाधा पहुँचावे। यदि मुझे विश्वास हो जाय कि मैंने कोई भूल की है तो उसे मैं अवश्य स्वीकार कर लूँगा, चाहे उस स्वीकृति का मुझे कितना भी बड़ा मूल्य क्यों न चुकाना पड़े। परन्तु यदि आपका हृदय मेरी इस कृति का समर्थन करता है तो इस उपवास को सहन करने में वह मुझे शक्ति देगा। (आँखों

में आँसू भरकर यह पत्र रवीन्द्र बाबू को लौटाती है और उनकी ओर देखती है।)

रवीन्द्रनाथ ओर, सरोजिनी देवी! इस पत्र के पहुँचने से पहले ही इस [illegible] का [illegible] जो तार मैंने उन्हें भेजा था वह भी पढ़ लो। (दूसरे जेब से एक कागज निकाल सरोजिनी नायडू को देते हैं।)

सरोजिनी नायडू (रवीन्द्रनाथ ठाकुर से कागज लेकर पढ़ते हुए) 'भारत की जनता और उसकी सामाजिक स्थिति का [illegible] के लिए आपके जीवन का बलिदान [illegible] उचित है।' (फिर से उसी प्रकार कागज लौटाते हुए रवीन्द्रनाथ ठाकुर की ओर देखती है।)

रवीन्द्रनाथ (गद्गद् स्वर में) ओर, ओर, सरोजिनी देवी! इस महान् [illegible] की इस प्रकार असमय समाप्ति पर कौन-कौन आज सुखी है, कौन आज सुखी है [illegible] सुख में अधिक [illegible] हो सकता है?

सरोजिनी नायडू हाँ, जिस तरह आग में तपकर सोने में और ज्यादा चमक आ जाती है उसी प्रकार इस [illegible] में तपकर [illegible] यह महान् [illegible] दुनिया [illegible] मानव जीवन के सुख की आशा और मानवता का आदर्श [illegible] और भी [illegible] होकर निकला है।

रवीन्द्रनाथ ओर, ओर, सरोजिनी! क्या मैं नहीं जानता [illegible] जीवन में सफल होते हैं या असफल। पर सफलता और असफलता तो [illegible] चीज है। [illegible] के समान वे असफल भी हो सकते हैं, पर उनका जीवन [illegible]

ऐसे जीवन के सदृश स्मरण रखा जायगा जो जीवन जब तक भी विश्व है तब तक उसका आदर्श माना जाता है।

[रवीन्द्रनाथ ठाकुर और सरोजनी नाइडू भी गान्धीजी की चारपाई के निकट पहुँचते हैं। कुछ देर बाद रवीन्द्रनाथ के मुख से निम्नलिखित गीत सुन पड़ता है।]

गीत

जीवन जखन सुकाये जाय
करुणा धाराय एसो
सकल माधुरी लुकाय जाय
गीत-सुधार से एसो।
कर्म जखन प्रबल आकार
गरजि उठिया ढाके चारिधार
हृदय प्रान्ते हे जीवन-नाथ
शान्त-चरणे एसो
आपनारे जबे करिया कृपण
कोने पड़े थाके दीन हीन मन
दुयार खुलिया हे उदार नाथ
राज-समारोहे एसो
वासना जखन विपुल धूलाय
अंध करिया अबोधे भुलाय
ओहे पवित्र! ओहे अनिद्र!
रुद्र आलोके एसो।

[जब गीत चल रहा है, उसी समय कस्तूरबा महात्मा गान्धी के निकट संतरे के रस का गिलास ले आती हैं। दो व्यक्ति

गान्धीजी को सहारा देकर उठाते हैं और गान्धीजी कस्तूरबा के हाथ से सन्तरे के रस का गिलास ले सन्तरे का रस पीते हैं। महान उत्साह से जयजयकार होता है, इसके बाद गान्धीजी का स्वर सुन पड़ता है।]

महात्मा — मैं फिर से जन्म नहीं लेना चाहता, लेकिन अगर मुझे फिर से जन्म लेना ही होगा है तो मैं किसी हरिजन के यहाँ जन्म लेना चाहता हूँ, जिससे मैं उनके दुःख, कष्ट और उनके प्रति जो दुर्व्यवहार हो रहा है, उसका हिस्सेदार बन सकूँ, साथ ही इस अपमानजनक स्थिति से अपना और उनका उद्धार कर सकूँ। इसलिए मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि यदि मुझे जन्म लेना ही है, तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र के यहाँ जन्म न लेकर अतिशूद्र के यहाँ पैदा होऊँ।

यवनिका

एसे जीवन के सदृश स्मरण रग
तक भी विदव है तब तक उसका
[रवीन्द्रनाथ ठाकुर और सरोज
चारपाई के निकट पहुँचते हैं। कुछ द
से निम्नलिखित गीत सुन पड़ता है।]

गीत

जीवन जनन मुकाये –
करुणा ग

जवाहरलाल नेहरू : हाँ, हमारी इन कोशिशों की कोई इन्तहा नहीं।

वल्लभभाई पटेल : हमने लड़ाई के शुरू होते ही लड़ाई के उद्देश्यों को स्पष्ट करने की ही माँग तो की थी।

जवाहरलाल नेहरू : और उसके लिए कितना समय उसने नष्ट होने देगा।

वल्लभभाई पटेल : प्रान्तों में हमारे मन्त्रिमण्डलों ने इसलिए इस्तीफ़े दिये थे कि भारत की राय लिये बिना भारत को युद्ध में शामिल किया गया है और इसके बाद भी युद्ध के उद्देश्य स्पष्ट नहीं किये जा रहे हैं।

जवाहरलाल नेहरू : बिलकुल, और कांग्रेस ने तो आज़ादी के लिए गांधीजी तक की पर्वाह नहीं की। पूना की अपनी बैठक में यहाँ तक तय किया कि अगर उस आज़ादी को घोषित किया दिया जाय तो वह हिंसा अहिंसा के उसूल को भी छोड़ कर इस लड़ाई में अंग्रेज़ों का साथ देने के लिए तैयार है।

वल्लभभाई पटेल : उस वक्त बेचारे बापू बरबस अलग हट गये और जब हमें ब्रिटेन उस प्रस्ताव पर भी कामयाबी नहीं मिली तब हम फिर उनको शरण गये और उनने व्यक्तिगत सत्याग्रह छिड़वाया।

जवाहरलाल नेहरू : लेकिन वह सत्याग्रह भी अंग्रेज़ों को परेशान करने के मकसद से नहीं किया गया था। इसलिए उस सत्याग्रह को पहले सत्याग्रहों से बाकायदा भिन्न गिनाया जाय।

वल्लभभाई पटेल : हाँ, उस सत्याग्रह का नाम भी बापू ने

पाँचवाँ अङ्क

पहला दृश्य

स्थान : बम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का पंडाल

समय : तीसरा पहर

[इस पंडाल का कुछ भाग दिखायी देता है। पीछे की ओर मंच का कुछ हिस्सा दिखता है। जिस पर गद्दी-तकिए लगे हुए हैं। एक तरफ वक्ताओं के बोलने का स्थान है जहाँ लाउड-स्पीकर लगे हैं। मंच के नीचे के स्थान की बिछायत पर डेस्कों की कुछ पंक्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। इस समय पंडाल खाली है। पं० जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल का प्रवेश।]

जवाहरलाल नेहरू : जब तक सर स्टैफर्ड क्रिप्स नहीं लौटे थे मुझे उम्मीद थी कि शायद कुछ हो जाय।

वल्लभभाई पटेल : सन् १९३९ की तीन सितम्बर को यह लड़ाई आरम्भ हुई थी। तीन साल से यह चल रही है। जिस दिन लड़ाई शुरू हुई उस दिन बापू ने अपने बयान में कहा था कि उन्हें इंग्लैण्ड से हमदर्दी है और इन तीन वर्षों में हमने कितनी कोशिश की कि हमें इस अवसर पर इंग्लैण्ड को कष्ट न देना पड़े।

जवाहरलाल नेहरू हाँ, हमारी इन कोशिशों की कोई इन्तहा नहीं।

वल्लभभाई पटेल हमने लड़ाई के शुरू होते ही लड़ाई के उद्देश्यों को स्पष्ट करने की ही माँग तो की थी।

जवाहरलाल नेहरू और उसके लिए कितने लम्बे अरसे तक रास्ता देखा।

वल्लभभाई पटेल प्रान्तों में हमारे मन्त्रिमण्डलों ने अगर त्यागपत्र दिये तो इसीलिए तो कि भारत की राय लिये बिना भारत को युद्ध में झोंक दिया गया है और इतने पर भी युद्ध के उद्देश्य स्पष्ट नहीं किये जा रहे हैं।

जवाहरलाल नेहरू बिलकुल और कांग्रेस ने तो आज़ादी के लिए गान्धीजी तक की पर्वाह नहीं की। पूना की अपनी बैठक में यहाँ तक कह दिया कि अगर उस आज़ादी का यकीन दिला दिया जाय तो वह हिंसा अहिंसा के उसूल को भी एक तरफ रख लड़ाई में अंग्रेजों की मदद देने के लिए तैयार है।

वल्लभभाई पटेल उस वक्त बेचारे बापू चुपचाप अलग बैठ गये और जब हमें अपने उस प्रस्ताव पर भी कामयाबी नहीं मिली तब हम फिर उनकी शरण गये और उन्होंने व्यक्तिगत सत्याग्रह छिड़वाया।

जवाहरलाल नेहरू लेकिन वह सत्याग्रह भी अंग्रेजों को नुक-सान पहुँचाने के मकसद से नहीं किया गया था। इसीलिए उस सत्याग्रह के पहले सत्याग्रही थे आचार्य विनोबा भावे।

वल्लभभाई पटेल हाँ, उस सत्याग्रह का नाम ही बापू ने

सांकेतिक सत्याग्रह रखा था। वह सत्याग्रह भारत के प्रति अंग्रेजों के रुख पर एक तरह की नैतिक चेतावनी था।

जवाहरलाल नेहरू और उसे भी जापान का हमला होते ही बिना किसी शर्त के बापू ने मुल्तवी कर दिया। पर, सरदार, जब क्रिप्स आये उस वक्त उनका रुख कुछ और ही था।

वल्लभभाई पटेल अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति बदलते ही तोते की आँख के समान क्रिप्स की निगाह बदली।

जवाहरलाल नेहरू अब सचमुच ही जो कदम हम उठा रहे हैं उसके सिवा हमारे लिए कोई रास्ता नहीं।

वल्लभभाई पटेल हमने कितना सोचा कितना विचारा छः जुलाई से चौदह जुलाई तक लगातार नौ दिन कार्य-समिति की वर्धा में बैठक होती रही।

जवाहरलाल नेहरू हाँ सन् १९२० में जब से कांग्रेस के कान्स्टीट्यूशन में कांग्रेस की वर्किंग कमेटी बनी है तब से शायद ही कभी वर्किंग कमेटी का इजलास इतने लम्बे वक्त तक चला हो।

वल्लभभाई पटेल राजगोपालाचार्य की इस मामले में जो राय है पहले आपकी भी वही राय थी और मेरी भी कि इस वक्त सत्याग्रह करना मुनासिब बात न होगी। पर अब तो आप भी मानते हैं और मैं भी मान गया कि कांग्रेस के लिए दूसरा कोई रास्ता नहीं।

जवाहरलाल नेहरू बात यह है कि मैं तो धीरे-धीरे इस राय का हो गया हूँ कि जितना बापू समझते हैं उतना हम में से

कोई नहीं। इसीलिए किसी मसले पर अगर उनकी और मेरी राय में फर्क रहता है तो मैं उनसे कह तो जरूर देता हूँ लेकिन चलता हूँ उन्हीं की राय के मुताबिक।

वल्लभभाई पटेल— और देश की नब्ज को भी उनसे ज्यादा इस समय कौन जानता है?

[लोगों का आना आरम्भ हो जाता है। पं० जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई मंच पर जाते हैं। उसी वक्त कांग्रेस सभापति मौलाना अबुलकलाम आजाद के साथ महात्मा गान्धी आते हैं और मंच पर जाते हैं। कुछ समय व्यतीत होने का दिग्दर्शन कराने के लिए लघु यवनिका गिरती है, परन्तु तत्काल उठ जाती है। जब यवनिका उठती है, उस वक्त मंच और पण्डाल का जो भाग दिखता है, वह मनुष्यों से खचाखच भरा हुआ है। महात्मा गान्धी एक कुर्सी पर बैठे बोल रहे हैं।]

महात्मा— आपके सामने जो प्रस्ताव पं० जवाहरलाल नेहरू ने रक्खा, जिसका अनुमोदन सरदार वल्लभभाई पटेल ने किया और जो मेरे बिना कुछ कहे ही आपने एकमत हो मंजूर किया है उस पर अब आपको अमल करना है। मुझे यह देखकर बड़ा दुःख हो रहा है कि किसी व्यक्ति ने भी संताप का ही साथ लिया।

एक व्यक्ति— अरे ये सब अंग्रेज शैतान हैं।

कुछ व्यक्ति— (एक साथ) सब के सब, सब के सब शैतान।

महात्मा— नहीं, ऐसा आपको नहीं कहना चाहिए। कहना तो नहीं सोचना भी नहीं चाहिए। अंग्रेजों में भी सन्त आदमी होते हैं और हिन्दुस्तानियों में भी बुरे। तमाम अंग्रेज और —

हिन्दुस्तानियों का नहीं है। सवाल है सामूहिक रूप से ठीक बात करने का। मुझे यकीन हो गया है कि अब वह वक्त आ गया है जब अंग्रेजों और हिन्दुस्तानियों को एक दूसरे से सर्वथा किनारा कर लेना चाहिए।

एक व्यक्ति अंग्रेज भारत छोड़ें।

जनसमुदाय अंग्रेज भारत छोड़ें।

महात्मा हरेक ब्रिटेन निवासी से मेरी प्रार्थना है कि वह मेरी इस अपील का समर्थन करे कि अंग्रेज एशिया और अफ्रीका के हर हिस्से से इसी घड़ी हट जायें। अगर नैतिक पहलू को भी तराजू के एक पलड़े पर रख लिया जाय तो ब्रिटेन का हिन्दुस्तान का और दुनिया का इसमें नफा ही नफा है। हम पर अंग्रेजों का जो अप्राकृतिक प्रभुत्व जम रहा है उसका शान्त और अहिंसक तरीके से खत्म करने के लिए और नये युग की स्थापना के लिए मेरी यह प्रार्थना है। हिन्दुस्तान को भगवान के भरोसे छोड़ जाओ अगर इतनी श्रद्धा न हो तो उसे अराजकता के हाथों में ही सौंप जाओ।

जनसमुदाय (अत्यन्त उच्च स्वर से) अंग्रेज भारत छोड़ें!

महात्मा पर अंग्रेजों से छुटकारा पाने के लिए हम भी किसी तरह से भी जापानियों की मदद पर भरोसा नहीं रखना चाहिए। हमें भरोसा रखना चाहिए अपने बल पर और ईश्वर पर। इस वक्त जब मैं अंग्रेजों से भारत छोड़ने की बात कहता हूँ तब मैं जानता हूँ कि बहुत लोग मुझे गलत समझ रहे हैं। मुझे भारत और उसके बाहर अपने कितने ही मित्रों की दोस्ती और विश्वास से हाथ धोना पड़ा है

इतना ही नहीं उनमें से कुछ को तो मेरी अक्लमंदी पर ही शक होने लगा है और दूसरे कुछ लोगों को मेरी ईमानदारी पर भी। बुद्धिमत्ता से हाथ धोने की बात तो मैं गवारा कर सकता हूँ लेकिन जहाँ तक ईमानदारी और सचाई का सवाल है वह मेरी एक अमूल्य निधि है जिसे मैं किसी भी हालत में नहीं खो सकता। इस वक्त मैं जो कुछ कह और कर रहा हूँ वह अगर न कहूँ और न करूँ तो मुझे अन्दर की आवाज को दबा देना होगा। मेरी अन्तरात्मा कहती है कि मुझे अकेले ही समाज से लोहा लेना चाहिए, वह कहती है जब तक तुम में निर्भय होकर संसार का सामना करने की ताकत है तब तक तुम सुरक्षित हो। भले ही दुनिया तुम्हें किसी भी नज़र से देखे, तुम उस दुनिया की परवाह न करो और केवल परमात्मा से डरते हुए अपना काम करते रहो। मेरे भीतर का रास्ता स्थिर और स्पष्ट है। इस समय जो कुछ मैं कह और कर रहा हूँ वह अगर मैं न कहूँ और न करूँ तो ईश्वर मुझसे पूछेगा कि जब दुनिया में चारों तरफ आग लपक रही थी, अशान्ति की लपटें प्रखर होकर उठ रही थीं तब तूने क्यों नहीं उस महामन्त्र शान्ति और अहिंसा के पाठ को दुनिया के सामने रक्खा? क्यों नहीं अपने में उद्वेग का सञ्चार किया?

जनसमुदाय — (उच्च स्वर से) महात्मा गान्धी की जय!

महात्मा — आखिर आज भारत की आत्मा की माँग कर आखिर कौनसा कुसूर कर रहा है? क्या ऐसी माँग करना गलती है? क्या उस रास्ते पर सफ़र करना ठीक है?

सरकार के बावजूद भी मुझे उम्मीद है कि इंग्लैण्ड ऐसा नहीं सोचेगा। मुझे आशा है कि अमरीका के राष्ट्रपति भी ऐसा नहीं सोचेंगे। मुझे विश्वास है कि चीन के सर्वोच्च प्रधान सेनापति मार्शल च्यांगकाई शेक भी, जो इस वक्त अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए जापानियों के साथ कड़ी लड़ाई कर रहे हैं, कांग्रेस के बारे में ऐसी कोई बात नहीं सोचेंगे। पर अगर संसार के सभी राष्ट्र मेरा विरोध भी करें, अगर तमाम भारत भी मुझे समझाने की कोशिश करे तो भी मैं अपने रास्ते से डिगने वाला नहीं हूँ। आगे ही कदम बढ़ाता जाऊँगा सिर्फ भारत के लिए नहीं बल्कि सारे संसार की खातिर।

जनसमुदाय (एक स्वर से) महात्मा गान्धी की जय!

महात्मा जीवन भर मुझे गलतफहमियों का सामना करना पड़ा है। हर सार्वजनिक कार्यकर्त्ता के जीवन में यह बात होती है। हर सार्वजनिक कार्यकर्त्ता को उसे सहने के लिए तयार रहना ही चाहिए। मगर हर गलतफहमी का जवाब दिया जाय और उसे साफ करने की कोशिश की जाय तो जीवन का बोझ बहुत बढ़ जाता है। मैंने उन्हीं गलतफहमियों को दूर करने की कोशिश की है जिनसे काम को हानि पहुँचती है।

जनसमुदाय महात्मा गान्धी की जय!

महात्मा हालाँकि ब्रिटेन ने भारत को सबसे ज्यादा उत्तेजित किया है, फिर भी हम कोई सीधा वार नहीं करेंगे। हमने सज्जनता और नम्रता से काम लिया है हम हिंसा

के पीछे हथियारों को काम में लेने वाला नहीं है। हमारी जो लड़ाई छिड़ेगी वह अब सामूहिक लड़ाई तो होगी, पर अहिंसात्मक। फिर हमारी योजनायें गुप्त कुछ भी नहीं है। हमारी तो खुली लड़ाई है। कुकुरमुत्ते की तरह पैदा होने वाली संस्थाओं की मदद से कांग्रेस का विरोध या उसे कुचल डालना सरकारी अमलदारी के लिए नामुमकिन है। मैंने जीवन में अनुभव किया है कि हर बड़े और महान् आन्दोलन के साथ पाँच बातें हमेशा लगी रहती हैं। उस आन्दोलन के प्रति उदासीनता, उसका मजाक, उस पर गाली-गलौज, उसका दमन और उसका सम्मान। आप दिल में कोई उलझन न रक्खें। हमारी दिक्कतें दो तरह की हैं—एक बाहरी और एक हमारे खुद के द्वारा पैदा की हुई। दूसरी तरह की दिक्कतें कहीं ज्यादा बड़ी हैं क्योंकि हम खुद उनमें लिपटे रहते हैं और उन्हें दूर करने की कोशिश नहीं करते। लुक-छिपकर कोई काम न करें। जो लुक-छिपकर काम करते हैं उन्हें पछताना पड़ता है। मैं जीवन भर जिस तरह के और जो भी प्रयोग करता रहा हूँ, उन सबकी आखिरी अग्नि-परीक्षा का समय आया है। आजादी हासिल करने अथवा उसकी कोशिश करने में मिट जाने के लिए तैयार रहो। आजादी की माँग में समझौता नहीं हो सकता। आजादी पहले आने, उसके बाद कुछ और। कायर मत बनो, क्योंकि कायरों को जीने का हक नहीं है। जो देश या व्यक्ति मृत्यु का गुलाम बना उस व्यक्ति पर आराम नहीं करता

वह महान् हो ही नहीं सकता। मैंने कांग्रेस को बाजी पर लगा दिया है वह करेगी या मरेगी। हर हिन्दुस्तानी आज से अपने को स्वतन्त्र समझे। वह करे या मरे।

[गान्धीजी चुप हो जाते हैं, जोर की तालियों की गड़गड़ाहट। "करो या मरो", "अंग्रेजो, भारत छोड़ो", "खुला विद्रोह" के जोर के नारे।]

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान : एक सफ़ेद चादर

समय : प्रात काल से लेकर रात्रि तक अनेक दिन

[सफ़ेद चादर पर नीचे लिखे दृश्य दीख पड़ते हैं। अनेक बार नारे भी सुनायी देते हैं और गीत भी।

बम्बई में कांग्रेस के स्वयंसेवकों की रेली दिखायी पड़ती है। राष्ट्रीय झण्डा फहराया जाता है। और झण्डे का गीत सुन पड़ता है।]

गीत

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥
सदा शक्ति बरसाने वाला
प्रेम-सुधा सरसाने वाला
वीरों को हरषाने वाला,

मातृ भूमि का तन-मन सारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
स्वतन्त्रता के भीषण रण में
लखकर जोश बढ़े क्षण-क्षण में
कांपे शत्रु देखकर मन में
मिट जाये भय संकट सारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
इस झण्डे के नीचे निर्भय
लें स्वराज्य हम अविचल निश्चय
बोलो भारत माता की जय
स्वतन्त्रता ही ध्येय हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
आओ प्यारे वीरो! आओ
देश धर्म पर बलि-बलि जाओ,
एक साथ सब मिलकर गाओ—
प्यारा भारत देश हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
इसकी शान न जाने पावे
चाहे जान भले ही जावे
विश्व विजय करके दिखलावे
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
[एक बार समूह में पुलिस और सेना आकर इस झण्डे को

गिरा देती है। स्वयंसेवकों पर लाठी चार्ज करती है, उन पर अश्रु गैस छोड़ती है और गोली चलाती है।

यह दृश्य लुप्त होकर अनेक प्रान्तों के स्थानों में सार्वजनिक सभाओं, जुलूसों आदि के दृश्य दिखायी देते हैं, जिनमें इसी प्रकार के लाठी-चार्ज, अश्रु गैस और गोलीकाण्ड के दमन दीख पड़ते हैं।

यह दृश्य लुप्त होकर रेल की पटरियाँ उखाड़ने, तार काटने, रेलवे-स्टेशनों, पुलिस-थानों, डाकघरों तथा सरकारी इमारतों के जलाये जाने के अनेक दृश्य दीख पड़ते हैं और इन्हीं के साथ घोर दमन के भी।

ये दृश्य लुप्त होकर हवाई जहाजों से बमबारी के दृश्य दिखायी देते हैं।

ये समस्त दृश्य अत्यन्त उत्तेजनाजनक और भयभीत करने वाले हैं, जिनसे रौद्र, भयानक और बीभत्स रसों की महान उत्पत्ति होती है।]

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान : पूना में आगा खाँ महल का वह कमरा
जिसमें कस्तूरबा का निधन हुआ था

समय : सन्ध्या

[रुग्ण शैय्या पर कस्तूरबा लेटी हुई हैं। उनके सिराहने गान्धी बैठे हुए हैं। कस्तूरबा का सिर गान्धीजी की गोद में है।]

कस्तूरबा (आप ही आप) — आज मुझे अपना सारा बीता हुआ जीवन इस तरह याद आ रहा है ? (कुछ रुककर) क्या ... क्या जाने का समय नज़दीक है ? ... जाने के वक्त ही क्या इस तरह बीती ज़िन्दगी याद आती है ?

महात्मा — अहो अहा! बीती ज़िन्दगी तो कई बार यों भी याद आ जाया करती है। तुम ... तुम ऐसा क्यों सोच रही हो ?

कस्तूरबा — नहीं, अगर जाने का भी वक्त आ गया है तो इस में ... एक दिन जाना तो सभी को है। तुम्हारे यह आखिरी स्वतन्त्रता के युद्ध छेड़ने के बाद इसी ... इसी आग़ा खाँ महल में ही तो महादेव गये हैं और फिर तुम्हारी गोद में मैं भी चली जाऊँ इससे अधिक ... इससे ज़्यादा सौभाग्य की मेरे लिए और कौनसी बात हो सकती है ? (कुछ रुककर) बासठ वर्ष हम लोगों के विवाह को हो गये। बासठ साल ही न ?

महात्मा — हाँ, बासठ साल!

कस्तूरबा — तेरह ... तेरह वर्ष के बच्चे थे हम दोनों उस समय और कितना ... कितना अन्तर था हम में। तुम बाल-विवाह के विरोधी हो ... मैं ... मैं ... मैं भी उसके कोई पक्ष में नहीं। ... बचपन की याद कर रही हूँ उसका ... लेकिन यदि उस समय हमारा इस तरह का गठबन्धन न हुआ होता तो हमारे निकट सहवास से जिस निश्छल प्रेम का बीज पड़ा था ... वह आज इस तरह उतना पल्लवित, पुष्पित और फलित होता जैसा कि हुआ। हमारे उन दिनों के प्रेम, झगड़े और अन्त में

भाज याद भा रहे हैं। प्रेम-प्रसगों से भी झगड़े ज्यादा याद आते हैं। बुरी बातों की याद भी कितनी सुख देने वाली हो जाती है।

महात्मा पर निर्मल और सत्य प्रेम में अगर झगड़े न हों तो वह प्रेम टिकाऊ रह ही नहीं सकता। और इन झगड़ों का नतीजा हमारे लिए हमेशा ही शुभ रहा है। अपनी अनोखी सहन-शक्ति से तुम्हारी ही हमेशा इन झगड़ों में जीत हुई। उन झगड़ों का तो मैं जिम्मेदार हूँ। अपने पतिपद का मुझे बड़ा घमण्ड था और उस वक्त जब मैं उस पद की हुकूमत चलाता था तब तुम्हारे मानिंद स्वाभिमानी स्त्री का उस तरह झगड़ना बिलकुल स्वाभाविक था।

कस्तूरबा और और वे आत्मीय झगड़े बचपन में ही खतम हो गये हों यह नहीं। दक्षिण अफ्रीका से जब हम भारत लौट रहे थे उस वक्त जो भेटें हमें मिली थीं और जिन्हें तुम लौटा रहे थे उनके रखने के लिए मैं तुमसे किस तरह लड़ पड़ी थी।

महात्मा लेकिन उस झगड़े में मेरा दोष नहीं था। वह झगड़ा तो तुम्हारे लोभ और मोह की वजह से ही हुआ था।

कस्तूरबा कहाँ समझती थी उस वक्त मैं तुम्हारे सिद्धान्तों को? तुम्हीं ने एक बार मेरे लिए नहीं कहा था बेपढ़ी-लिखी ठोठ।

महात्मा एक दफा नहीं शायद यह तो मैंने कई बार कहा होगा। और और मेरे वे बैंगे भद्दे विशेषण थे तुम्हारे समान पत्नी के लिए। (दीर्घ निश्वास छोड़कर) क्या, कोई पढ़ी-

जैसी विदुषी, परम पतिव्रता पत्नी जो मुझे ऐसी मिल सकना मुमकिन था जैसी ईश्वर ने तुम्हारे रूप में दी। जीवन भर तुमने मुझ पर दुनिया की किसी भी स्त्री के मुकाबले में कहीं अधिक असर डाला है। और ... और मेरे जीवन के साथ अपने जीवन का योगदान करना, मेरे साथ चलना कोई आसान बात न थी। बीच-बीच में न जाने कितने बार भूकम्प के से कठोर धक्के तुमने सहे, ज्वालामुखी के खौलते हुए लावा में तप चली। इतने पर भी पांव नहीं हटी। अपनी इच्छा और अनिच्छा का त्याग कर कितनी कठिनाइयों और परिश्रमों को सहकर इस तरह पति के रास्ते पर चलना आसान नहीं था। इसके लिए बहुत बड़े आत्मबल और सम्पूर्ण समर्पण की भावना जरूरी थी।

कस्तूरबा—तुम मेरे जिस गुण का वर्णन करते हो वे तो हरएक हिन्दू पत्नी में समावेश रहते ही हैं। इच्छा से या अनिच्छा से अथवा जान अनजान भी हिन्दू पत्नी पति के कदमों पर चलने में चलना का अनुभव करती है। मेरे जैसा पति दुनिया में किसको मिला है? अपनी सत्य निष्ठा की वजह से तुम आज सारे संसार में पूजे जाते हो। धनाढ्य लोग तुम्हारी [illegible]। इतने पर भी कभी किसी दिन किसी मेरी भूल के मेरा दोष नहीं निकाला। मैं चाहे दूर की न सोच सकूँ, मेरी दृष्टि था, संकुचित हो, तुम सदा कहते हो कि यह तो दुनिया में होता ही आया है। संसार में मैं तुम्हारे कारण पूजी जाती हूँ।

महात्मा : नहीं ... नहीं यह नहीं तुम में जो गुण हैं वे क्या हर महिला में हो सकते हैं? फिर भी मैं जैसा बन पाया तुम्हारे बिना वैसा क्या बन सकता था? उष काल से लेकर रात तक मैं सुविधापूर्वक रहूँ यही तुम्हारे दिवस की चिन्ता और रात्रि का स्वप्न रहा है। और तुमने तो मेरा जीवन तक बचाया है। मैं बकरी का दूध पिऊँ, यह उस समय तुम्हारी ही सूझ थी जब गाय का दूध न पीने की मैं प्रतिज्ञा कर चुका था और बिना दूध के मेरा जीवन संकट में था।

कस्तूरबा : मैं ... मैं सोच भी न सकती थी कि साँपों, चोरों और भूतों से डरने वाला आदमी आगे चलकर संसार में लाठियों, गोलियों तथा बड़े से बड़े भय से भी भयभीत नहीं रहेगा।

महात्मा : गीता को मैं अपने जीवन की सबसे बड़ी प्रेरक पुस्तक मानता हूँ, उसमें दैवी-सम्पत्ति के जिन गुणों का वर्णन है उसमें 'अभयं' यह पहला गुण है।

कस्तूरबा : और ... और मैं ... मैं विचार भी न सकती थी कि विषय भोग में इतना ... इतना तल्लीन आदमी गृहस्थ रहते हुए भी सैंतीस साल की उम्र से ही अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन कर सकेगा। सैंतीस ... सैंतीस वर्ष की अवस्था से ही हम दोनों ने इस व्रत का पालन किया है न?

कस्तूरबा : हाँ सैंतीस वर्ष की उम्र से ही। और ... और हम अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत के बाद तो हम एक दूसरे के और नजदीक आ गये एकदम निकट। संस्कृत में पत्नी को पुरुष

का आधा अंग कहा गया है अंग्रेजी में उस आधे अंग के लिए 'बटर' शब्द काम में लाया जाता है यानी वह आधा अंग जो पति के आधे अंग से बेहतर अंग है। ब्रह्मचर्य के बाद मुझे अनुभव हुआ कि तुम सचमुच ही मेरा बेहतर आधा अंग हो गयी हो।

कस्तूरबा : तुम्हारे सिद्धान्तों को तो अभी अभी भी मैं पूरे तौर पर नहीं समझ पाती। हाँ उन सिद्धान्तों ने तुम्हारे खुद के और मेरे जीवन को इस देश के जीवन के सभी क्षेत्रों को किस किस तरह बदला है दुनिया में किस किस तरह असर डाला है इसे जरूर कुछ कुछ देख सुन सकती हूँ। तुम्हारे जीवन का सबसे बड़ा ध्येय भारतीय स्वराज्य भी शायद अब दूर बहुत दूर न हो। मालूम नहीं उसे देख पाती हूँ या

महात्मा : (भर्राये हुए स्वर में) क्या क्या तुम साथ नहीं हो? तुमने बहुत कुछ देखा है तुम स्वराज्य भी देखोगी।

कस्तूरबा : जो कुछ जो कुछ हो

गोविन्द द्वारिका वासिन् कृष्ण गोपीजन प्रिय।
कौरवैः परिभूतां माम् किं न जानासि केशव॥

(कुछ रुककर) अब तो कृष्ण भगवान् इन कौरवों से घिरे हुए हमारे देश की सुधि लें। हम दोनों का साथ जग में स्वर्ग लेकिन और सब की तो विदाई हो।

[कुछ देर निस्तब्धता।]

कस्तूरबा : तुम्हें जो महात्मा कहा जाता है तुम उससे उससे भी कहीं कहीं बड़े हो। मैं मैं धन्य हो गयी इस जन्म

में ऐसे ऐसे पति को पाकर। और और देखो मैं मैं तो शायद अभी जा जा रही हूँ (दोनों हाथों को छाती पर लगाकर) दर्द हो रहा है यहाँ

महात्मा (एकदम घबड़ाकर) ऐं ऐं, म तुम्हारे तुम्हारे बिना जीवन जीवन की कल्पना कल्पना नहीं कर सकता।

कस्तूरबा (धीरे-धीरे) पर पर जाना तो जाना तो एक दिन सब को ही पड़ता है। हमने बहुत सुख भोगा दुःख भी भोगा। मेरे बाद रोना मत मेरे मरने पर तो मिठाई बाँटनी चाहिए। मुझसे मुझसे अगर कोई अपराध हुए हों तो जाते जाते उनके लिए तुमसे क्षमा क्षमा माँगती हूँ मैंने मैंने चाहे तुम्हारे सिद्धान्तों को पूरी तौर पर समझा न हो पर बिना उन्हें समझे ही उन पर चलकर पूरी ईमानदारी से चलकर तुम्हारा पूजन हमेशा पूजन किया है। भगवान् भगवान् मुझे (लड़खड़ाते हुए स्वर में) जन्म जन्म में तुम्हीं तुम्हीं का पति प ति

[कस्तूरबा का शरीर कुछ हिलता है। गान्धीजी एकदम विह्वल हो उनके ऊपर झुकते हैं। कस्तूरबा की गान्धीजी की गोद में मृत्यु। गान्धीजी के नेत्रों से दो बूंद आँसू कस्तूरबा के मुख पर गिरते हैं।]

लघु यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान : एक सड़क [illegible]

समय : [illegible]

[कुछ युवक-युवतियों का प्रवेश ।]

युवक : [illegible] हाँ [illegible] सन् १९४७ ईस्वी की आज १५ अगस्त को भारत में पुनः स्वाधीनता का सूर्य उगा है।

युवती : और [illegible] और यह एक सिर्फ एक आदमी की तपस्या और त्याग के कारण।

दूसरा : यह [illegible] प्रमाण है कि एक व्यक्ति भी क्या कर सकता है।

पहली : [illegible] एक नया रास्ता बनाया उस रास्ते पर चलने वाले व्यक्तियों को बनाया और [illegible] हासिल की। मैं तो जब बापू के सम्बन्ध में सोचती हूँ तो [illegible] में तीन बातों में [illegible] है।

पहला : कौनसी ?

पहली : तीन बातों में बड़ा है—मिट्टी के [illegible] की वजह से [illegible] मिट्टी के [illegible]।

कुछ लोग : (एक साथ) [illegible]।

पहला : [illegible] विचार [illegible] है। [illegible] जब कोई महान् विचार [illegible]

को उत्पन्न करता है जिससे वे किसी महान् कृति के लिए कमर कसते हैं तब दुनिया पर उस विचार का प्रभाव पड़ता है। गांधीजी ने यही किया है।

कुछ लोग बिलकुल ठीक।

दूसरी फिर महात्मा गान्धी ने इस देश के जीवन के केवल राजनैतिक क्षेत्र को प्रभावित किया हो यह नहीं।

तीसरा हाँ इस देश के मानव-जीवन का एक भी ऐसा क्षेत्र नहीं जो उनसे प्रभावित न हुआ हो।

तीसरी यही क्या नहीं आज तो तमाम दुनिया उनसे प्रभावित है।

चौथा हाँ सारी दुनिया।

तीसरा और इसका केवल यह कारण नहीं है कि उन्होंने इस देश को आजाद किया है बल्कि इसका एक और भी बड़ा भारी कारण है।

चौथा कौनसा?

तीसरा यह कि जब ज्यादातर लोग नैतिकता के नियमों को सिर्फ उसी तरह देखते रहते थे जिस तरह आकाश के तारों को देखा जाता है तब उन्होंने उन्हें खुद अपने जीवन में ही कार्य-रूप में परिणत नहीं किया लेकिन दूसरों से भी कराया।

पहला हाँ उन्होंने कथनी और करनी में कोई फर्क नहीं रक्खा। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि दुनिया किसी के शब्दों से प्रभावित नहीं होती पर वह इस बात से कि वह अपना जीवन किस तरह बना रहा है उससे प्रभावित होती है। दूसरों को ज्ञानी बनने के पहले स्वयं के अन्तःकरण में प्रकाश की

सम्पन्न है।

पहला हाँ कोई नया विचारक होता है और कोई कवि होता। गान्धीजी में दोनों रूप समान रूप में विद्यमान हैं।

कुछ लोग अवश्य ठीक।

चौथा फिर भी उनके दुनियाँ पर इस प्रभाव का एक कारण और भी है।

तीसरा क्या?

चौथा उन्होंने यह स्वतन्त्रता अहिंसा द्वारा ली और दुनियाँ को एक नया ज्ञान बताया कि जो साहस दूसरों को न मारकर स्वयं मरने की शक्ति रखता है वह कठोर-से कठोर शत्रु का भी हृदय परिवर्तन कर देता है।

दूसरी इस समय सारी दुनिया हिंसा में मग्न है। पर अहिंसा में भी एक महान् शक्ति छिपी रह सकती है यह भी तो उन्होंने दुनियाँ को सिखाया है।

चौथा हाँ हिंसा में जीतने हारे समाज को इन्सान मानने का एक नया रास्ता बताया है।

कुछ लोग बिलकुल ठीक।

पहली और जब आज देश में स्वतन्त्रता का उत्सव मनाया जा रहा है तब महात्मा गान्धी हिन्दू-मुस्लिम एकता का अपने जीवन का एक नया अनुष्ठान कर रहे हैं।

दूसरी विचित्र व्यक्ति हैं विचित्र।

कुछ युवक-युवतियाँ (एक साथ) अद्भुत, सचमुच अद्भुत।

[नेपथ्य में वाद्य ध्वनि सुन पड़ती है।]

दूसरा लो! स्वाधीनता का उत्सव शुरू हुआ। इस सारे ना

महात्मा है नहीं। चलो हम तो यह उत्सव देखें।

कुछ युवक-युवतियाँ (एक साथ) हाँ-हाँ हाँ-हाँ।

[सबका प्रस्थान। अब सफेद चादर पर निम्नलिखित दृश्य दिखायी देते है—

उस समय का वाइसरिगल लॉज जो उसी दिन गवनमेण्ट हाउस हुआ, और अब राष्ट्रपति भवन, उसका बाहरी भाग दीखता है, फिर उसी का दरबार हाल, जिसमें खासी भीड़ कुर्सियों पर बठी है, इन्हीं में प्रमुख रूप से संविधान सभा के अध्यक्ष डा० राजेन्द्रप्रसाद और भारत के प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू दीखते ह। मच पर स्वतन्त्र भारत के पहले गवनर-जनरल लाड माउण्टबेटन को भारत के सर्वोच्च न्याया लय के मुख्य न्यायाधीश डा० कानिया गवनर-जनरल पद की शपथ दिला रहे ह।

यह दृश्य बदलकर उस समय का कौंसिल हाउस, और इस समय के ससद भवन का बाहरी भाग दीखता है। अपार भीड़ है। इस भीड़ से लाड माउण्टबेटन की चार घोड़ों वाली पोस्टलियन बग्घी घिर गयी है। जवाहरलाल नेहरू भीड को चीरते हुए बड़ी कठिनाई से उस बग्घी तक पहुँचते ह और बड़ी कठिनाई से लाड माउण्टबेटन, लेडी माउण्टबटन आदि को बग्घी से उतारकर भवन के भीतर ले जाते ह।

यह दृश्य बदलकर भवन के भीतर का दृश्य दिखायी देता है जहाँ भी कुर्सियों पर भारी भीड़ है। मच पर लार्ड माउण्ट बेटन खड़े ह और डा० राजेन्द्रप्रसाद भारतीय स्वतन्त्रता की खुशी में आये हुए भिन्न भिन्न देशों के सन्देश पढ़ रहे ह।

यह दृश्य असेम्बली कौंसिल-हाउस पर स्वतन्त्र भारत का झण्डा फहराता हुआ दिखायी देता है और भारत का राष्ट्रीय गीत जन-गण-मन सुनायी पड़ता है ।]

गीत

जन-गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता !
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि-तरंग ।
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मांगे
गाहे तव जय-गाथा ।
जन-गण मंगल दायक जय हे
भारत भाग्य-विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय जय हे !

[यह दृश्य असेम्बली सन् ४७ की १५ अगस्त की दिल्ली की रात्रि की रोशनी के समान दृश्य दीख पड़ता है ।]

लघु यवनिका

पाँचवाँ दृश्य

स्थान : नयी दिल्ली में बिड़ला भवन का वह चौगान जहाँ
गान्धीजी प्रार्थना करते थे

समय : सन्ध्या

[एक तख्त पर गान्धीजी सन्ध्या की प्रार्थना में बैठे हुए हैं। सामने एक अच्छी-खासी भीड़ इकट्ठा है। प्रार्थना खत्म हो चुकी है। प्रार्थना के बाद तुलसीकृत रामायण का नीचे लिखा अंश गाया जा रहा है।]

गीत

सुनहु सखा कह कृपा-निधाना।
जेहि जय होइ, सो स्यन्दन आना॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका।
सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल बिवेक दम पर-हित घोरे।
छमा कृपा समता रजु जोरे॥
ईस भजन सारथी सुजाना।
बिरति चर्म सन्तोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचण्डा।
बर-बिग्यान कठिन को दण्डा॥
अमल अचल मन त्रोन समाना।
सम जम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र-गुरु-पूजा।
एहि सम बिजय-उपाय न दूजा॥

सखा धर्ममय अस रथ जाकें।
जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें॥
महा अजय संसार-रिपु जीति सकइ सो बीर।
जाकें अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मति धीर॥

[गीत समाप्त होने पर रामधुन होती है।]

महात्मा (रामधुन समाप्त होने पर) बहनो और भाइयो ! आज मेरा पचहत्तरवाँ जन्म-दिन है। सबेरे से अब तक मुझे इस वर्षगाँठ पर बधाइयाँ ही बधाइयाँ मिल रही हैं लेकिन बधाई के इन सन्देशों की जगह इस बार तो मुझे संवेदना के सन्देश मिलने चाहिए थे। मेरे जीवन की सबसे बड़ी साध हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता तो पूरी हो गयी लेकिन सिर्फ राजनैतिक स्वतन्त्रता से तो हमारा काम चलने वाला नहीं है। फिर यह स्वतन्त्रता जिस तरह से आयी उससे मुझे खुशी नहीं है। देश के टुकड़े हुए। मेरे साथियों ने मेरी छाती पर पत्थर रख देश का विभाजन भी मंजूर कर लिया। पर मुझे उम्मीद थी कि स्वराज आने पर तो हिन्दू और मुसलमान पड़ोसी भाइयों के समान प्रेम से सुखपूर्वक रहेंगे। पर यह आशा भी पूरी नहीं हुई। विभाजन होते ही साम्प्रदायिक आग भड़की और बल बढ़ा। उस आग को ठंडा करने के लिए मैं जिस तरह नोआखाली बिहार कलकत्ता आदि में मारा मारा फिरा हूँ वह बात आप में से किसी से छिपी नहीं है। दिल्ली आने का इरादा हो रहा था। मैं यहाँ से हमारे [illegible] के नजदीक मिले [illegible] स्त्री पुरुष [illegible] में

पाँचवाँ दृश्य

स्थान नयी दिल्ली में बिड़ला भवन का वह मैदान जहाँ
गान्धीजी प्रार्थना करते थे

समय सन्ध्या

[एक तख्त पर गान्धीजी सन्ध्या की प्रार्थना में बैठे हुए हैं। सामने एक अच्छी-खासी भीड़ इकट्ठा है। प्रार्थना खत्म हो चुकी है। प्रार्थना के बाद तुलसीकृत रामायण का नीचे लिखा भजन गाया जा रहा है।]

गीत

सुनहु सखा कह कृपा-निधाना।
जेहि जय होइ सो स्यन्दन आना॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका।
सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल बिवेक दम पर-हित घोरे।
छमा कृपा समता रजु जोरे॥
ईस भजन सारथी सुजाना।
बिरति चर्म सन्तोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचण्डा।
बर-बिग्यान कठिन को दण्डा॥
अमल अचल मन त्रोन समाना।
सम जम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र-गुरु-पूजा।
एहि सम बिजय-उपाय न दूजा॥

सखा धर्म मय अस रथ जाके।
जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके॥
महा अजय संसार-रिपु जीति सकइ सो बीर।
जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मति धीर॥

[गीत समाप्त होने पर रामधुन होता है।]

महात्मा (रामधुन समाप्त होने पर) बहनो और भाइयो! आज मेरा अठहत्तरवाँ जन्म दिन है। सवेरे से अब तक मुझे इस वर्षगाँठ पर बधाइयाँ ही बधाइयाँ मिल रही हैं लेकिन बधाई के इन संदेशों की जगह इस बार तो मुझे संवेदना के संदेश मिलने चाहिए थे। मेरे जीवन की सबसे बड़ी साध हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता तो पूरी हो गयी लेकिन सिर्फ राजनैतिक स्वतन्त्रता से तो हमारा काम चलने वाला नहीं है। फिर यह स्वतन्त्रता जिस तरह से आयी उससे मुझे गहरी चोट लगी है। देश के टुकड़े हुए। सब साथियों की खातिर छाती पर पत्थर रख देश का विभाजन भी मंजूर कर लिया। पर मुझे उम्मीद थी कि इसके बाद तो हिन्दू और मुसलमान दो सगे भाइयों के समान प्रेम से सुखपूर्वक रहेंगे। मेरी यह आशा भी पूरी नहीं हुई। विद्वेष की साम्प्रदायिक आग भड़की और सब तरफ फैली। उस आग को ठंडी करने के लिए मैं जिस तरह नोआखाली, बिहार, कलकत्ता, दिल्ली में मारा मारा फिरा हूँ, यह आप से छिपा नहीं है। दिल्ली में तो [illegible] हो गया था। मैं यहाँ के [illegible] के नजदीक सिया [illegible] हुए [illegible] पुराने किले के [illegible] हिन्दू [illegible] में

में गया और भी कहाँ-कहाँ गया। कहाँ-कहाँ से कितने लोग मेरे पास आये। दिल्ली की आग को शान्त करने के लिए मुझे फिर से अनशन करना पड़ा।

एक व्यक्ति क्या हिन्दू धर्म बुरे काम करने वाले को मारने की आज्ञा नहीं देता ?

महात्मा सब धर्म दरअसल एक ही हैं। तब सवाल उठ सकता है कि फिर वे अलग अलग धर्म क्या ? जिस तरह आत्मा एक है पर शरीर अलग अलग उसी तरह। हम सब शरीरों को एक नहीं कर सकते पर सब शरीरों में एक आत्मा को देख सकते हैं, वही बात धर्मों के सम्बन्ध में भी है। हर आदमी अपनी दृष्टि से सही बात कहता है इसलिए सहिष्णुता की जरूरत है। सहिष्णुता से ही हमें वह आत्मिक दृष्टि मिलती है जिस से धर्मान्धता का अँधेरा दूर हो सच्चे ज्ञान का प्रकाश मिलता है। सहिष्णुता का यह अर्थ नहीं है कि हम सही और गलत तथा अच्छे और बुरे का भेद न करें। सच्चे अध्ययन और अनुभव के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि सब धर्म अच्छे हैं। लेकिन सभी धर्मों में कुछ बुराइयाँ भी हैं। बुराई छोड़ अच्छाई ले लेना यही हमारा फर्ज है। एक बुरा काम करने वाला दूसरे बुरा काम करने वाले को सजा नहीं दे सकता। सजा देना काम है सरकार का जनता का नहीं। (कुछ रुककर) मेरी इच्छा थी सवा सौ साल जीकर आपकी और दुनिया की सेवा करते की। पर जहाँ घृणा और हिंसा का वायुमण्डल है वहाँ मैं कैसे जी सकता हूँ ? इतने पर भी महान् आशावादी होने की वजह से मैं

सर्वथा निराश नहीं हुआ हूँ। अहिंसा का उसूल असफल नहीं हुआ है। सम्पूर्ण जीवन में उसका उपयोग नहीं हो रहा है और जब तक यह नहीं होगा मानवता को दुखों से त्राण पाना गैर-मुमकिन है। मेरी अहिंसा केवल दार्शनिक अहिंसा नहीं है यह तो व्यावहारिक अहिंसा है। मैं आप सबसे प्रार्थना करता हूँ अपने इस जन्म-दिन पर प्रार्थना करता हूँ इस पागलपन को छोड़िए। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि या तो यह इस बवण्डर को दूर करके अमन के दिन ले आए वरना मुझे ही इस दुनिया से उठा ले। स्वराज्य तो हमें मिल गया पर अभी रामराज्य को कायम करना है। ऐसा राज्य जिसमें घृणा न हो हिंसा न हो सब सम्प्रदाय वाले आपस में मुहब्बत रखते हुए निवास करें। स्त्री और पुरुष के समान हक हों। गरीब से गरीब आदमी भी यह महसूस करे कि यह देश मेरा है और इसके संगठन में मेरे मत की भी कीमत है। ऊँचे वर्ग और नीचे वर्गों इस तरह की श्रेणियाँ न हों। अस्पृश्यता नाम की कोई बात न रहे। मादक-द्रव्य नशीले पदार्थ का नामो निशान न हो। ईश्वर न काबा में है न काशी में है वह घट घट में हर दिल में मौजूद है। ईश्वर ने अलग अलग धर्म मानो मकान के अलग अलग कमरे के मानिन्द बनाये हैं और वे सभी पवित्र हैं। मैं यह भी मान रहा हूँ कि मेरे पड़ोसी का धर्म मुझसे न्यारा है और उस धर्म पर भी श्रद्धा करना चाहिए। [illegible] में यही प्रार्थना कर सकता है कि हर व्यक्ति [illegible] [illegible]

में पूर्ण बने। फिर मेरे लिए वह धर्म धर्म ही नहीं है जिस का सम्बन्ध जीवन के हर क्षेत्र और हर पहलू से न हो। (कुछ रुककर) मैं एक मिनट के लिए भी भगवान् को नहीं भूलता क्योंकि मैं उसे इन करोड़ों दरिद्रों के हृदयों में देखता हूँ और इसीलिए उसे दरिद्रनारायण कहता हूँ। इनकी सेवा ही मैं उसकी सच्ची सेवा मानता हूँ। ईश्वर मेरे सामने खड़ा है। यही समझकर मैं सब काम करता हूँ। मेरे पास राम-नाम के सिवा और कोई ताकत नहीं वही मेरा एक आसरा है और उसी राम-नाम के सहारे मैं यह उम्मीद करता हूँ कि जिस तरह अहिंसा के एक नये रास्ते से इस देश ने आज़ादी ली उसी तरह अहिंसा का अपना लक्ष्य रख इस देश में रामराज्य की स्थापना होगी।

एक व्यक्ति वह कभी होगी भी ?

महात्मा मेरे जीवन का कार्य है हर भारतीय को चाहे वह हिन्दू हो मुसलमान हो या और कोई भी यहाँ तक कि अंग्रेज भी और आखिर में तमाम दुनिया को अहिंसा में दीक्षित करना, जिससे यह संसार राजनैतिक आर्थिक और सामाजिक सारे मामले को अहिंसा से निपटा सके। मेरे इस जन्म-दिवस के प्रार्थना के दिन मैं भगवान् से इसी के लिए प्रार्थना करता हूँ उस भगवान् से जिसके बिना मैं एक मिनट भी जीवित नहीं रह सकता चाहे मैं पानी और हवा के बिना भी जिन्दा रह सकूँ। ईश्वर ही जीवन है सत्य है प्रकाश है। वही प्रेम है वही उच्चतम अच्छाई है। और प्रार्थना को मैं जीवन में सबसे बड़ी चीज मानता

है। यह इसलिए कि मुझे महसूस होता है कि जिसने हमें बनाया है उसके नजदीक हम इसी प्रार्थना के जरिये जाकर उससे आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं। प्रार्थना मन को वह हालत बनाती है जिससे आत्मा असमर्थता और भगवान् पर पूरा भार पर निर्भरता रहती है। मुझे प्रार्थना में विश्वास है। जिस तरह शरीर को न खाने से [illegible] कमजोरी [illegible] होता है उसी तरह अगर प्रार्थना में हृदय न पाया जाय तो [illegible] [illegible] बिगड़ता है। यदि हम आपस [illegible] [illegible] [illegible] हो [illegible] जाती है और कभी-कभी [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] पर यह हम समझने कर देता है [illegible] श्रद्धा की [illegible] [illegible] नहीं है। जब [illegible] [illegible] हो जाता है और जीवन के लिए [illegible] [illegible] है उस वक्त हम श्रद्धा [illegible] [illegible] है और [illegible] हम उस पथ पर में [illegible] में [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] सब श्रद्धा के [illegible] के [illegible] है। श्रद्धा [illegible] मनन और अभ्यास से पैदा होता है। फिर उस श्रद्धा [illegible] होता जाता है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जाता है। [illegible] [illegible] [illegible] श्रद्धा पर निर्भर रहता है। वह मन को [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] की भावना भरता है। जिसके [illegible] हुए भी [illegible] मिल सकता। [illegible] [illegible] [illegible] में मन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और यहाँ प्रार्थना [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] की समस्या का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में। [illegible] प्रार्थना का [illegible] [illegible] [illegible] है। प्रार्थना किसी चीज के लिए भीख माँगना

में पूर्ण बनें। फिर मेरे लिए वह धर्म धर्म ही नहीं है जिस का सम्बन्ध जीवन के हर क्षेत्र और हर पहलू से न हो। (कुछ रुककर) मैं एक मिनट के लिए भी भगवान् को नहीं भूलता क्योंकि मैं उसे इन करोड़ों दरिद्रों के हृदयों में देखता हूँ और इसीलिए उसे दरिद्रनारायण कहता हूँ। इनकी सेवा ही में उसकी सच्ची सेवा मानता हूँ। ईश्वर मेरे सामने खड़ा है। यही समझकर मैं सब काम करता हूँ। मेरे पास राम-नाम के सिवा और कोई ताकत नहीं वही मेरा एक आसरा है और उसी राम-नाम के सहारे मैं यह उम्मीद करता हूँ कि जिस तरह अहिंसा के एक नये रास्ते से इस देश ने आजादी ली उसी तरह अहिंसा को अपना लक्ष्य रख इस देश में रामराज्य की स्थापना होगी।

एक व्यक्ति यह कैसे होगी भी ?

महात्मा मेरे जीवन का कार्य है हर भारतीय को चाहे वह हिन्दू हो मुसलमान हो या और कोई भी यहाँ तक कि अंग्रेज भी और आखिर में तमाम दुनिया को अहिंसा में दीक्षित करना, जिससे यह संसार राजनैतिक आर्थिक और सामाजिक सारे मामलों को अहिंसा से निपटा सके। मेरे इस जन्म दिवस के प्रार्थना के दिन में भगवान् से इसी के लिए प्रार्थना करता हूँ उस भगवान् से जिसके बिना मैं एक मिनट भी जीवित नहीं रह सकता चाहे मैं पानी और हवा के बिना भी जिन्दा रह सकूँ। ईश्वर ही जीवन है सत्य है प्रकाश है। वही प्रेम है वही उच्चतम अच्छाई है। और प्रार्थना को मैं जीवन में सबसे बड़ी चीज मानता

हैं। यह इसलिए कि मुझे महसूस होता है कि जिसने हमें बनाया है उसके सामने हम ऐसी प्रार्थना के ज़रिये जाकर उसका आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं। प्रार्थना मन की यह हालत बनाती है जिसमें अपनी असमर्थता और भगवान् पर पूरा भरोसा पर निर्भरता रहती है। सब प्रार्थना में विश्वास है। जिस तरह शरीर को नहाने से शारीरिक तन्दुरुस्ती हासिल होती है उसी तरह अगर प्रार्थना से हृदय न धोया जाय तो हार्दिक स्वास्थ्य बिगड़ता है। यदि हम जीवन समय का एक भाग नष्ट हो गया जाना है और कभी-कभी ऐसा महसूस भी होता तब पर यह हम असमर्थ कर देती है लेकिन श्रद्धा का बाद हम सहा है। जब तक गम्भ हो जाता है और जीवन में फिर अच्छा लगता है इस बात

नहीं है, वह आत्मा की उच्चतम अभिलाषा है। प्रार्थना में भावनाओं को तो महत्त्व है ही लेकिन उसी के साथ शब्दों का भी महत्त्व है। दीर्घकाल से उन शब्दों का प्रार्थना में प्रयोग उनके साथ पवित्रता को जोड़ देता है। इसीलिए संस्कृत के पुराने मन्त्र कुरान की आयतें बाइबिल के वचन इन सबकी प्रार्थना में बहुत बड़ी जगह है लेकिन उन्हें तोते के मुताबिक रटना नहीं चाहिए। उन्हें समझने की जरूरत है। फिर आश्रम की प्रार्थनाओं में जो भजन गाये जाते हैं उनका भी अपनी जगह है क्योंकि उनके पीछे एक इतिहास है। वे शारीरिक और मानसिक दोषों से मुक्त करते हैं। सच्चा धार्मिक आदमी किसी एक जाति और मुल्क का नहीं रहता वह तमाम दुनियाँ का हो जाता है। वह तमाम दुनियाँ की भलाई चाहता है। अपने देश और देश निवासियों की सेवा संसार और संसार के मानवों की सेवा की सीढ़ियाँ हैं। इन सीढ़ियों पर चढ़ते चढ़ते और दुनियाँ की भलाई करते-करते ही आदमी खुद भी मोक्ष पा जाता है। मैं उस उसूल को नहीं मानता जिसमें ज्यादा-से-ज्यादा आदमियों की ज्यादा से ज्यादा भलाई कही गयी है। मैं सबकी भलाई चाहता हूँ। इसलिए मैं अपने सिद्धान्त को सर्वोदय कहता हूँ। सर्वोदय में वही मदद दे सकता है जिसके हृदय पर प्रेम का साम्राज्य हो और जो सबभूत हित के लिए सबभूतों से प्रेम कर उनके हित में मर मिटने को तैयार हो। इसके लिए आत्म-संयम और न्याय संयम ज्यादा जरूरी है और यह बिना

अध्यात्म की नींव में मुमकिन नहीं है। आजकल समाजवाद और साम्यवाद की चर्चा चलती है, लेकिन वर्ग-संघर्ष से साम्यवाद या समाजवाद कायम नहीं हो सकता। क्योंकि समाजवाद और साम्यवाद का लक्ष्य तो सबका सुख, सब में प्रेम और शान्ति है। इसलिए वह भी अहिंसक साधना से सर्वोदय द्वारा ही कायम हो सकता है। जैसे हम पानी को ठण्डा करना चाहें तो उसे आग पर रखकर ठण्डा नहीं कर सकते, ठीक उसी तरह अगर हम शान्ति चाहें तो घृणा और लड़ाई झगड़े का प्रचार कर हम उसे हासिल नहीं कर सकते। अगर अन्धेरे से उजाला निकल सकता है तो घृणा से प्रेम। हिन्दुस्तान में अस्सी प्रतिशत आबादी गाँव में रहती है

उपसंहार

स्थान : एक सफेद चादर

समय : एक सायंकाल ३० जनवरी का दिन

[एक सफेद चादर पर निम्नलिखित दृश्य दिख पड़ते हैं—

बिड़ला भवन के मैदान में गान्धीजी सायंकाल को प्रार्थना-स्थल पर आ रहे हैं। वे ज्योंही प्रार्थना के तख्त पर चढ़ते हैं भीड़ में से नाथूराम गोडसे नामक एक व्यक्ति गान्धी जी की ओर बढ़ता है। गान्धीजी की पौत्री मनु गान्धी यह समझ कि यह गान्धीजी के पैर छूने आ रहा है, उसे रोकने की कोशिश करती है, पर वह मनु गान्धी को धक्का देकर आगे आता है। मनु गान्धी के हाथ में कुछ चीजें हैं जो इस धक्के के कारण गिर पड़ती हैं। जब मनु गान्धी उन चीजों को उठा रही है उसी समय गोडसे तीन गोलियाँ चलाता है जो गान्धीजी को लगती हैं। और वे "हे राम" कह परलोकगामी होते हैं। ये सब बातें कुछ सैकिण्डों में होती हैं। सारी प्रार्थना सभा में एकदम उथल पुथल मच जाती है। गोडसे पकड़ लिया जाता है।

यह दृश्य लुप्त होकर गान्धीजी की अर्थी का दृश्य दिखायी पड़ता है। अपार भीड़।

यह दृश्य लुप्त होकर राजघाट पर गान्धीजी की चिता का दृश्य दिख पड़ता है।

यह दृश्य लुप्त होकर प्रयाग में गान्धीजी की अस्थि विसर्जन का जुलूस दिखायी देता है। अपार जन समूह।

यह दृश्य लुप्त होकर अनय तीर्थ स्थलों में गान्धीजी की जो भस्म विसर्जन की गयी थी उसके कई दृश्य दिखायी देते हैं।

प्रयाग में गान्धीजी के अस्थि विसर्जन दृश्य से लेकर इन दृश्यों में "रघुपति राघव राजा राम' की रामधुन और राष्ट्र पिता की जय के नारे भी सुन पड़ते हैं। परन्तु इस रामधुन और इन जय-जयकार के नारों के बावजूद ये सारे दृश्य अत्यन्त कारुणिक हैं।]

यवनिका

समाप्त

उपसंहार

स्थान : एक सफ़ेद चादर

समय : एक सायङ्काल से अनेक दिन

[एक सफ़ेद चादर पर निम्नलिखित दृश्य दिख पड़ते हैं—

बिड़ला भवन के चौगान में गान्धीजी सायंकाल को प्रार्थना-स्थल पर आ रहे हैं। वे ज्योंही प्रार्थना के तख़्त पर चढ़ते हैं भीड़ में से नाथूराम गोडसे नामक एक व्यक्ति गान्धी जी की ओर बढ़ता है। गान्धीजी की पौत्री मनु गान्धी यह समझ कि यह गान्धीजी के पैर छूने आ रहा है, उसे रोकने की कोशिश करती है पर वह मनु गान्धी को धक्का देकर आगे आता है। मनु गान्धी के हाथ में कुछ चीजें हैं जो इस धक्के के कारण गिर पड़ती हैं। जब मनु गान्धी उन चीजों को उठा रही है उसी समय गोडसे तीन गोलियाँ चलाता है जो गान्धीजी को लगती हैं। और वे "हे राम" कह धराशायी होते हैं। ये सब बातें कुछ सेकिण्डों में होती हैं। सारी प्रार्थना सभा में एकदम उथल-पुथल मच जाती है। गोडसे पकड़ लिया जाता है।

यह दृश्य लुप्त होकर गान्धीजी की अर्थी का दृश्य दिखायी पड़ता है। अपार भीड़।

यह दृश्य लुप्त होकर राजघाट पर गान्धीजी की चिता का दृश्य दिख पड़ता है।

यह दृश्य लुप्त होकर प्रयाग में गान्धीजी की अस्थि विसर्जन का जुलूस दिखायी देता है। अपार जन समूह।

यह दृश्य लुप्त होकर क्रमशः तीर्थ-स्थलों में गान्धीजी की जो भस्म विसर्जन की गयी थी उसके कई दृश्य दिखायी देते हैं।

प्रयाग में गान्धीजी के अस्थि विसर्जन दृश्य से लेकर इन दृश्यों में "रघुपति राघव राजा राम" की रामधुन और राष्ट्रपिता की जय के नारे भी सुन पड़ते हैं। परन्तु इस रामधुन और इन जय-जयकार के नारों के बावजूद ये सारे दृश्य अत्यन्त कारुणिक हैं।]

यवनिका

समाप्त